नई पीढ़ी के बच्चों का सम्पूर्ण मासिक

₹30/-

जून 2019 ISSN 2456-5415

# नन्हे सम्राट

## मूर्खिस्तान विशेषांक

## मूर्खिस्तान मूर्खों का स्वर्ग

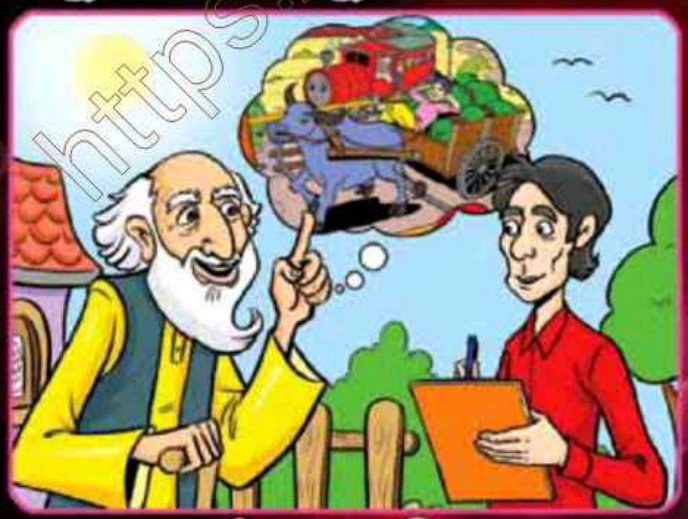

### चेतावनी

मूर्खिस्तान में अक्ल का इस्तेमाल करना कानूनन जुर्म है।

## मूर्खिस्तान का पहलवान

## मूर्खिस्तान का किस्सा

### मेरी साइकिल महान-मेड इन मूर्खिस्तान

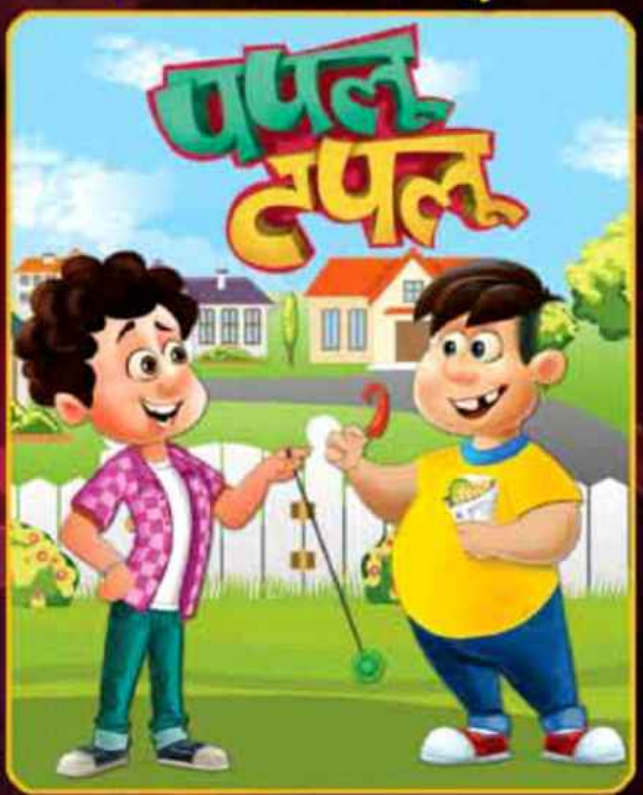


https://t.me/pathagar.net

VISIT…

**आकांक्षा कुमारी**
उम्र : 11 वर्ष, नई दिल्ली

**युवराज साचन**
उम्र: 7 वर्ष, कानपुर, उ.प्र.

**पीयूष चौहान**
उम्र : 4 वर्ष, दौसा, राजस्थान

**पीहू मिश्रा**
उम्र: 6 माह, टमकुही रोड, उ.प्र.

**अराध्या पटनायक**
उम्र : 2 वर्ष, जैपुर, ओडिशा

**अब्दुल अहमद**
उम्र : 8 माह, आगरा, उ.प्र.

**स्वराज**
उम्र: 12 वर्ष, हाजीपुर, बिहार

**यशवर्धन शुक्ला**
उम्र: 3 वर्ष, गाजियाबाद, उ.प्र.

**राजकमल**
उम्र: 14 वर्ष, फारबिसगंज, बिहार

**आरव एवं प्रीयल**
मुजफ्फरपुर, बिहार

**अमित राज**
उम्र: 2 वर्ष 8 माह, अलीगंज, बिहार

**अध्ययन जौहरी**
बरेली, उ.प्र.

यदि आप स्मार्ट किड्स में अपनी फोटो छपवाना चाहते हैं तो पोस्टकार्ड साइज की फोटो के पीछे अपना नाम, उम्र व पता लिख कर भेजें। कवर पेज के लिए बड़ी फोटो (8 X 10 इंच और 300 रेजोलूशन की) भेजें। आप अपनी फोटो को ई-मेल के द्वारा भी भेज सकते हैं।

पता : दीवान पब्लिकेशंज प्रा. लि. (स्मार्ट किड्स), ए 6/1 मायापुरी, फेस 1, नई दिल्ली 110064 E-mail : nanheysamrat@gmail.com

https://telegram.me/boloraj

# नन्हे सम्राट

जून 2019 वर्ष : 32 अंक : 2

संपादक-प्रकाशक : आनन्द दीवान
उप-संपादक : रोहन दीवान
सह-संपादक व कला निर्देशक : सुखवंत
सहायक संपादक : तान्या दीवान
ग्राफिक डिज़ाइनर : उमेश मलिक
चित्रकार : जावेद आलम

मुख्य पृष्ठ : मूर्खिस्तान

मूल्य : ₹30/-
वार्षिक सदस्यता : ₹300/-



## संपादकीय कार्यालय

दीवान पब्लिकेशंस प्रा. लि.
ए-6/1 मायापुरी, फेस-1, नई दिल्ली-110064
फोन : 011-2811 5835
Email : dewanpublications@gmail.com
nanheysamrat@gmail.com
Website : www.dewanpublications.com
facebook.com/nanheysamrat



## Business Co-ordinators

Western & Southern India (Mumbai)
*MPEN ASSOCIATES*, Mr. Hrishikesh Patil
Mob. : 09967429418
Mr. Pushp Raj Rathour, Mob. : 09324284758
E-mail : mpenassociates@gmail.com
mpenmktg@gmail.com

DELHI Advertisement Manager
*Ph.: 011-28115835*


कुल पृष्ठ - 76

## इस अंक में


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| मूर्खिस्तान का पहलवान | 5 |
| मूर्खिस्तान का डॉक्टर महान | 6 |
| ज़रा हट के ज़रा बच के ये है मूर्खिस्तान | 8 |
| मेरी साइकिल महान-मेड इन मूर्खिस्तान | 9 |
| पपलू टपलू | 11 |
| जूनियर जेम्स बाँड | 12 |
| मैं हूँ जासूस | 16 |
| मूर्खिस्तान का नशेड़ी | 17 |
| नरेंद्र द टी बॉय - चोर यात्री | 19 |
| अंतर बताइये नंबर पाइये | 20 |
| खाली है ग्राफ चित्र बनाइये साफ | 22 |
| शतरंज का खिलाड़ी | 24 |
| मूर्खिस्तान दल-बदलू गाइड बुक | 25 |
| मूर्खिस्तान का मूर्ख शेर | 26 |
| दिमाग लड़ाइये-अपराधी पकड़वाइये | 29 |
| मूर्खिस्तान का बौड़मदास | 30 |
| डाक टिकटों का मूर्खिस्तानी संसार | 31 |
| मूर्खिस्तान | 32 |
| मूर्खिस्तान के मेरे भाई साहब | 34 |
| क्या यह भी मज़ाक था | 35 |
| रखिये सही क्रम दूर कीजिये भ्रम | 36 |
| लल्लूलाल के तर्क कुतर्क | 37 |
| मूर्खिस्तान का खेल | 38 |
| मूर्खिस्तान : नन्हे सम्राट के पहले अंक का एक पृष्ठ | 40 |
| वृष कथा : मूर्खिस्तान का किस्सा | 41 |
| रास्ता खोजिये | 42 |
| मूर्खिस्तान की चिपकियाँ | 45 |
| निशानेबाज़ चोर | 46 |
| चल बेटा दिमाग लड़ा-बता कौन है छोटे से बड़ा? | 47 |
| आपकी परछाइयाँ | 48 |
| टिप्स मूर्खिस्तानी | 50 |
| करामाती मीकू और स्टेशन मूर्खिस्तानी | 51 |
| वर्डस छाँटिये टाइम काटिये | 54 |
| अंग्रेज़ों के ज़माने का मूर्खिस्तान | 56 |
| विक्रम-बेताल इन मूर्खिस्तान | 58 |
| शब्दों को सही बिठाइये-सही जोक बनाइये | 59 |
| मूर्खिस्तानी ताने-पे-ताना बंद करो ये गाना | 60 |
| आप हैं चित्रकार-बनाइये हास्य कलाकार | 62 |
| मूर्खिस्तान मूर्खों का स्वर्ग | 63 |
| हम तोड़ें-आप जोड़ें | 64 |
| मूर्खिस्तान का अनाड़ीराम | 68 |
| अनोखा विस्फोट | 69 |
| रंग भरो प्रतियोगिता | 72 |
| रोचक समाचार | 73 |


https://magzter.net/booksmag

आपस की बात

परीक्षाओं का दौर खत्म और परिणामों का दौर शुरु। उम्मीद करते हैं कि आप सभी के परिणाम सुखद आएं और साथ ही इस बार आपके परिणामों के साथ-साथ देश के नीति नियंताओं के परिणाम भी ऐसे आएं जो देश को एक नई दिशा में लेकर आगे बढ़ने वाले साबित हो सकें। ठीक वैसे ही जैसे आप कल को इस देश को अपनी शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाएंगे और इसके लिए लोकतंत्र के महासमर में चुन कर आए प्रतिनिधि ऐसी नीतियां बनाएं जिससे सभी का सर्वांगीण विकास हो सके और आने वाली हर बाधाएं आसानी से पार होती चली जाएं। तभी तो बनेगा एक नया भारत।

नए भारत को बनाने में जो चीज सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है वो है शिक्षा। एक उदाहरण से आपको यह बात समझाता हूं। द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब ब्रिटेन में बजट पेश किया जा रहा था तब सरकार ने लगभग सभी मदों में कटौती की लेकिन शिक्षा के बजट में एक पैसा भी कटौती नहीं की। इस पर वहां भी विपक्ष के लोगों ने बहुत शोर मचाया और और पूछा कि आखिर शिक्षा के बजट में कटौती क्यों नहीं की जा रही। इस सवाल पर उस समय के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने खड़े होकर जो जवाब दिया वो बहुत ही ध्यान देने वाला था। उन्होंने कहा, कि अगर बमबारी में पुल टूटते हैं तो वे दोबारा बन जाएंगे, तबाह हुए कारखाने और घर भी नए सिरे से बन जाएंगे लेकिन अगर एक पूरी पीढ़ी तबाह हो जाएगी तो वो दोबारा नहीं बनाई जा सकती। जो देश और उन्हें चलाने वाले लोग अपनी नई पीढ़ी के लिए इस तरह की सोच रखते हैं, वास्तव में वे ही सबसे आगे खड़े मिलते हैं। शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण है और इसीलिए कई विकसित और विकासशील देश अपने बजट का सबसे बड़ा हिस्सा शिक्षा पर खर्च करते हैं। कई देशों के तो रक्षा बजट से ज्यादा है वहां का शिक्षा बजट। हाल के दिनों में हमारे देश ने भी शिक्षा के महत्व को दोबारा पहचाना है और धीरे-धीरे ही सही इसके बजट को निरंतर बढ़ाया जा रहा है लेकिन अभी यह काफी नहीं है।

ऊपर की पंक्ति में मैंनें भारत के शिक्षा के महत्व को पहचानने के लिए 'दोबारा' शब्द का प्रयोग किया है। वो इसलिए क्योंकि वास्तव में हमारा देश तो प्रारंभ से ही शिक्षा के मामले में सिरमौर रहा है। इसीलिए तो इसे कभी विश्वगुरु कहा जाता था लेकिन कालांतर में दुर्भाग्य से हम इससे दूर होते चले गए।

नालंदा विश्वविद्यालय की बात करें चाहे तक्षशिला विश्वविद्यालय की, यहां शिक्षा प्राप्त करने के लिए दुनिया के हर कोने से विद्यार्थी आते थे। हालांकि पहले तो बख्तियार खिलजी जैसे आक्रमणकारियों ने और फिर गुलामी के दौर में अंग्रेजों ने हमारी शिक्षा प्रणाली पर गहरा कुठाराघात कर इसे तहस नहस करने की पूरी कोशिश की लेकिन वे इसमें आंशिक रुप से ही सफल हो पाए। आजादी के बाद से ही देश की शिक्षा व्यवस्था और प्रणाली में लगातार सुधार होता रहा और आज एक बार फिर हम उस मुकाम पर पहुंच चुके हैं जहां किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली का मुकाबला डट कर कर सकते हैं। आज हमारे देश के संस्थानों से निकले विद्यार्थी, शोधार्थी और प्रोफेशनल्स दुनिया भर के शिक्षा संस्थानों के छात्रों को कड़ी टक्कर देने के साथ हमारे देश का नाम रोशन कर रह हैं।

हमारे देश में पिछले कुछ सालों से शिक्षा के बुनियादी ढांचे से लेकर आधुनिक तकनीक के समावेशन और तरीकों पर विशेष ध्यान दिया गया है जिसके चलते आज देश के हर क्षेत्र से जुड़े संस्थानों का विस्तार हुआ है। इसीलिए आज हमारे देश के विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान दुनिया भर की शिक्षा से संबंधी प्रत्येक रैंकिग में अपना स्थान बनाते जा रहे हैं। फिर चाहे वो आईआईटी या आइआईएम जैसे संस्थान हों या फिर देश की अमूल्य विरासत को संजोए विश्वविद्यालय।

देश में शिक्षा व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय संभालता है और हाल ही में इसने 'नेशनल इंस्टीट्यूट रैंकिंग फेमवर्क' यानि कि एनआईआरएफ पर आधारित देश के बेहतरीन कॉलेजों और विश्वविद्यालय की 2019 की रैंकिंग जारी की ताकि इनका उचित मूल्यांकन हो सके और इनके बीच आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ाई जा सके। इस रैंकिंग में हर क्षेत्र से जुड़े संस्थानों को शामिल किया गया है।

इस इंडिया रैंकिंग 2019 में आईआईटी मद्रास जबकि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलुरु को पहला स्थान प्राप्त हुआ है। मेडिकल कॉलेजों में दिल्ली के एम्स को पहला जबकि प्रबंधन संस्थानों में भारतीय प्रबंधन संस्थान, बैगलुरु को पहला स्थान मिला है। इसके अलावा फार्मेसी, वास्तु कला और कानून की शिक्षा देने वाले कॉलेजों की भी रैंकिंग घोषित की गई है जिन्हें विभिन्न मानकों पर परखा गया है। अगर आप समाचारों पर नजर रखते होंगे तो अक्सर इन इंस्टीट्यूट से जुड़े विद्यार्थियों की सफलताओं की खबरें पढ़ने को आसानी से मिल जाती होंगी। यहां से निकले छात्रों की मांग न सिर्फ भारत बल्कि विश्व के कई विकसित और बड़े देशों के टॉप संस्थानों में होती है।

903 विश्वविद्यालय, 39050 संबंधित कॉलेज और 10011 से अधिक स्वायत शिक्षा संस्थाएं हमारे देश को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली वाला देश बनाती है। हम चौथी औद्योगिक क्रांति की ओर कदम बढ़ा रहे हैं और ऐसे में मजबूत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली है हमारे आगे जाने और भविष्य निर्माण का आधार बनेगी।

एक सुनहरा भविष्य हर किसी की ख्वाहिश होती है, और इसके लिए हर छात्र-छात्राएं कड़ी मेहनत करते हैं और उनके सपनों को पंख देते हैं हमारे देश के बेहतरीन कॉलेज, विश्वविद्यालय, संस्थान और शिक्षा प्रणाली जो न सिर्फ देश बल्कि विदेशों में भी कीर्ति प्राप्त कर रहे हैं। ये जितने बेहतर होंगे, भविष्य उतना ही उज्जवल होगा लेकिन इसके लिए लगातार मेहनत आपको भी करनी होगी।

**आपका**
**आनंद दीवान**

https://telegram.me/pdfbooksfree

# मूर्खिस्तान का पहलवान

● सतवंत सिंह

मूर्खिस्तान के एक गाँव में एक पहलवान जी रहते थे। उनका उस गाँव में बहुत दबदबा था। सभी लोग उनसे बहुत डरते थे। वो जब गाँव में मूँछों पर ताव देते हुए निकलते, तो लोग उनके रास्ते से हट जाते और कोई उनसे आँख मिलाकर बात न करता।

पहलवान जी का मूँछों पर हर समय ताव देना कुछ मूर्खिस्तानियों को बुरा लगता। उनमें से एक लाला जी भी थे, जो कि उनके घर से थोड़ी दूर पर रहते थे। लाला जी जानते थे कि पहलवान जी को शारीरिक बल से नहीं हराया जा सकता, इन्हें बुद्धि से ही हराया जा सकता है। लाला जी के पास बुद्धि की कमी थी नहीं। बहुत दिन सोचने के बाद लाला जी के मस्तिष्क में पहलवान जी को नीचा दिखाने का एक उपाय सूझ गया।

लाला जी गाँव छोड़ कर अपने एक सम्बन्धी के यहाँ रहने, दूसरे गाँव चले गये। वहाँ पर रहकर उन्होंने अपनी मूँछों की खूब सेवा करनी शुरु की। जब उनकी मूँछें पहलवान जी की मूँछों के बराबर हो गयीं, तो वो एक दिन रात में चुपके से अपने गाँव लौट आये। दूसरे दिन जब पहलवान जी अपनी मूँछों पर ताव देते हुए निकले, तो लाला जी भी उनके सामने खड़े होकर पहलवान जी की तरह ही अपनी मूँछों पर ताव देने लगे। यह देखकर पहलवान जी आगबबूला हो गये। उन्होंने गरज़ते हुए कहा- ''अपनी मूँछें नीचे कर लाला, मेरे सामने अपनी मूँछों पर वही आदमी ताव दे सकता है जो मुझसे ताक़तवर हो।''

लाला जी ने भी उसी गरज़ के साथ कहा- ''मैं तुमसे कब कमज़ोर हूँ पहलवान? चाहो तो मुझसे लड़ कर देख लो।''

दोनों ताव में तो थे ही, अपने-अपने घरों से जाकर फरसा ले आये और लगे लड़ने। कुछ ही देर लड़ाई हुई थी, लाला ने चिल्ला कर कहा, ''रुको, मुझे एक बात कहनी है।''

पहलवान जी ने लड़ाई रोक कर कहा- ''कहो क्या कहना है?''

लाला जी ने कहना शुरू किया, ''पहलवान, इस लड़ाई में यह तो तय है कि हम दोनों में से एक तो अवश्य ही मरेगा। यह भी हो सकता है कि हम दोनों में से कोई भी जीवित न बचे। हम लोगों के न रहने पर हमारे परिवार वालों को जीवन-यापन में बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा। हमें भी इस चिन्ता के कारण लड़ते समय कष्ट होगा। हम लोग ऐसा करें, पहले अपने-अपने परिवार के लोगों को मार आयें, फिर आकर लड़ें, इससे हम निश्चिंत होकर मरेंगे।''

पहलवान जी ताव में थे ही, उन्होंने कहा, ''ठीक है, मैं अभी सबको मार कर आता हूँ।''

लाला जी ने अपने घर जाकर अपने परिवार के लोगों को कुछ नहीं किया और चारपाई पर लेट कर आराम करने लगे।

पहलवान के पुकारने पर लाला जी बाहर निकले और पूछा, ''कहो पहलवान, सबको मार आये?''

पहलवान के हाँ कहने पर लाला जी ने कहा, ''हमलोगों की लड़ाई मूँछों पर ताव देने के सम्बन्ध में ही है न?''

''हाँ, मूछों पर वही ताव देगा, जो लड़ाई में जीत जायेगा।'' पहलवान ने कहा।

पहलवान के इस जवाब पर लाला जी ने कहा, ''तो लो पहलवान, मैं अपनी मूँछ नीची कर लेता हूँ, मुझे अब नहीं लड़ना।'' ❑❑❑

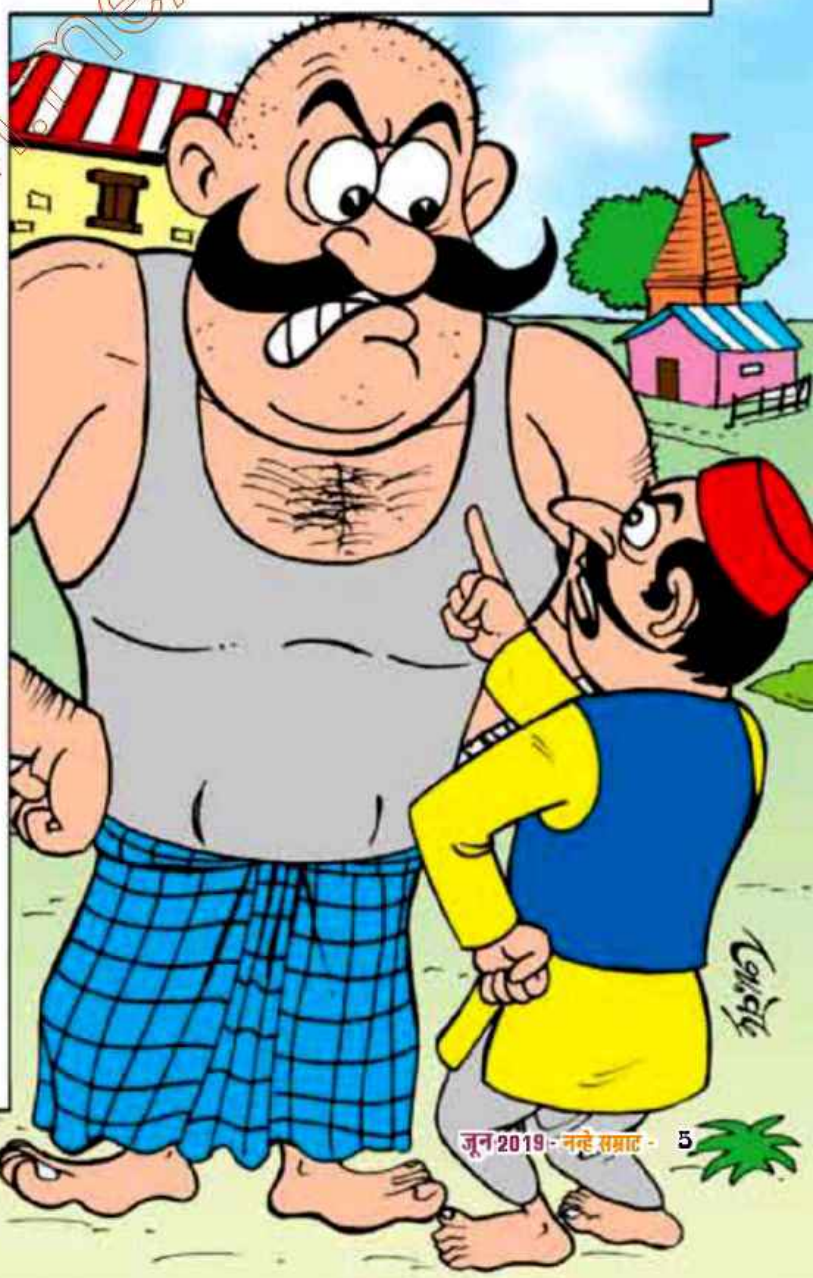

https://telegram.me/pocketmag

# मूर्खिस्तान का डॉक्टर महान

● तमन्ना शम्सी

मूर्खपुरा में जिस तरह स्टोव ठीक करने वाले और छतरियाँ बनाने वाले घूमते हैं, ऐसे ही देश के एक प्राँत के कुछ गाँवों में आँख ठीक करने वाले नीम-हकीम भी घूमा करते हैं।

पर भूरचंद इन नीम हकीमों से भी परले दर्जे का आँख करैया था। वह एक जंग लगे बक्से में एक खुट्टल चाकू, हाथ भर लम्बी लोहे की सरिया, कुछ शीशियों में स्प्रिट, गुलाब जल और थोड़ी-सी रूई लेकर गाँवों में घूमता रहता था। वह ज़ोर-ज़ोर से अवाज़ें लगाता था, ''आँख ठीक करा लो।''

औरतें या घर के बूढ़े, जिनकी आँखों में चिमचिमाहट होती, मोतियाबिंद होता या रोशनी कम होती, वो भूरचंद को बुला कर आँखें ठीक कराने के लिए सौदा करते।

भूरचंद का कोई रेट नहीं था। वह आसामी को देखकर बात करता था। कोई सेठानी लगी तो 100 के आसपास फीस बताई, वरना 10-20 रुपये में भी काम कर देता था।

जितने औज़ार हमने गिनाए, उनके अलावा भी उसके पास क्या होता था, यह मैं भी नहीं जानती। पर जैसे गाँव के मरीज़ों के बयान होते हैं उनके मुताबिक भूरचंद लोहे की सरिया से उनकी आँख के आस-पास ज़ोर-ज़ोर से दबाता था, इसमें कई बार लोगों को खूब तेज़ भी दिखाई देता था। इसके अलावा मोतियाबिंद के मरीज़ों की पुतली में वह चाकू से कठफोड़वे की तरह खरोंच मारता था, लोग दर्द से बिलबिलाने लगते तो वह रूई में स्प्रिट लगाकर आँख को हाथ से दबा लेने को कहता।

उसका कहना होता कि दूसरे दिन आँख पूरी तरह से ठीक हो जाएगी।

वह लोगों की अच्छी-भली आँखें फोड़ देता और फटी आँखों से ऐसी छेड़छाड़ कर जाता कि आँखों में मवाद पड़ जाता और वह टीसती रहतीं।

इसीलिए भूरचंद एक इलाके में कभी लौटकर नहीं जाता था। दरअसल गाँवों में काफी नीम हकीम 'आँख ठीक करेया' घूमते थे। उन्हीं की देखा देखी भूरचंद ने भी यह धंधा शुरू कर दिया था। वह नीम-हकीमों से भी गया गुज़रा था। वह पेशे से लोहार था, पर धंधे में आमदनी न देखकर उसने लोगों को उल्लू बनाने का धंधा शुरू कर दिया था। एक तो होते हैं, नीम-हकीम, पर वह नकली नीम हकीम था। नीम हकीमों ने ही उस प्राँत में जाने कितने लोगों की आँखें बरबाद कर दी थीं, पर इस महामूर्ख ने तो लोगों की आँखों से इस तरह खेलना शुरू कर दिया था, गोया आँखें बच्चों का खिलौना हों। खेला, तोड़ा और दूसरा ले आए।

पर इधर भूरचंद को पता चला कि छह महीने के भीतर उस प्रांत की सरकार ऐसा इंतज़ाम करने वाली है कि उस जैसे 'आँख ठीक करैयाओं' को रोटी के लाले पड़ जायेंगे। अब भूरचंद इस फिराक में रहने लगा कि एक मुश्त कुछ मोटी रकम

https://t.me/gram_nirbhay

बन जाए और वह छह महीने के अंदर कुछ पूँजी लगाकर दूसरा धंधा शुरू कर ले।

एक दिन एक गाँव में उसे एक ऐसा घर मिला जहाँ एक बुढ़िया दिन में अकेली रहती थी। बुढ़िया की आँखों की रोशनी काफी हद तक गायब हो चुकी थी। वह सिर्फ धुंधली छाया देख पाती थी। जब भूरचंद ने उसे आँख ठीक कराने के लिए पटाया तो वह मान गई। भूरचंद ने कहा कि वह आधे घंटे में आँखें ठीक कर देगा।

भूरचंद ने सेठानी बुढ़िया को पलंग पर लिटाया और उसकी आँखों के साथ चाकू लेकर छेड़छाड़ करने लगा। थोड़ी ही देर में उसने बुढ़िया की आँखें पूरी तरह बर्बाद कर दीं। बुढ़िया कराहती-छटपटाती जा रही थी अचानक उसकी कमर पर लटके चाबी के गुच्छे पर भूरचंद की नज़र पड़ गई।

भूरचंद फौरन बुढ़िया से बोला, ''अम्मा तेरी आँख तो अभी ठीक हो जाती है, पर दर्द से जल्दी आराम पाना चाहता है और अच्छी रोशनी चाहती है तो आँखों में सोने का पानी करा ले।''

''उसके कितने पैसे लगते हैं?'' बुढ़िया ने पूछा तो भूरचंद बोला, ''सिर्फ मेरी मेहनत के दो रुपये ज्यादा हो जायेंगे। बाकी सोने का कोई जेवर आप दे दो, मैं उसे रसोई में जाकर पानी में उबाल लूँगा और जेवर आपको लौटा दूँगा। बस उस पानी से आँख धोने से फौरन आराम मिल जाएगा और रोशनी में भी काफी फरक आएगा।''

भूरचंद ने अपनी बातों से बुढ़िया को प्रभावित कर दिया। बुढ़िया ने उसे चाबी सौंप दी। कहा, ''बड़े वाले काले संदूक से कान के झुमके निकाल लेना। बाकी किसी चीज़ को छेड़ना मत।''

''अरे अम्मा, हम तो डॉक्टर हैं। हमारा काम है दूसरों की सेवा करना। डॉक्टरों को किसी चीज़ का लालच नहीं होता।'' सेठानी बुढ़िया कुछ नहीं बोली। भूरचंद ने चाबी लेकर संदूक खोला तो भौंचक्का रह गया। सोने के कई ज़ेवर पड़े थे। एक बड़ी पोटली में चाँदी थी। भूरचंद ने सारा सामान समेटा और जाने से पहले बुढ़िया से कह गया, ''अम्मा झुमके मिल गये। मैं रसोई से पानी गरम कर के लाता हूँ।''

अम्मा इंतजार करती रहीं, पर भूरचंद रसोई से नहीं लौटा। जब बहुत देर हो गई तो बुढ़िया को शक हुआ। पर उसने आँख मिचमिचाई और दर्द से कराहती हुई वापस लेट गई। बाद में हाथों से टटोल कर वह बड़े वाले काले संदूक के पास गई। ताला-चाबी उसे वहीं पड़ा मिल गया। उसने टटोल कर संदूक के अंदर बाकी ज़ेवर देखे, सब ग़ायब थे। अब जाकर बुढ़िया ने चीख मारी। थोड़ी ही देर में गाँव के लोग जमा हो गए। बुढ़िया

# मूर्खिस्तान का मूर्खिस्तानी गीत

मूर्खिस्तान का राष्ट्रीय पर्व
मूर्ख दिवस (32 जुलाई)
पर विशेष:

## हमारा प्यारा मूर्खिस्तान

● सुखवंत

मूर्खिस्तान-मूर्खिस्तान
ये है मूर्खिस्तान।
जो भी देखे यहाँ के जलवे,
हो जाये कुर्बान।
यहाँ भोला हर इंसान,
ये है मूर्खिस्तान।
हँसी का गुलिस्तान,
ये है मूर्खिस्तान।
हर चेहरे पे मुस्कान,
ये है मूर्खिस्तान
तू भी हँस ले मेरी जान,
ये है मूर्खिस्तान।
मूर्खों की आन-बान और शान,
ये है मूर्खिस्तान।
सारे जहाँ से महान,
हमारा प्यारा मूर्खिस्तान।

https://telegram.me/boloram

के लड़के की शहर में सुनार की दुकान थी, उसे भी ख़बर भेज दी कि फौरन गाँव आओ।

उधर 'आँख ठीक करैया' शहर में पहुँचा और उसने सोचा फौरन जेवर बेचकर नकद पैसे बना लिए जाएँ और चलते बना जाए। वह जेवर बेचने बुढ़िया के लड़के की दुकान में ही गया। अपने घर के ज़ेवर देखकर बुढ़िया का लड़का भौचक्का रह गया। जब तक वह बगलें झाँकता हुआ कुछ सोच पाता गाँव से चार आदमी पहुँच गए। बुढ़िया के लड़के ने उन्हें देखते ही कह दिया, ''क्या हमारे घर में सोना चोरी हो गया?''

गाँव से आए लोग चौंक पड़े। तभी 'आँख ठीक करैया' भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन बुढ़िया के लड़के ने उसे दबोच लिया।

**नोट : नीम-हकीम डॉक्टरों से सावधान रहें।** ❑❑❑

# ज़रा हट के ज़रा बच के ये है मूर्खिस्तान

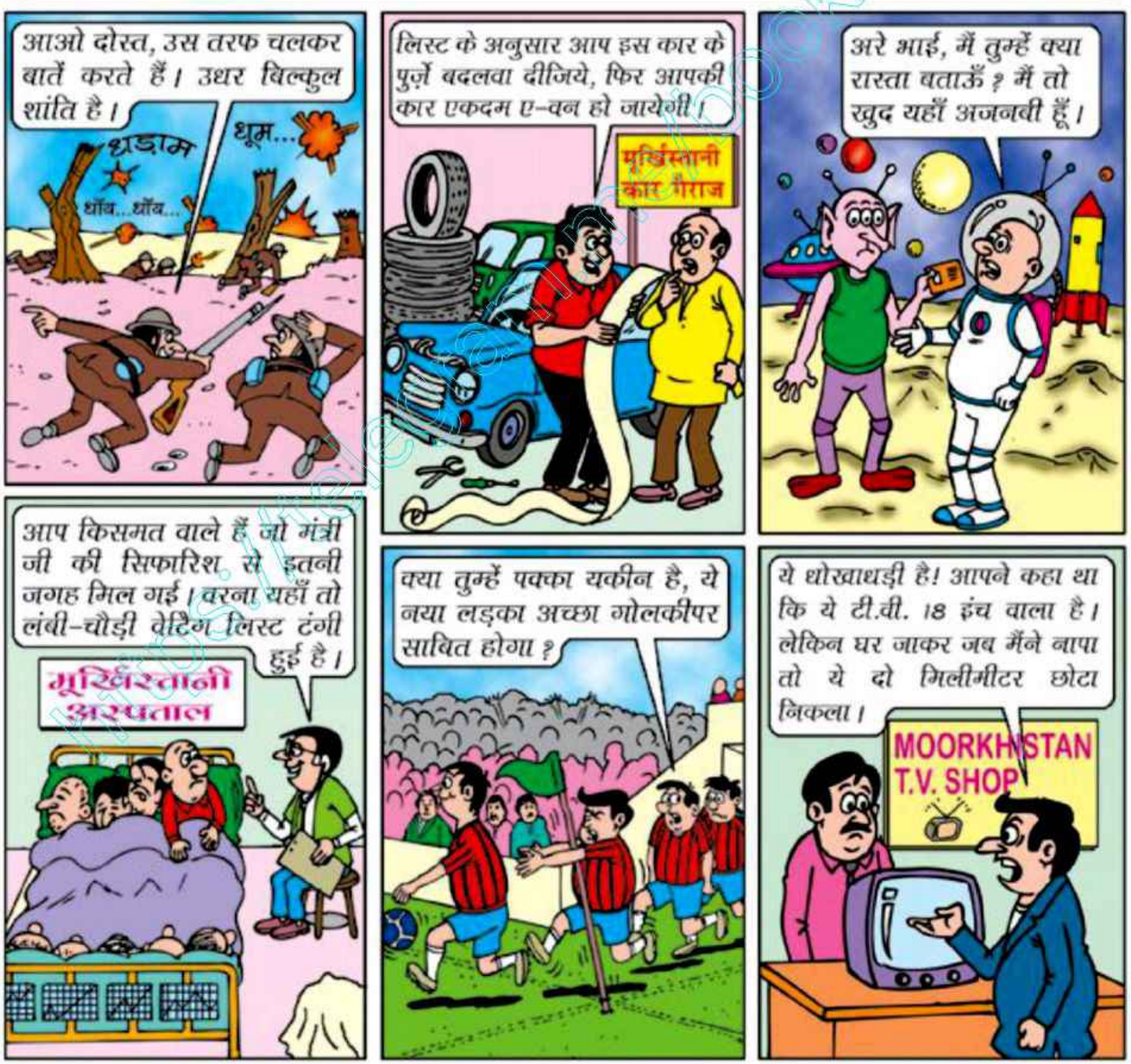
आओ दोस्त, उस तरफ चलकर बातें करते हैं। उधर बिल्कुल शांति है।
धड़ाम
धाँय...धाँय...
धूम...
लिस्ट के अनुसार आप इस कार के पुर्ज़े बदलवा दीजिये, फिर आपकी कार एकदम ए-वन हो जायेगी।
मूर्खिस्तानी कार गैराज
अरे भाई, मैं तुम्हें क्या रास्ता बताऊँ? मैं तो खुद यहाँ अजनबी हूँ।
आप किसमत वाले हैं जो मंत्री जी की सिफारिश से इतनी जगह मिल गई। वरना यहाँ तो लंबी-चौड़ी वेटिंग लिस्ट टंगी हुई है।
मूर्खिस्तानी अस्पताल
क्या तुम्हें पक्का यकीन है, ये नया लड़का अच्छा गोलकीपर साबित होगा?
ये धोखाधड़ी है! आपने कहा था कि ये टी.वी. 18 इंच वाला है। लेकिन घर जाकर जब मैंने नापा तो ये दो मिलीमीटर छोटा निकला।
MOORKHISTAN T.V. SHOP

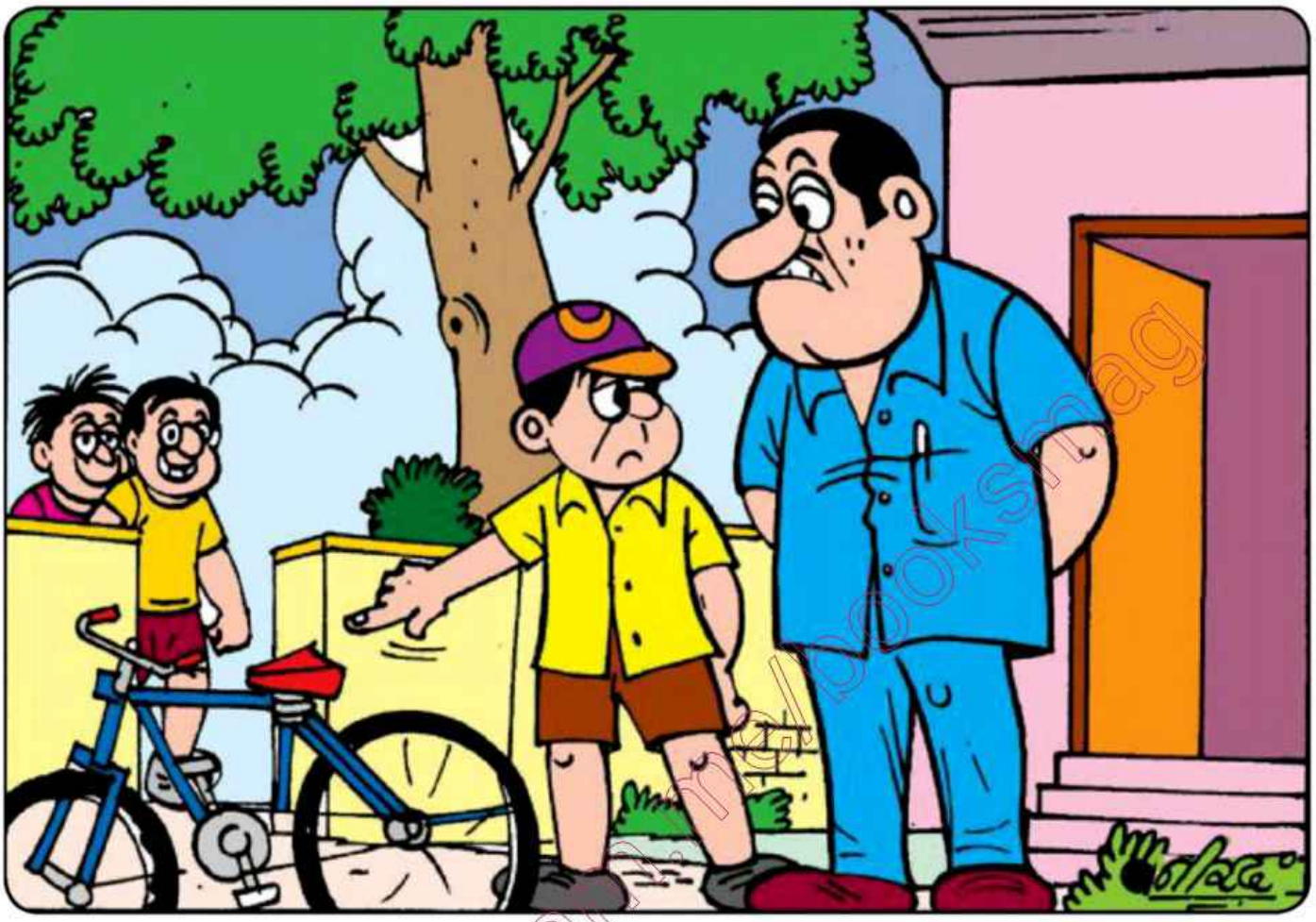

# मेरी साइकिल महान-मेड इन मूर्खिस्तान

● अमित-पूजा

सवारी छोटी हो या बड़ी, तेज़ रफ़्तार की हो या धीमी, उसे चलाने के लिए पारंगत होना बहुत टेढ़ी खीर है। साइकल को ही ले लीजिए। लोग उसे चलाना जितना आसान काम समझते हैं, उतना आसान यह है नहीं। बरसों की साधना के बाद, ईश्वर की कृपा से, अब वह दिन आ पाया है, जब मैं अपनी मूर्खिस्तानी साइकिल को स्कूटर की तेज़ी से चला सकता हूँ और दोनों हाथ छोड़कर भी बसों तथा ट्रकों के काफिलों के बीच से सीटी बजाते हुए निकल सकता हूँ। मेरी साइकिल में मडगार्ड, कैरियर, घंटी, चेन कवर आदि तो नहीं हैं, उसके ब्रेक भी हमेशा खराब रहते हैं।

पता नहीं, आजकल मूर्खिस्तान में ट्यूब रद्दी बनने लगे हैं, या सड़कें ही ख़राब हो गयी हैं, साइकिल में आये दिन पंक्चर हो जाता है। पंक्चर बनवाने का समय मुझे कभी नहीं मिल पाता, इसलिए मजबूरी में स्कूल जाते समय अक्सर एक रुपया देकर हवा भरवा लेता हूँ, लेकिन चौराहे तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर निकल जाती है। स्कूल तो समय से पहुँचना ही है, इसलिए बाकी रास्ते बिना हवा के साइकिल घसीटनी पड़ती है। ऐसा करने से, धीरे-धीरे टायर भी कटने लगे हैं।

पंक्चर न बनवा पाने का असर, जब स्कूल की हाज़िरी पर पड़ने लगता है, तब मैं घबरा कर यह मसला पिताजी के सामने रखता हूँ कि मेरी साइकिल के ट्यूब और टायर इतने कट गये हैं कि उन्हें अब बार-बार बनवाने में अपना ही घाटा है।

वो कहते हैं, ''तो फिर बदलवा क्यूँ नहीं लेते! कल छुट्टी है, जाकर बदलवा लेना।''

मैं 'जी अच्छा' कह तो देता हूँ लेकिन इस उबाऊ काम के लिए फुरसत फिर भी नहीं मिल पाती। कभी कोई दोस्त आ जाता है, कभी मुहल्ले का कोई लड़का, तो कभी कोई सहपाठी। ऐसे हम हैं नहीं कि दोस्तों की परवाह न करें, इसलिए उन्हें डिस्को म्यूजिक भी सुनाते हैं, उनका हालचाल भी पूछते हैं और उनकी आवभगत भी करते हैं। जाते समय अक्सर जब वो

https://telegram.me/pbooksmag

पूछते हैं, ''चौराहे तक चल रहे हो?'' तब हम उनको छोड़ने भी चले जाते हैं।

अब आपसे क्या छिपा है। मुहल्ले का चौराहा एक ऐसी जगह है जहाँ दस-पाँच दोस्त हमेशा किसी न किसी गंभीर मसले पर बात करते मिल जाते हैं। उस बातचीत में आप शामिल हुए नहीं कि फिर समय का पता ही नहीं चलता। घर लौट कर डाँट खायी, खाना खाया और सो गये।

सुबह फिर वही स्कूल का चक्कर।

मजबूरी में कुछ दिन रिक्शे पर जाना पड़ता है। जब पिताजी दस-बारह दिन तक रिक्शे का भाड़ा चुकाते रहते हैं और मेरे हाथों में अक्सर आते रहने के कारण उनकी साइकिल के भी अंजर-पंजर ढीले पड़ने लगते हैं, तब एक दिन वो खुद ही जाकर मेरी साइकिल के टायर-ट्यूब बदलवा देते हैं और ब्रेक, मडगार्ड, चेन-कवर, कैरियर तथा घंटी भी लगवा देते हैं। यह क्रम बराबर इसी तरह चलता रहता है।

वैसे आजकल मैं स्कूटर चलाना ज्यादा पसंद करता हूँ। स्कूटर वाले दोस्तों से इतनी अच्छी तरह चलाना सीख लिया है कि जिस सवारी से कहिए, आगे निकल कर दिखा दूँ। आत्मविश्वास इतना बढ़ गया है कि भरे बाज़ार में चला कर अपनी माताजी को मय सामान के राज़ी-खुशी घर पहुँचा चुका हूँ। मेरे इस कौशल से वो भी प्रभावित तो बहुत हुईं, लेकिन स्कूटर खरीदने की बात फिर भी आगे नहीं बढ़ पायी। मैंने माँ और पिताजी को कई बार समझाया भी कि घर में एक स्कूटर हो, तो वो मिनटों में दफ्तर पहुँच सकते हैं। रात-बिरात कहीं भी निडर होकर आ-जा सकते हैं और उस पर खर्च भी नहीं के बराबर आता है। लेकिन वो लोग हमेशा यह कर बात खत्म कर देते हैं कि तुम्हारे लिए अभी उसकी कोई जरूरत नहीं है।

आखिर मेरे बड़े भाई के सौजन्य से मेरे सपने पूरे हुए। मैंने तय कर लिया कि स्कूटर को बहुत सहेज कर रखूँगा और अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो, इसका पूरा प्रयत्न करूँगा। लेकिन सबको खुश रख पाना बहुत कठिन काम है। मैं बेचारा तो अब भी अपनी मूर्खिस्तानी साइकिल से ही स्कूल जाता हूँ। माँ के दफ्तर जाने के समय तक पिताजी बस से दफ्तर जा चुके होते हैं। माँ को स्कूटर चलाना आता नहीं, इसलिए उन्हें रिक्शे से ही दफ्तर जाना पड़ता है। वापसी पर उन्हें लाने का जिम्मा मेरा है। वो चाहती हैं कि घड़ी की सुई देखकर उन्हें लाने पहुँच जाया करूँ। मैं स्वयं भी यही चाहता हूँ, इसलिए स्कूल से वापस आकर नाश्ता करते ही मैं तीन बजे के करीब उन्हें लाने के इरादे से घर से स्कूटर लेकर निकल जाता हूँ। लेकिन दोस्तों में समय की पाबंदी की बोध न होने के कारण हमेशा कहीं-न-कहीं अटक जाता हूँ। वैसे माँ को कई बार समझा चुका हूँ कि मुझे देर होने पर वो हड़बड़ा कर रिक्शे में न आ जाया करें, लेकिन पाँच बजते ही उन्हें दफ्तर से भागने की इतनी जल्दी रहती है कि वो घंटा-आधा घंटा भी मेरी प्रतीक्षा नहीं कर पातीं।

वैसे भी स्कूटर क्या खरीदा गया, मेरी जान की मुसीबत हो गयी है। आप ही बताइए दोस्तो! जब आप दो गाड़ियों के बीच से स्कूटर निकाल रहे हों, तब क्या गाड़ीवालों को उसका ध्यान नहीं रखना चाहिए? लेकिन परवाह करता कौन है।

नन्हे सम्राट का जुलाई 2019 अंक होगा-
जासूसी-रहस्य-रोमाँच कथा विशेषाँक
जासूसी-रहस्य-रोमाँच से भरपूर आश्चर्यजनक कहानियों के अलावा इस विशेषाँक में पढ़िये अपने मनोरंजक स्थाई स्तंभ:
दिमाग लड़ाइये- अपराधी पकड़वाइये
करामाती मीकू
मैं हूँ जासूस
मूर्खिस्तान
मनोरंजन, जोश तथा साहसिक कारनामों से भरपूर
आपका चहेता कॉमिक हीरो-
सीक्रेट एजेंट 005
जूनियर जेम्स बाँड

पपलू : पापा बहुत गुस्से में हैं। मैं उनकी आँखों में शोले देश कर आ रहा हूँ।

टपलू : शोले पूरी देखी या इंटरवल तक?

**********

पपलू : याद रहे... इस मैच में सिर्फ पाँच गेंद बची हैं

टपलू : पाँच कहाँ हैं? मेरे पास तो सिर्फ एक ही है।

**********

पपलू : मुझे अपना बुखार उतारने के लिए क्या करना चाहिए?

टपलू : सीढ़ी का इंतजाम।

**********

पपलू : देखो यहाँ लिखा है- 'कृपया अपनी कार यहाँ न खड़ी करें, वरना सौ रुपये का जुर्माना भरना पड़ेगा।

टपलू : मुझे जुर्माना नहीं भरना पड़ेगा, क्योंकि ये मेरी नहीं पड़ोसी की कार हैं।

**********

पपलू : उस कमरे में पापा-मम्मी खा रहे हैं।

टपलू : तुम्हारे पापा जरूर आदमखोर होंगे।

**********

पपलू : मेरा गला बैठ गया है।

टपलू : थक गया होगा। ❑❑❑

कोई गाड़ी स्कूटर को खरोंचती हुई निकल जाती है, तो कोई बस एक किनारे खड़े स्कूटर को बीच सड़क पर खड़ा मान कर, गिराती हुई आगे बढ़ जाती है। घर के लोग इस बात पर तो खुश होते नहीं कि जब स्कूटर गिरा, तब मैं उस पर सवार नहीं था, उल्टे उसकी टूट-फूट गिनाने लगते हैं।

आखिर स्कूटर नया का नया बना रहे, इसमें बीमा कंपनी का ही तो लाभ है। उनके लाभ की चिंता हम क्यों करें? यहाँ तो इस बात की भी तारीफ करने वाला कोई नहीं कि मैं बिना ब्रेक की साइकिल जैसी हालत में भी उसे संभाल लेता हूँ। वह आड़ियल टट्टू की तरह चाहे जिस तरफ मुड़ जाता है, चाहे जहाँ रुक जाता है, रोकते-रोकते भी चाहे जितनी दूर निकल जाता है, लेकिन क्या मजाल, जो मैंने किसी मैकेनिक की हवा भी लगने दी हो।

एक बार स्कूटर का क्लच-वायर टूट गया। मैंने कोशिश की कि उसे लेकर जल्दी से घर तक पहुँच जाऊँ, लेकिन जब मूर्खिस्तानियों में ट्रैफिक सेंस ही न हो, तब किया क्या जाये। बायीं तरफ से एक गाड़ी बार-बार हॉर्न बजाती हुई रिक्शे की चाल से चल रही थी। खीज कर मैंने चाहा कि दन्न से दायें से निकल कर आगे बढ़ जाऊँ, लेकिन आपने भी यह अनुभव किया होगा कि जब सड़क एकदम साफ दिखाई देती है और आसपास कोई बाधा नहीं जान पड़ती, तब अचानक जाने कहाँ से कोई सवारी या गाय-भैंस, या छोटे बच्चे बीच सड़क पर प्रकट हो जाते हैं और घबराहट में ब्रेक लगने की जगह स्पीड बढ़ जाती है। उस दिन भी बकरी का एक बच्चा अचानक मुझे देख कर पलट कर भागा और उसे बचाने के चक्कर में मैं खुद पलट गया। एक मिनट के लिए तो लगा बस अब खेल खत्म। लेकिन जब लोगों ने भाग-दौड़ कर मुझे उठाया, तो मेरी हड्डियाँ सही सलामत थीं, चोट स्कूटर को ही ज्यादा आयी थी। एक रिक्शे पर स्कूटर और दूसरे पर मुझे लाद कर किसी तरह घर पहुँचाया गया।

घर पहुँचते ही मेरा यथोचित स्वागत हुआ और पिताजी ने घर में स्कूटर रखने के अपने निर्णय को पचासवीं बार सार्वजनिक रूप से गलत घोषित किया और मुझ पर यह पाबंदी लगा दी कि अब से जब भी स्कूटर पर घर से निकलूं, तो माँ या उन्हें पीछे बैठा कर ही निकलूँ। और दस किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा तेज़ कभी न चलाऊँ।

इन शर्तों के साथ सारे रास्ते डाँट खाने के लिए भला कोई स्कूटर चलाना ही क्यों चाहेगा? इसलिए जल्दी में कोई काम करना होता है, तो मैं साइकिल से ही लपक जाता हूँ। हाँ, इतना जरूर है कि मेरी साइकिल को देख कर आप अब शायद पहचान न सकें, क्योंकि दुर्घटना के बाद से मैं उसके सारे कलपुर्जे दुरुस्त रखने लगा हूँ। ❑❑❑

http://epgram.net/epgram.asp

सीक्रेट एजेंट 005

सुरक्षवंत

# जूनियर जेम्स बॉंड

## जेम्स और चाचू इन मूर्खिस्तान

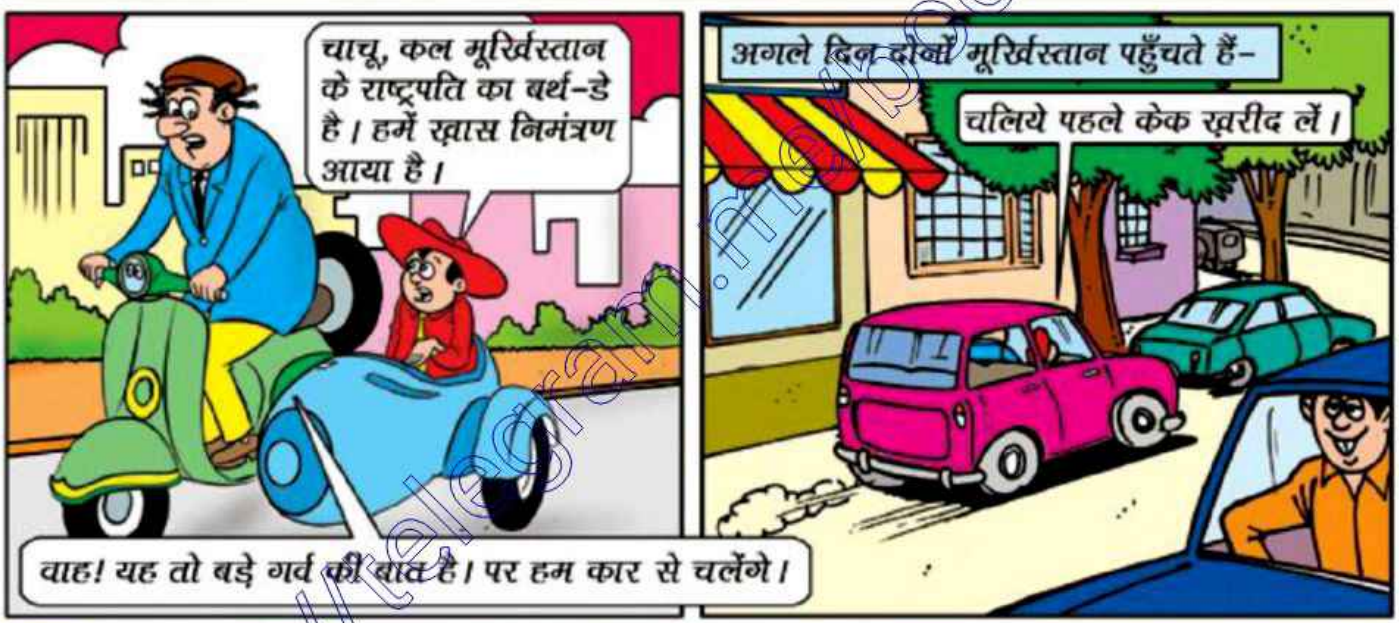

https://telegram.me/bookstore

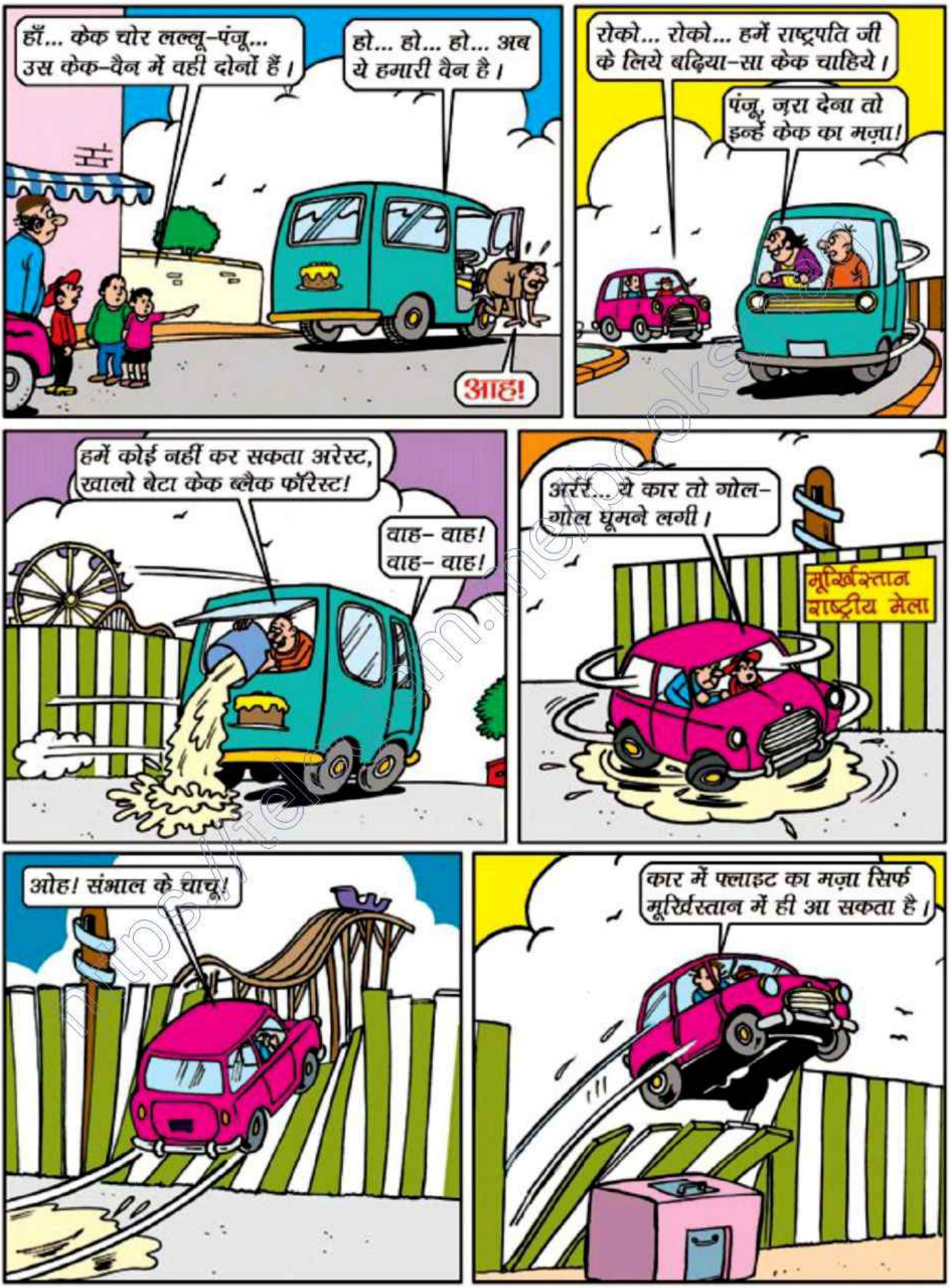
हाँ... केक चोर लल्लू-पंजू... उस केक-वैन में वही दोनों हैं।
हो... हो... हो... अब ये हमारी वैन है।
आह!
रोको... रोको... हमें राष्ट्रपति जी के लिये बढ़िया-सा केक चाहिये।
पंजू, ज़रा देना तो इन्हें केक का मज़ा!
हमें कोई नहीं कर सकता अरेस्ट, खालो बेटा केक ब्लैक फॉरेस्ट!
वाह- वाह! वाह- वाह!
अर्रर... ये कार तो गोल-गोल घूमने लगी।
मूर्खिस्तान राष्ट्रीय मेला
ओह! संभाल के चाचू!
कार में फ्लाइट का मज़ा सिर्फ मूर्खिस्तान में ही आ सकता है।

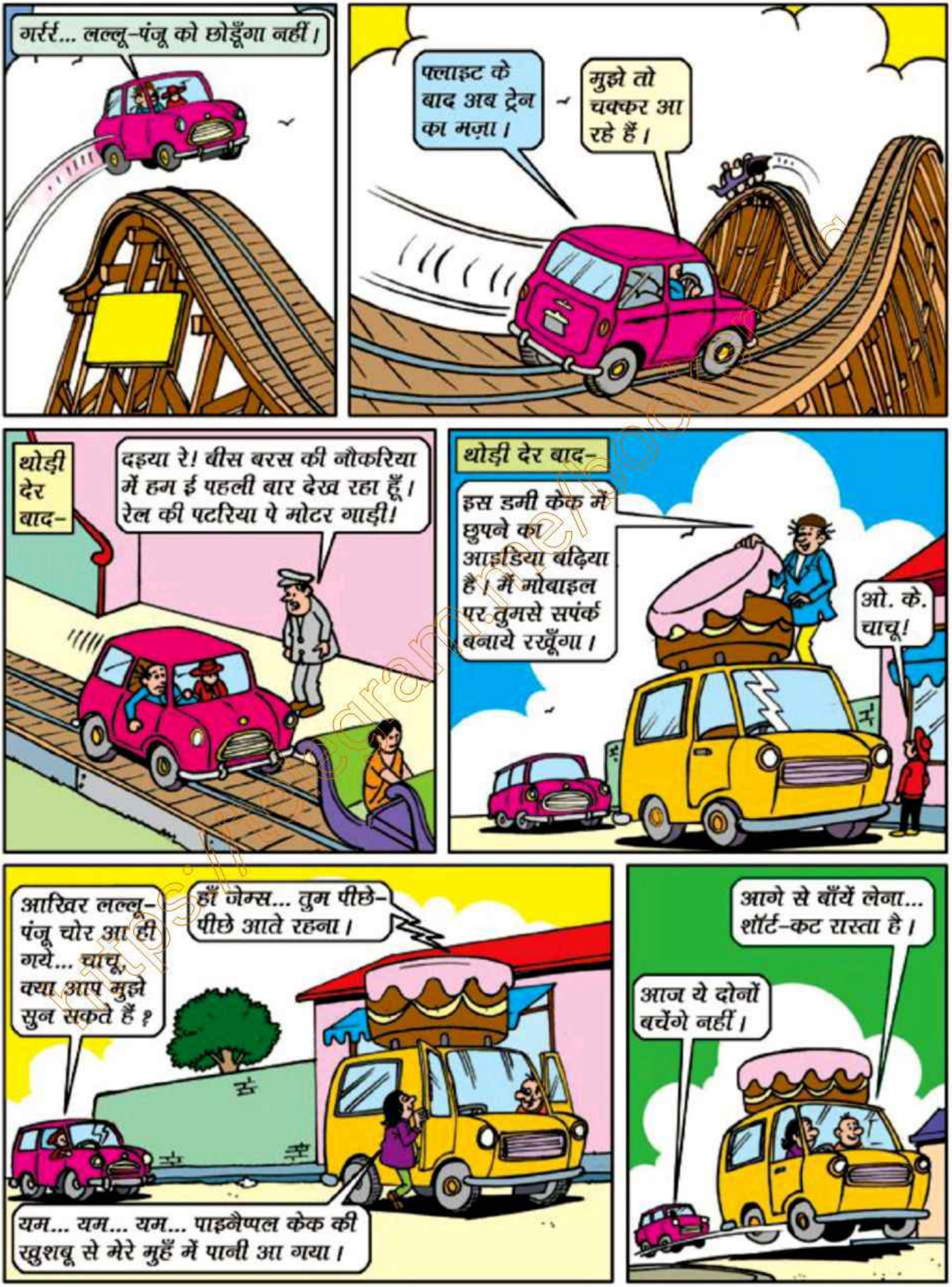
गर्रर्... लल्लू-पंजू को छोड़ूँगा नहीं।
फ्लाइट के बाद अब ट्रेन का मज़ा।
मुझे तो चक्कर आ रहे हैं।
थोड़ी देर बाद-
दइया रे! बीस बरस की नौकरिया में हम ई पहली बार देख रहा हूँ। रेल की पटरिया पे मोटर गाड़ी!
थोड़ी देर बाद-
इस डमी केक में छुपने का आइडिया बढ़िया है। मैं मोबाइल पर तुमसे सपंर्क बनाये रखूँगा।
ओ. के. चाचू!
आखिर लल्लू-पंजू चोर आ ही गये... चाचू, क्या आप मुझे सुन सकते हैं?
हाँ जेम्स... तुम पीछे-पीछे आते रहना।
यम... यम... यम... पाइनैप्पल केक की खुशबू से मेरे मुहँ में पानी आ गया।
आगे से बाँयें लेना... शॉर्ट-कट रास्ता है।
आज ये दोनों बचेंगे नहीं।

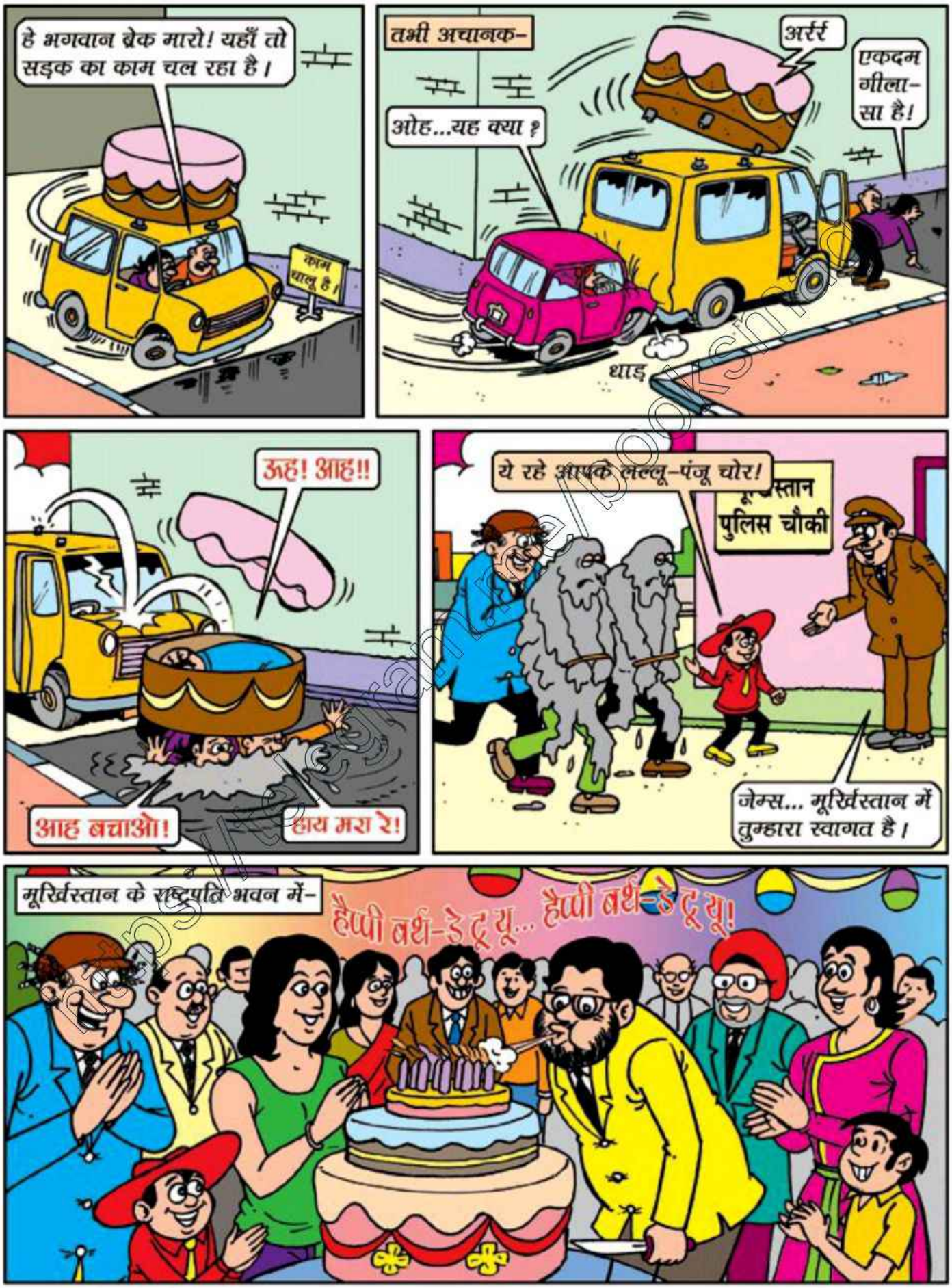


https://hindiamarchitrakatha.blogspot.com/

इस रोचक चित्र पहेली का हल खोजते समय आप अपने आपको सचमुच का जासूस महसूस करेंगे। यहाँ बने दोनों फ्रेमों में एक जैसे चित्र नज़र आ रहे हैं, लेकिन ऐसा है नहीं। ऊपर वाले फ्रेम के पाँच चित्र नीचे वाले फ्रेम से गायब हैं और इसी तरह नीचे वाले फ्रेम के पाँच चित्र ऊपर वाले फ्रेम से गायब हैं। अब आप फटाफट जासूसी करके उन गायब चित्रों को खोज निकालिए। (उत्तर इसी अंक में है।)

# मूर्खिस्तान का नशेड़ी

● सैम-हनी

मूर्खादरी कस्बे में क्या चीज़ मशहूर है, अगर यह सवाल कोई पूछता, तो मूर्खादरी का हर आदमी एक ही जवाब देता। जवाब होता-चकल्लस शराबी।

शराबी चकल्लस ने सारे कस्बे की नाक में दम कर रखा था। रात को दस बजे के बाद जब लोग सोने लगते हैं, छोटे से कस्बे की किसी भी गली से चकल्लस की आवाज़ गूँज पड़ती। फिर क्या, एक एक करके वह हर गली में हुड़गंद करता हुआ निकलता और रात के दो बजे तक लोगों की नींद ख़राब करता हुआ अपने घर पहुँचता।

वह रोज़ाना ठर्रे की एक पूरी बोतल खरीदता। आधी वह एक साँस में पी जाता और आधी पेंट के साथ कमर में खोंस लेता। चीखने-चिल्लाने पर जहाँ भी उसका गला खुश्क होता, वह एक घूंट भर लेता और बोतल वापस पिस्तौल की तरह कमर में अड़ा लेता।

वह रोज़ाना किसी को भी बेवजह गाली देने लगता और घंटों हुड़दंग मचाए रखता। किसी का भी दरवाज़ा भड़भड़ा देता। जब लोग गुस्से में बाहर आते, तो वह हाथ जोड़ कर कहता, ''मैं माफी माँगने आया हूँ।''

जब उससे पूछा जाता किस बात की माफी तो वह कोई जवाब नहीं देता। बस एक ही रट लगाए रखता कि माफ कर दो। घर के एक-एक सदस्य के पैर में गिर कर वह लोटने लगता और नाटक खड़ा कर देता।

कभी-कभी वह तलवार लेकर गली-गली में घूमता और चीखता, ''आज लाश गिर कर रहेगी।''

''किसकी लाश?'' यह पूछने पर चकल्लस का जवाब होता, ''जो मुझसे उलझेगा।''

वह ऐसा तमाशा बना देता जैसे सचमुच कोई भारी काँड होने वाला हो। पर होता कुछ नहीं था। लोग उसे जानते थे। कोई उसकी तलवार से डरता नहीं था। सिर्फ छोटे बच्चों में चकल्लस का आतंक छाया रहता। बच्चे समझते कि चकल्लस किसी को मार देगा। पर बाकी सब जानते थे कि वह बेवजह आतंक फैलाए रहता है।

एकाध बार कुछ लड़कों ने अंधेरे में उसे दबोच लिया और धमकाया, ''कस्बे में हुड़दंग करेगा तो बोटी-बोटी नोंच देंगे।'' इसके साथ ही एक-दो चपत लगा दिए, पर जैसे ही वह लड़कों के चंगुल से छूटा, उसने चीखना शुरू कर दिया, ''मार दिया, गुंडों ने मुझे चाकू मार दिया।''

एक दिन वह इसी तरह मुझे चाकू मार दिया कहकर चीखता हुआ पेट दबाए दौड़ रहा था। अचानक हमेशा सोई रहने वाली मूर्खादरी कस्बे की पुलिस प्रगट हो गई। पुलिस ने चकल्लस को पकड़ लिया। पूछा, ''चाकू किसने मारा?''

चकल्लस बोला, ''गुंडों ने।''

''गुंडों का नाम बताओ।''

''साब गुंडों का नाम तो गुंडा ही होता है, उनकी सूरत भी पहचान में नहीं आती।''

खैर, पुलिस ने पूछा, ''कितना घाव हुआ है?'' वह बोला, ''घाव होते-होते रह गया साब।''

''सिर्फ खरोंच है क्या?'' पुलिस ने फिर पूछा। चकल्लस बोला, ''गनीमत रही साब, खरोंच नहीं आई।''

''तो फिर चाकू कैसे मार दिया?''

''मार दिया साब, बहुत बुरी तरह मारा। पर मैं बच गया, मेरी किस्मत अच्छी है। उन्होंने तो अपनी ओर से मेरा खून करने की पूरी कोशिश की।''

पुलिस वालों को गुस्सा आ गया। हेड कॉस्टेबल ने सिपाही को आदेश दिया, ''फसाद करता है, पकड़कर ले चलो थाने।''

https://telegram.me/bookmag

## दुनिया की सबसे लम्बी मुस्कान

दुनिया की सबसे खूबसूरत और आकर्षक मुस्कानों का मुकाबला तो अक्सर हुआ है, मगर पिछले दिनों अमरीका के लियोन नगर में दुनिया की सबसे लम्बी मुस्कान की प्रतियोगिता हुई। देखा यह जाना था कि कौन प्रतियोगी अपने होठों के कोनों को ज्यादा अपने कानों के करीब तक खींच सकता है। मगर शर्त यह थी कि होंठ चाहे जितना खींचो, मगर उस पर मुस्कुराहट नज़र आनी चाहिए।

मुक़ाबला हुआ। औरतों और मर्दों ने ही नहीं बल्कि बच्चों ने भी मुस्कराने में इस मुक़ाबले में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जीत हुई मैडम शेन ची नामक एक पैंसठ वर्षीय चीनी बुढ़िया की। वह होठों को करीब-करीब कानों से मिलाकर दो घंटे तक मुस्कराती रहीं।

चकल्लस फौरन सतर्क हो गया। जेब से बीड़ी का बंडल निकालकर बोला, ''साब बीड़ी पीजिए।''

पुलिस वालों ने बीड़ी धौंकी और आराम से बोले, ''अब चल थाने।''

''ठीक है, लेकिन कल सुबह तक ज़रूर छोड़ देना साब। कल मैंने घर पर दावत रखी है। आप लोगों को न्यौता तो मिल गया होगा?''

''नहीं मिला।'' हेड ने कहा।

''कोई बात नहीं मिल जाएगा। मैं मुँह से भी कह दे रहा हूँ। दोपहर एक बजे आप लोगों को आना है।''

पुलिस वालों ने फौरन चकल्लस को घर जाने की इजाज़त दे दी। दूसरे दिन चकल्लस दावत से बचने के लिए पास के गाँव में चला गया। तीन दिन बाद लौट कर आया तो उसने पुलिस वालों से कह दिया, ''मेरी माँ गुज़र गई थी। रात ही रात मुझे गाँव जाना पड़ा।''

जबकि सच्चाई यह थी कि चकल्लस की माँ कई साल पहले गुज़र चुकी थी।

बहरहाल उसने पुलिस को दावत नहीं दी। एक दिन कस्बे के कुछ लड़कों ने पुलिस वालों के साथ मिलकर चकल्लस को धमकी दी। अगर आज के बाद कभी शराब पीकर हुड़दंग किया तो सिर मुंडाकर और मुँह पर कालिख पोतकर गधे पर घुमा देंगे।

चकल्लस को कोई असर नहीं हुआ। अगले दिन उसने फिर पी। उधर उसके अगले दिन लड़कों ने बाज़ार में घूम-घूमकर चकल्लस को सबक सिखाने के लिए व्यापारियों से चंदा जमा किया और आलीशान बैंड किराए पर ले लिया।

सूरज डूबने से पहले लड़के बैंड लेकर चकल्लस के घर पहुँच एक। लड़कों के साथ पुलिस कस्बे के व्यापारी, तमाशबीन बच्चे और एक नाई भी था। वहाँ पहुँच कर जबरन चकल्लस का सिर गंजा किया गया। फिर उसके मुँह पर कालिख पोती और गधे पर बैठा दिया। इसके साथ ही बैंड की धुन बजने लगी, घोड़ी पर होके सवार, चला है दूल्हा यार!

यहाँ से चकल्लस को कस्बे की एक-एक गली में घुमाया गया और मुख्य बाज़ार से होते हुए बारात ठेके पर पहुँच गई। वहाँ कन्या पक्ष के लोग बारात का इंतज़ार कर रहे थे। बाक़ायदा बारात का स्वागत हुआ। चकल्लस को गधे से उतार कर लग्न मंडप पर ले जाया गया। वहाँ दुल्हन की जगह गत्ते से शराब की बोतल का नमूना बनाया गया था। उस बोतल की आँखें, नाक, हाथ-पैर, सब बनाए थे। उसका दुल्हन की तरह श्रृंगार भी किया गया था।

इस बोतल के साथ चकल्लस के फेरे डाले गए। बाकायदा एक पंडित ने पूरी रस्में अदा कीं। चकल्लस बीच में भाग भी नहीं पाया क्योंकि पुलिस वाले डंडे लेकर चौकसी कर रहे थे।

दो हिजड़ों ने बोतल (दुल्हन) के माँ बाप का रोल अदा किया। वो बीच-बीच में 'हाय-हाय' करके दूल्हे राजा की बलाइयाँ भी लेते जा रहे थे। फेरे पूरे होने के बाद बोतल को डोली में बैठाया गया। हिजड़ों ने आँसू बहाने का अभिनय किया और बारात विदा हो गई।

अब तक अँधेरा हो चुका था। लेकिन रोशनी का पूरा इंतज़ाम था। बारात बाज़ारों से गुज़रने लगी। चकल्लस की दुल्हन (बोतल) देखने के लिए पुरुषों और महिलाओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। ऐसी भीड़ इस कस्बे में कभी किसी नेता के आगमन पर भी नहीं हुई थी।

अचानक चकल्लस ने अपने कालिख पुते मुँह से सेहरा हटा कर गधे की पीठ पर बैठे-बैठे ही एक पुलिस वाले से कहा, ''जिंदगी में आखिरी बार पीना चाहता हूँ। कहीं से इंतज़ाम कर दो। बगैर पिये गधे पर बैठ कर बेइज्जती महसूस हो रही है।''

**नोट: किसी भी तरह का नशा करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।** ❑❑❑

https://telegram.me/bookstag

# नरेंद्र द टी बॉय

● सुखवंत कलसी

## चोर यात्री

भारत नगर रेलवे स्टेशन के बाहर ही, प्लेटफॉर्म नंबर एक के साथ सटा हुआ, नरेंद्र के पिता जी का टी स्टॉल है। वहाँ कई तरह के लोगों का आना-जाना लगा रहता है।

आज इतवार का दिन था। आज नरेंद्र सुबह से ही पिता जी की मदद के लिए हाजिर था। नरेंद्र चाय की केतली और गिलास लेकर स्टेशन की तरफ बढ़ने ही वाला था कि एक शानदार कार आकर उसके बगल में रुकी। एक 14-15 साल का बच्चा उतरा और कार चालक से बोला, ''ड्राईवर काका आप घर जाइए, मैं ट्रेन पर खुद ही चढ़ जाऊँगा।''

''लेकिन राजू बेटा, साहब गुस्सा...''

''आप चिंता ना कीजिये काका। अब मैं नन्हा-मुन्ना राजू नहीं रहा। मैं अपना ख्याल स्वयं रख लूँगा।'' राजू अपने ड्राईवर की बात काटता हुआ बोला और बैग लेकर प्लेटफॉर्म की तरफ बढ़ गया।

नरेंद्र ये सारा नजारा बड़े गौर से देख रहा था। तभी उसकी नजर बल्लू पर पड़ी, जो इधर-उधर देखता हुआ, राजू के पीछे-पीछे चल दिया। नरेंद्र को मालूम था कि बल्लू अच्छा आदमी नहीं है। वो कई बार यात्रियों का सामान चुराने और जेबें काटने के जुर्म में जेल जा चुका था।

''मुझे बल्लू का पीछा करना चाहिए।'' इतना सोच कर वो बल्लू के पीछे चल दिया। अब बल्लू राजू के पीछे था और बल्लू के पीछे नरेंद्र।

प्लेटफॉर्म नंबर पाँच पर खड़ी ट्रेन के थ्री टायर कोच में राजू चढ़ जाता है। उसके पीछे बल्लू और नरेंद्र भी चढ़ जाते हैं।

राजू अपनी रिजर्व्ड सीट पर बैठ जाता है, बल्लू पूरे डिब्बे में इधर-उधर टहलने लगता है और नरेंद्र अपनी चिर-परिचित स्टाइल में चाय बेचने लगता है।

''चाय गर्मा गर्म चाय,
ऐसी कड़कदार चाय,
जो सबके मन को भाये।
बस एक चुस्की,
भगाए सुस्ती।''

तभी एक महिला ने आवाज लगाई, ''ओ चाय वाले... एक कप बढ़िया चाय देना।''

नरेंद्र उस महिला की तरफ बढ़ा और बड़े अदब से बोला, ''काकी... आपको ग्रीन टी दूँ, लेमन टी या मसालेदार... ?''

इस पर महिला ने मुस्कुरा कर नरेंद्र को ऊपर से नीचे तक देखा, फिर बोली, ''बेटा मसालेदार चलेगी।''

https://telegram.me/pbdigimag

नरेंद्र ने तुरंत गिलास में चाय डाली और जेब से मसाले की डिबिया निकाल कर मसाला चाय में घोल दिया।

''यह रही आपकी गर्मा गर्म स्वादिष्ट, मसालेदार चाय।''

महिला ने पैसे देने के लिए पर्स खोला, तभी नरेंद्र का ध्यान पास खड़े बल्लू की तरफ गया। वो बड़े गौर से पर्स को घूर रहा था। नरेंद्र तुरंत बोला, ''काकी आप पर्स का बहुत ध्यान रखिए, इस ट्रेन मे अक्सर चोरियाँ होती रहती हैं।''

''ठीक है, तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया... ये रहे तुम्हारे चाय के पैसे।'' महिला ने नरेंद्र को पैसे देने के बाद, अपना पर्स तकिये के नीचे दबा दिया। बाकी यात्री भी सावधान हो गए थे।

इतने में नरेंद्र ने देखा बल्लू वहाँ से जा चुका था। और राजू कोई कॉमिक पढ़ने में व्यस्त था।

चित्र-1

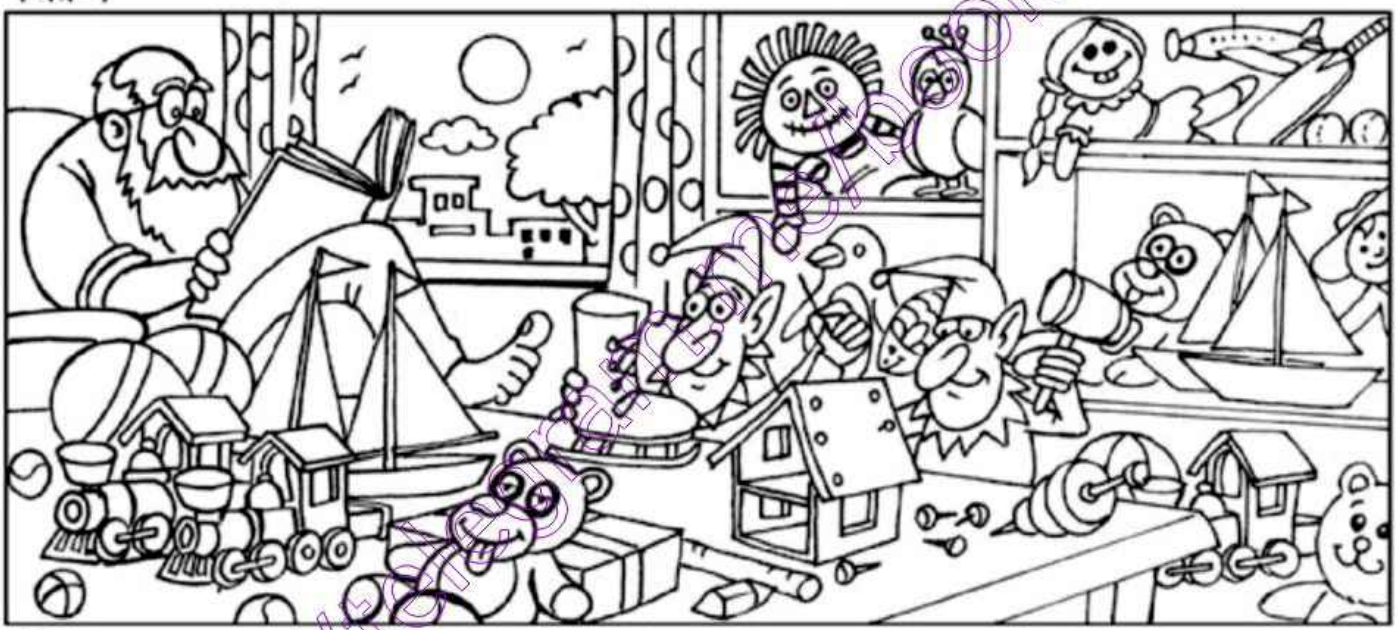

चित्र-2

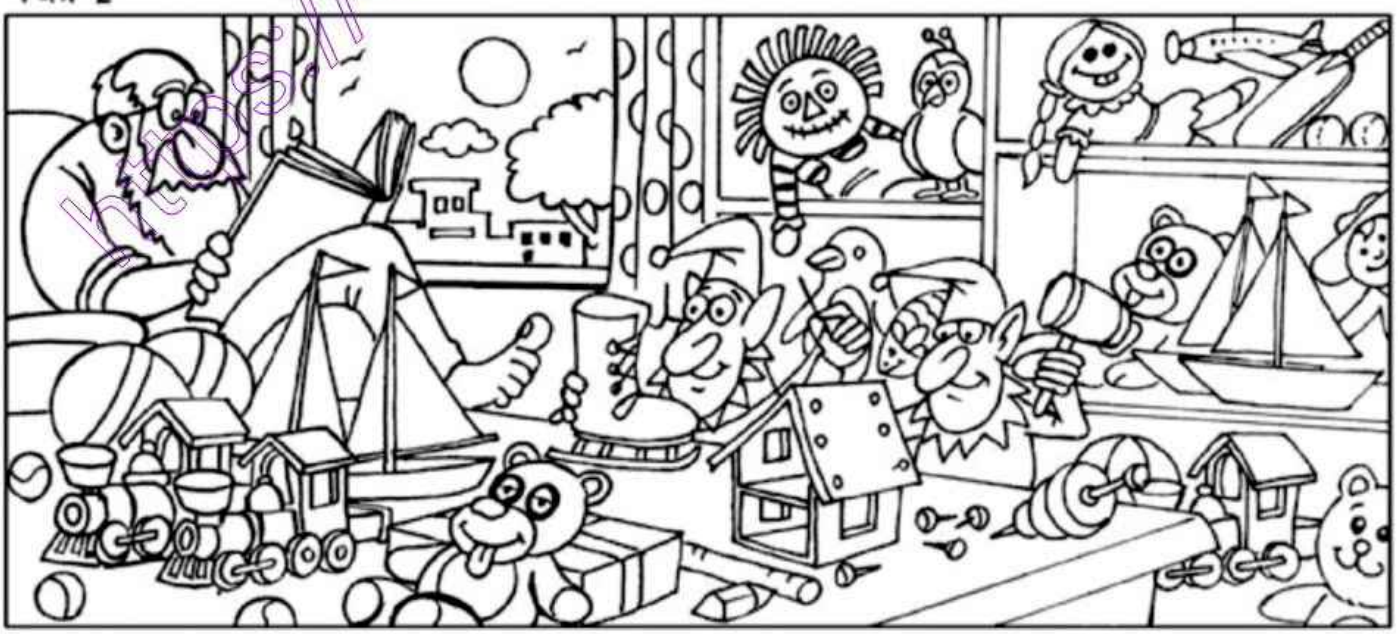

https://t.me/pathagarbooksnow

नरेंद्र 'चाय गर्मा गर्म चाय' बोलता हुआ आगे बढ़ जाता है। तभी उसकी नजर ठण्ड से ठिठुरती एक बूढ़ी महिला पर पड़ती है।

''अरे माता जी, आपको तो बहुत तेज ठण्ड लग रही है... मैं आपके लिए अदरक वाली चाय बनाता हूँ।''

''अरे नहीं बेटा...''

नरेंद्र उनकी एक नहीं सुनता और अपनी जेब से अदरक का पाउडर निकाल कर चाय में घोलने लगता है, ''माता जी, मेरी माँ ने अपने हाथों से ये अदरक का पाउडर बनाया है... दो मिनट में सारी सर्दी उड़न-छू हो जायेगी।''

''लीजिये गर्मा गर्म अदरक वाली चाय पीजिए।''

''लेकिन बेटा, मेरे पास तो एक भी पैसा नहीं है।'' वो बूढ़ी महिला चाय का कप वापिस करती हुई बोली।

ड्रॉइंग के मास्टर जी ने अपने विद्यार्थियों को चित्र नंबर 1 की नकल कर के बिल्कुल वैसा ही चित्र बनाने को कहा था लेकिन तीनों ने नकल करते वक्त अपने-अपने चित्रों में पाँच-पाँच एकदम अलग तरह की गलतियाँ कर डालीं।

अब आप अपनी पैनी नज़र चित्र नंबर 2, 3 तथा 4 पर घुमाइये और पता कीजिए कि किस विद्यार्थी ने कौन-कौन सी गलतियाँ की हैं? (उत्तर इसी अंक में है।)

चित्र-3

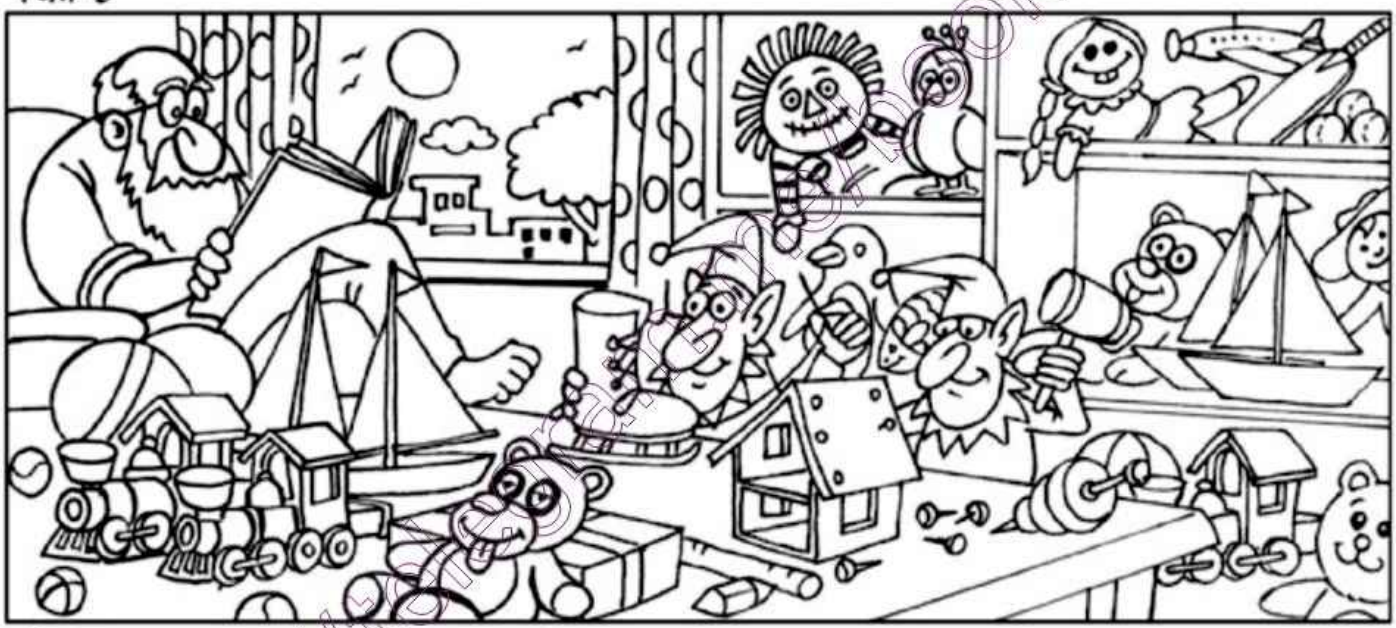

चित्र-4

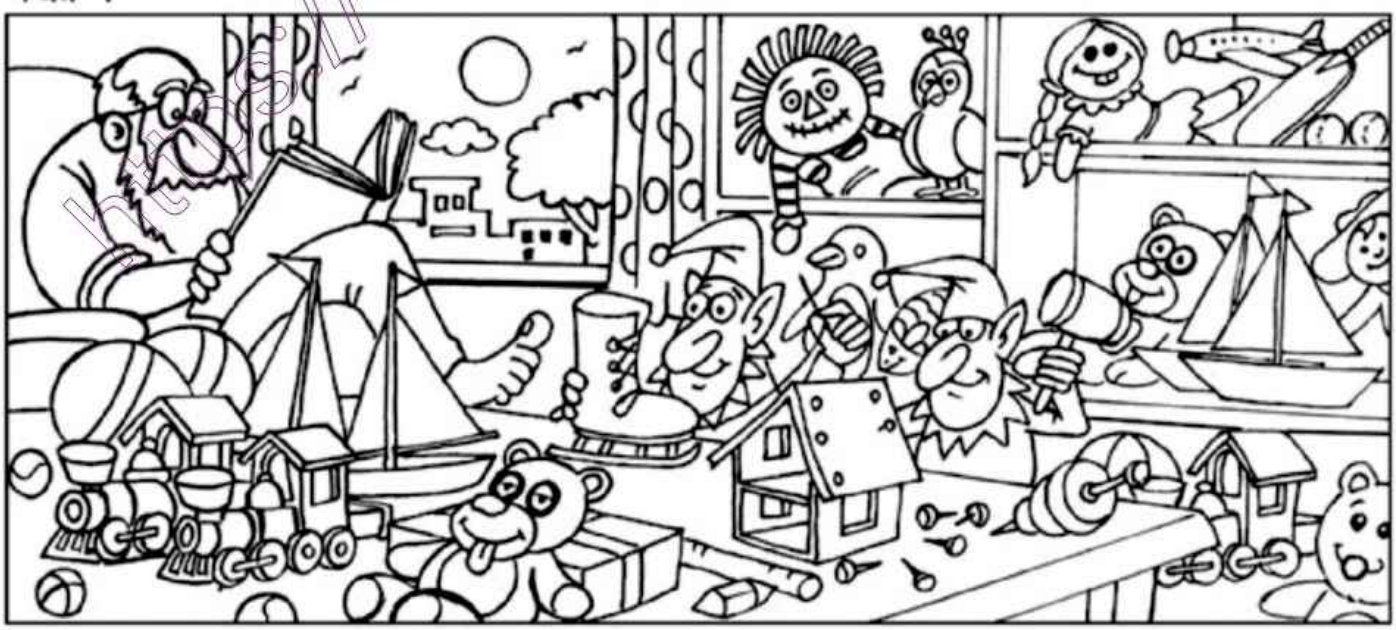

http://t.me/tehelkabooks

# खाली है ग्राफ चित्र बनाइये साफ

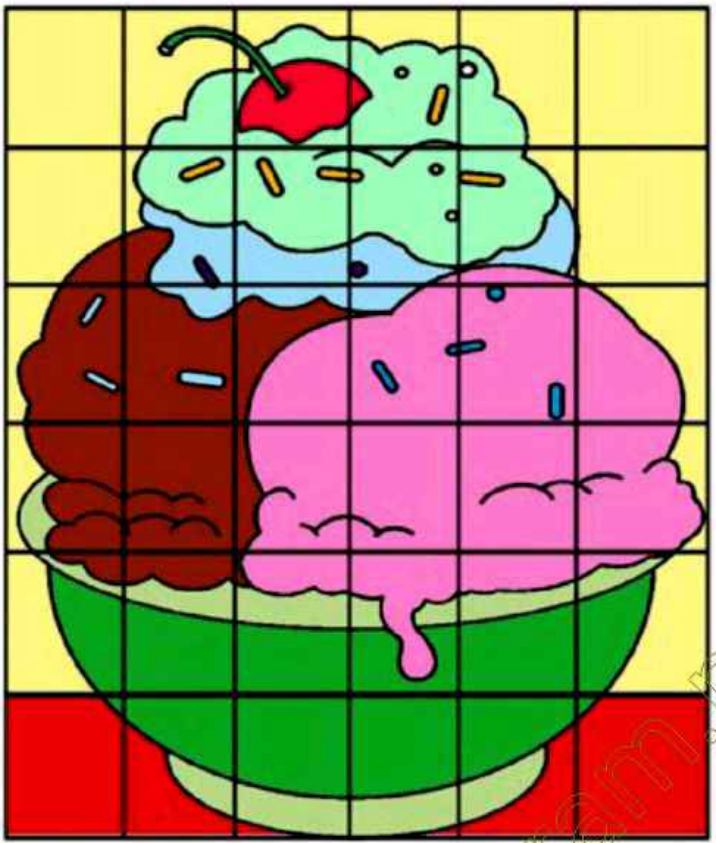

''वाह माता जी वाह! बेटा भी बोलती हैं और पैसो की बात भी करती हैं... आप चाय पीजिये, मेरे लिए आपका आशीर्वाद ही काफी है।''

''जीते रहो बेटा।'' चाय की चुस्की लेती हुई माता जी बोलीं, ''भगवान सदा तुम्हारा भला करेंगे।''

नरेंद्र लोगों को चाय भी दे रहा था और कनखियों से बल्लू पर भी नजर रखे हुए था, जो बार-बार राजू की बगल से होकर निकल जाता था।

''हैलो...हैलो... जी मम्मी जी बोलिए...'' राजू अपने मोबाइल पर बात कर रहा था, ''मम्मी आवाज बहुत कट रही है... हैलो... हैलो।''

इस पर नरेंद्र राजू के पास आया और बोला, ''दोस्त, यहाँ नेटवर्क की बहुत समस्या है... गाड़ी थोड़ा और आगे बढ़ेगी, तो प्रॉब्लम दूर हो जायेगी।''

''थैंक्यू सो मच... चलो थोड़ी देर बाद फोन कर लूँगा।'' राजू ने कहा और नरेंद्र की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया।

''मेरा नाम राजू है... और तुम्हारा?''

''मेरा नाम नरेंद्र है, कहाँ जा रहे हो? और अकेले जाते हुए तुम्हें डर नहीं लग रहा?'' नरेंद्र ने एक साथ दो सवाल दाग दिए।

इस पर राजू हँसते हुए बोला, ''कानपुर जा रहा हूँ, ये पहली बार है कि मैं अकेला निकला हूँ। मम्मी को बड़ी मुश्किल से मनाया था, कि इस बार मैं अकेला ही ट्रेवल करूँगा। क्योंकि अब मैं बड़ा हो गया हूँ।''

''ये तो अच्छी बात है, लेकिन माँ का दिल माँ का ही होता है।'' नरेंद्र बोला, ''लेकिन तुम्हारे पापा ने मना नहीं किया?''

''नहीं, बल्कि उन्होंने मेरे अकेले सफर करने पर खुशी जाहिर की। उनका मम्मी से कहना था, राजू अब पंद्रह साल का हो गया है। उसको अपने सारे काम खुद करने चाहिए तभी उसका कॉन्फीडेंस बढ़ेगा।''

तभी राजू के मोबाइल की घंटी बजने लगती है। वो जेब से निकाल कर चेक करता है। ''मम्मी का है।''

उसी वक्त नरेंद्र देखता है कि बल्लू इसी तरफ आ रहा है। राजू नेटवर्क की गड़बड़ी के कारण 'हैलो-हैलो' करता हुआ अपनी जगह से उठता है और एक तरफ बढ़ जाता है। बल्लू जो इस तरफ आ रहा था, वो राजू को दूसरी तरफ जाते हुए देखता है, तो तुरंत उसके पीछे लग जाता है।

राजू मोबाइल पर अपनी मम्मी से बात करता है, ''आप चिंता ना कीजिये मम्मी... दो-दो हजार के पाँच नोट ही तो हैं... मैंने अंदर की जेब में संभाल कर रखे हैं... ओहो! डोंट वरी... ओके बाय।''

https://telegram.me/pdfsnig

राजू की बात नरेंद्र के साथ-साथ बल्लू भी सुन लेता है। लेकिन बल्लू वहाँ से ऐसे चला जाता है, जैसे उसने कुछ सुना ही ना हो। राजू वापिस अपनी सीट पर बैठ जाता है। नरेंद्र चाय बेचने के लिए आगे बढ़ जाता है।

करीब एक घंटे बाद नरेंद्र फिर से उसी डब्बे में आता है। जिसमें राजू सफर कर रहा था। उसे ये देख कर आश्चर्य होता है कि बल्लू एकदम राजू के साथ सट कर बैठा हुआ था और राजू कॉमिक पढ़ रहा था।

नरेंद्र को देखते ही राजू बोला, ''दोस्त, मेरे मोबाइल की चार्जिंग एकदम खत्म हो गई है और इस डिब्बे में कोई भी चार्जिंग पांइट नहीं है, मैं क्या करू?''

''आओ दूसरे डिब्बे में चलो। वहाँ मोबाइल चार्ज हो जाएगा।''

इसी के साथ राजू अपना बैग उठा कर नरेंद्र के साथ चल देता है। बल्लू ये सब कनखियों से देखता रहता है।

मोबाइल चार्ज होने के बाद राजू वापिस अपनी सीट पर आकर बैठ जाता है। नरेंद्र चाय बेचता हुआ आगे बढ़ जाता है।

रात का खाना खाने के बाद सभी यात्री अपनी-अपनी बर्थ पर सो जाते हैं।

अगली सुबह नरेंद्र अपनी चिर-परिचित स्टाइल में चाय बेचता हुआ आता है।

''चाय गर्मा गर्म चाय,
ऐसी कड़कदार चाय,
जो सबके मन को भाये।
बस एक चुस्की,
भगाए सुस्ती।''

लेकिन ये क्या... ? नरेंद्र जैसे ही राजू वाले डिब्बे में आया वहाँ हड़कंप मचा हुआ था। राजू लगातार चिल्ला रहा था, ''मेरी जेब से किसी ने दस हजार रुपये चुरा लिए हैं... जिसने भी चुराये हैं, वो चुपचाप लौटा दे, वरना अगले स्टेशन पर पुलिस को खबर कर दूँगा।''

नरेंद्र का ध्यान तुरंत बल्लू की तरफ गया, जो कि चुपचाप बैठा अखबार पढ़ने में मग्न था। नरेंद्र राजू के पास आया और बोला, ''दोस्त चिंता मत करो। चोर बहुत जल्द सबके सामने होगा।''

इतना कह कर नरेंद्र तुरंत दूसरे डिब्बे में गया और टीटी और पुलिस के एक हवलदार को अपने साथ ले आया। अब

तक राजू के आसपास बहुत सारे यात्रियों की भीड़ जमा हो गई थी। हर कोई यही चाहता था कि राजू के पैसे वापिस मिल जाएं।

''यहाँ पर मौजूद सभी लोगों की तलाशी ली जायेगी। जिसके पास भी चुराये हुए पैसे बरामद होंगे, उसको पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा।'' टीटी ने कड़े शब्दों में कहा।

''सभी लोगों की तलाशी लेने से बेहतर है आप सिर्फ इस शख्स की तलाशी लें।'' नरेंद्र ने बल्लू की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''मुझे पक्का विश्वास है कि रुपये इसी ने चुराये हैं।''

इस पर बल्लू व्यंग से बोला, ''वाह चाय वाले मुन्ना वाह। यानि चोर ने चोरी की और भागा नहीं, बल्कि वहीं बैठ कर पुलिस के आने का इंतजार करता रहा कि पुलिस वाले आयें और उसे गिरफ्तार कर लें।''

बल्लू की बातें सुनकर आसपास के सभी लोग हँसने लगे। इस पर टीटी बोला, ''नरेंद्र, तुम यह कैसी बातें कर रहे हो? भला चोर चोरी करने के बाद वहीं बैठा रहेगा?''

''लेकिन शातिर चोर दूसरों की आँखों में धूल झोंकने के लिए कुछ भी कर सकता है।'' नरेंद्र ने कड़े शब्दों में कहा, ''मैं बल्लू के बारे में सब जानता हूँ, ये चोरी, लूटमार के लिए कई बार जेल जा चुका है... आप इसकी तलाशी तो लीजिये।''

## शतरंज का खिलाड़ी

अमरीका का जॉन होप नामक व्यक्ति शतरंज का बहुत बड़ा रसिया है। इस बात को साबित करने के लिए उसने जो मकान बनवाया है, उसका बड़ा कमरा उसने शतरंज के खेल के लिए खास तौर से तैयार कराया है। पूरे फर्श पर एक दीवार से दूसरी दीवार तक शतरंज का नक्शा बना हुआ है। और गोटियाँ कुर्सी जितनी बड़ी हैं। खेल के समय उन गोटियों को कई नौकर इधर से उधर खिसकाते रहते हैं।

बल्लू की तलाशी में उसकी जेब से बहुत सारे नोट निकलते हैं। उनमें दो हजार के पाँच नए नोट अलग से ही नजर आते हैं।

''ये दो हजार के पाँच नए नोट ही मेरे हैं।'' राजू खुशी से भर कर बोला।

''वाह जी वाह!'' बल्लू गुस्से से भर कर बोला, ''इतने सारे नोटों में इसने झट से अपने नोट पहचान भी लिए...। अरे ये वो नए नोट हैं जो कल मैंने एटीएम से निकलवाये थे।''

नरेंद्र ने पाँचों नोट हाथ में लिए और बोला, ''टीटी अंकल, इससे पूछिए कि इसके पास क्या सबूत है कि ये दो हजार के पाँच नोट इसने एटीएम से निकलवाये थे। ये सरासर झूठ बोल रहा है।''

इस पर बल्लू बोला, ''टीटी साहब, इससे पूछिए, इसके पास क्या सबूत है कि ये नोट राजू के हैं?''

''दोस्त, अपनी जेब से वो कागज निकालो।'' नरेंद्र राजू से बोला।

''कौन सा कागज?'' राजू बोला।

''अरे वही, कल शाम को जिस पर मैंने कुछ लिखा था।''

''ओ हाँ... मैं तो भूल ही गया था। आई एम सो सॉरी।'' इसके साथ ही राजू अपनी जेब से एक कागज निकाल कर नरेंद्र को देता है। नरेंद्र उसमें से देख कर कुछ पढ़ता है, ''3HS350956, 3HS350957, 3HS350958, 3HS350959, 3HS350960''

''ये सब क्या है?'' टीटी ने पूछा।

इस पर राजू बोला, ''ये वो नंबर्स हैं जो मेरी जेब में रखे नोटों पर छपे थे...''

''आप जरा इन बरामद नोटों के नंबर्स से मिलान कर के देखिए।'' नरेंद्र ने राजू का अधूरा वाक्य पूरा किया।

टीटी कागज और नोटों के नंबरों को मिलाता है, तो दोनों एक जैसे निकलते हैं। अपनी पोल पट्टी खुलती देख, बल्लू वहाँ से भागने की कोशिश करता है, लेकिन पुलिस वाला उसे दबोच लेता है।

अंत में राजू सबको बतलाता है, ''कल शाम नरेंद्र मेरा मोबाइल चार्ज कराने के लिए मुझे दूसरे डिब्बे में ले गया था। वहीं पर इसने मुझे आईडिया दिया था कि मैं अपने साथ लाये रुपयों के नंबर्स नोट कर लूँ, क्योंकि इस ट्रेन में चोरी की घटनायें बहुत होती हैं।''

इस पर वहाँ मौजूद सभी यात्रियों ने तालियाँ बजा कर नरेंद्र की प्रशंसा की।

इस बीच ट्रेन कानपुर स्टेशन पहुँच चुकी थी। धीरे-धीरे यात्री उतरने लगे। राजू ने आगे बढ़ कर नरेंद्र को गले लगाया और 'गुडबाय' कह कर डिब्बे से नीचे उतर गया। ❑❑❑

https://telegram.me/boloraag

# मूर्खिस्तान™ दल-बदलू गाइड बुक

सुखवंत

बाज़ार में जैसे हर बिकाऊ सामान पर टैग लगा होता है, वैसा ही टैग आप अपने माथे पर लगा लें। इस तरह से अलग-अलग पार्टियाँ आपको आसानी से खरीद सकेंगी।

आज से ही आप घटिया और गिरी हुई हरकतें शुरू कर दीजिये। जैसे- उधार ले कर पैसे मत लौटाइये, पड़ोसियों से झगड़ा कीजिये वगैरह-वगैरह। इस तरह से आप काफी बदनाम हो जायेंगे। आए दिन आपकी पिटाई भी हुआ करेगी और आप पक्के ढीट बन जायेंगे। दलबदलुओं में यह गुण बहुत ज़रूरी है।

सड़क पर कभी भी यातायात के नियमों का पालन न करें, दीवाली के दिन रंगों से खेलिये, कानून की किताबें जला डालिये... अगर पक्का दलबदलू बनना है तो सारे नियम-कायदे त्यागने पड़ेंगे।

जहाँ-जहाँ भी नीलामी के लिये बोलियाँ लगती हैं, वहाँ ज़रूर जाइये। आपको नीलामी के नियम पता चल जायेंगे। कल को जब विरोधी पार्टी वाले आपकी बोली लगायेंगे तो स्वयं को नीलाम करने में आपको आसानी रहेगी।

घर में वीडियो पर रोज़ाना हिंदी फिल्में देखिए। हिंदी फिल्म में हीरो कभी डॉक्टर बन जाता है तो कभी कव्वाल, कभी चोर बन जाता है तो कभी पायलट। इस तरह से आपके दलबदलू विचारों को बल मिलेगा और हीन-भावना भी नहीं आयेगी। दल बदलते वक्त आप स्वयं को हीरो समझने लगेंगे।

कभी तू छलिया लगता है। कभी दीवाना लगता है। कभी अनाड़ी लगता है। कभी आवारा लगता है।

दो-चार वाक्य अच्छी तरह से याद कर लीजिये जैसे- 'जनता की भलाई के लिए।' 'देश की एकता व अखंडता के लिए।' 'सांप्रदायिक सद्भावना के लिए...' आदि। दल बदलने पर जब प्रेस वाले आपसे कारण पूछें, तो आप उपरोक्त कारणों में से कोई भी एक कारण बता सकते हैं।

https://telegram.me/pboksmag

# मूर्खिस्तान का

# मूर्ख शेर

● सोनिया

मूर्खादरी गाँव में कल्लू नामक ताँगे वाला रहता था। वह साल में आठ महीने ताँगा चलाया करता था। बरसात के चार महीने वह आराम करता था और घोड़े को गाँव के बाहर जंगल में चरने के लिए छोड़ देता था। एक बार जब वह बरसात का मौसम आया, तो कल्लू ने घोड़े को गाँव से बाहर जंगल में छोड़ दिया और खुद घर लौट आया।

घोड़े ने सोचा कि अब से चार महीने बाद कल्लू मुझे फिर पकड़ कर ले जायेगा और ताँगे में जोतेगा। इसलिए मैं अब के यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँ जहाँ पर कल्लू न पहुँच सके। यह सोचकर घोड़े ने चलना आरंभ किया और चलते-चलते एक वन में पहुँच गया।

वहाँ पर घास अच्छी थी, इसीलिए वह वहीं पर रुक गया। उसने वहाँ पर झाड़ी में एक शेर देखा। वह शेर को देख कर डर गया और अपने मन में सोचने लगा कि इससे तो वहीं अच्छा था। चार महीने आराम से घास चरता था और अब यह शेर मुझे खा जाएगा। यह सोच कर घोड़ा रोने लगा। घोड़े को रोता देखकर शेर ने घोड़े से पूछा, ''क्या बात है ?''

घोड़े ने शेर से अपना सारा हाल कहा। शेर ने उसका हाल सुनकर कहा, ''अच्छा अगर ऐसी बात है तो आज से तुम हमारे मित्र हो।''

यह सुनकर घोड़ा बहुत प्रसन्न हुआ। शेर ने उसे यह भी कहा, ''तुम यहीं पर घास चरा करना। यहाँ पर चरने से तुम को कोई नहीं रोक सकता।'' तभी से घोड़ा दिन भर वहीं घास चरता था और शेर दिन भर शिकार करता था। शाम को दोनों मित्र एक जगह बैठकर बातचीत करते थे। इसी प्रकार चार महीने बीत गये। घोड़ा निश्चिंत था कि कल्लू यहाँ पर नहीं आ सकता।

इधर कल्लू के घर में जब खाने को नहीं रहा, तो उसकी पत्नी ने कहा, ''घर में खाने को कुछ नहीं है।'' यह सुनकर कल्लू ने अपनी घोड़ा चलाने वाली छड़ी उठाई और घोड़ा ढूँढने चल दिया।

घोड़ा ढूँढते-ढूँढते सुबह से शाम हो गई, परन्तु घोड़ा नहीं मिला। तब वह निराश होकर शाम को घर लौटा और पत्नी से कहा, ''घोड़ा कहीं नहीं मिला। शायद इस बार घोड़ा कहीं दूर निकल गया है। तुम कल सुबह मुझे दो रोटी पका देना। मैं घोड़ा ढूँढने जाऊँगा।''

सुबह होते ही कल्लू की पत्नी ने उसे पड़ौस से आटा माँगकर रोटियाँ पका दीं। कल्लू रोटियाँ लेकर घोड़ा ढूँढने चल दिया। चलते-चलते कल्लू भी वहीं पहुँच गया जहाँ घोड़ा चर रहा था। वह घोड़े के पास गया और उसकी पीठ पर जोर से हाथ मारा, ''चलो दोस्त, अब तो चार महीने बीत गए। चलो अब ताँगे में जुतना है।''

यह सुनकर घोड़े की जान सूख गई। वह अपने मन में यह सोचने लगा कि यह अब मुझे लेकर जरूर जाएगा। इस समय यहाँ पर शेर भी नहीं है जो मुझे रोक लेता। यह सोच कर घोड़े ने कल्लू से कहा, ''हे मालिक, आप इतनी दूर से चल कर आए हो। ज़रा आराम कर लो और मैं भी ज़रा-सी घास चर लूँ।'' यह सुन कर कल्लू पेड़ के नीचे बैठ गया। इतने में शेर आ गया और कहने लगा, ''क्या बात है ?''

शेर को देखकर कल्लू डर गया और घोड़े से कहने लगा, ''मुझे मालूम नहीं था कि शेर तुम्हारा मित्र है। नहीं तो मैं इधर को आता भी नहीं। अब किसी तरह तुम मेरी जान बचाओ।''

https://telegram.me/bookmag

घोड़े ने शेर से कहा, ''हे मित्र, तुम इसको छोड़ दो। यह फिर कभी इधर नहीं आएगा।''

शेर बोला, ''अच्छा, अगर ऐसी बात है तो मैं इसे छोड़ देता हूँ। अब अगर कभी यह इधर आएगा तो मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।''

यह सुनकर कल्लू बोला, ''मैं अब कभी भी इधर को मुँह करके भी नहीं बैठूँगा।'' कल्लू ने दौड़ना शुरू कर दिया और भागते-भागते जब वह दूर निकल गया, तब उसने पीछे मुड़कर देखा कि कहीं शेर तो नहीं आ रहा। उसने शेर को न आता देखकर आराम से चलना आरंभ किया। घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी से कहा, ''आज तो मैं भगवान के घर से ही लौट कर आया हूँ।'' पत्नी के पूछने पर कल्लू ने सारा हाल उसे बताया।

कल्लू के पड़ोस में एक बढ़ई रहता था। कल्लू ने यह हाल बढ़ई को सुनाया। बढ़ई ने सारा हाल सुनकर कल्लू से कहा, ''अरे यार, तुम तो बड़े डरपोक हो। मैं कल तुम्हारे साथ चलूँगा और शेर तथा घोड़े दोनों को ही पकड़ कर ले आऊँगा।''

सुबह होते ही बढ़ई ने कल्लू का दरवाज़ा खटखटाना शुरू कर दिया। कल्लू के आने पर बढ़ई ने कल्लू से कहा, ''चलो भाई, जल्दी से तैयार होकर चलो।''

कल्लू तैयार होकर घर से बाहर आया। तब बढ़ई ने अपने सारे औजार कल्लू के सिर पर रख दिए और कहा, ''चलो।'' यह देखकर कल्लू बढ़ई से बोला, ''अरे यार, हम तो शेर पकड़ने जा रहे हैं। इन औज़ारों का क्या करोगे?''

बढ़ई बोला, ''अरे भाई, तू चल तो सही। जो होगा, देखा

मूर्खिस्तानी टैक्सी

मूर्खिस्तानी कंप्यूटर

मूर्खिस्तानी मोबाइल

मूर्खिस्तानी सॉफ्टवेयर इंजीनियर

मूर्खिस्तान की रेलवे लाइन

मूर्खिस्तान की कार पार्किंग

मूर्खिस्तानी बकरियाँ

https://telegram.me/hookranga

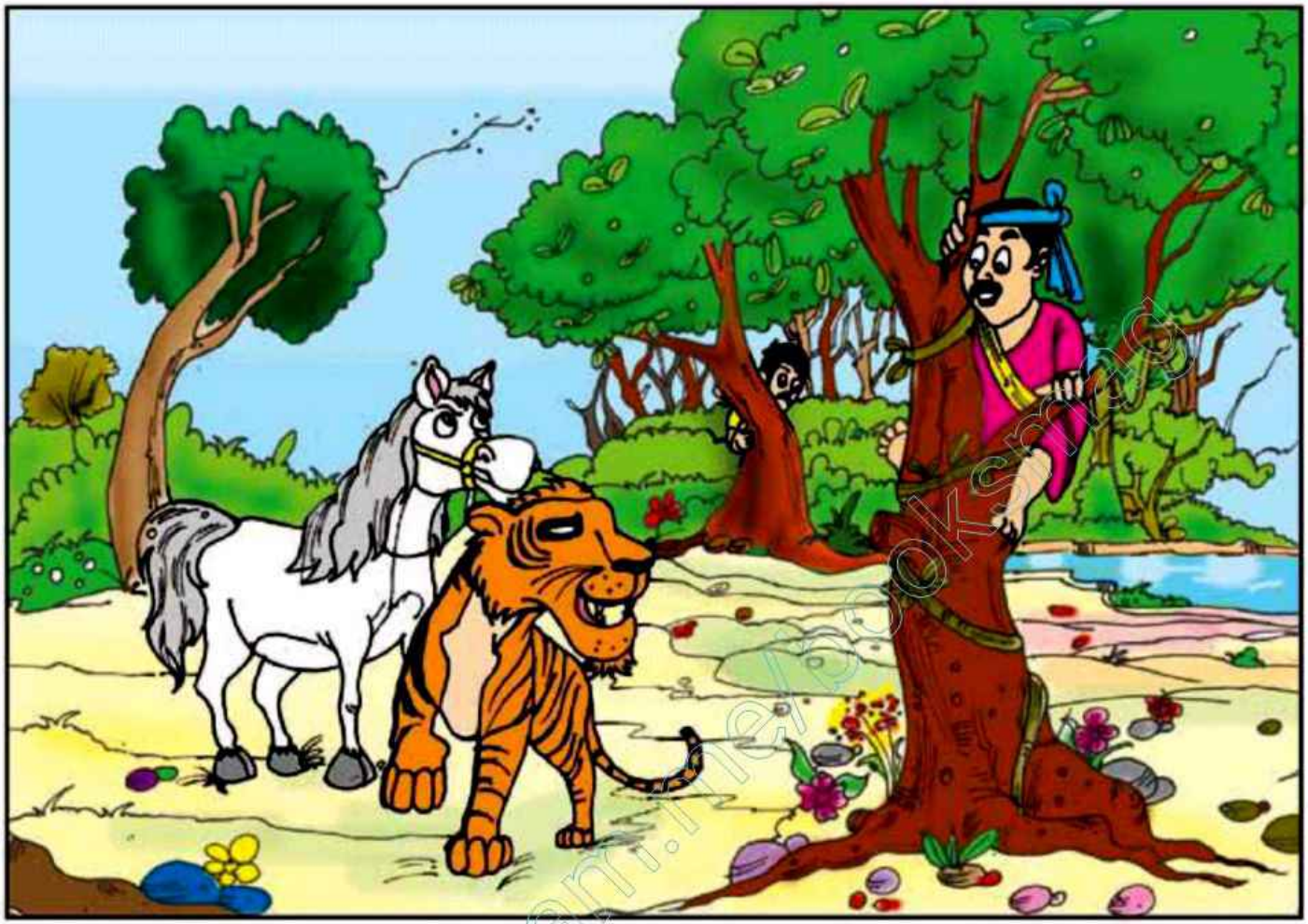

जाएगा।'' कल्लू और बढ़ई चल दिए। चलते-चलते दोनों पहुँच गए जहाँ घोड़ा चर रहा था। बढ़ई और कल्लू के पहुँचते ही वहाँ पर शेर भी आ गया। शेर को देखकर कल्लू तो झाड़ी में छिप गया और बढ़ई पेड़ पर चढ़ गया।

शेर ने कल्लू को झाड़ी में छिपते देख लिया था। उसने कल्लू से कहा, ''कल तो तू यह कह कर गया था कि मैं अब कभी इधर नहीं आऊँगा तो फिर तू इधर क्यों आया?''

कल्लू रोने लगा और बोला, ''अजी हुजूर, मैं तो आ भी नहीं रहा था लेकिन यह बढ़ई मुझे अपने साथ ले आया।'' तब शेर ने बढ़ई से पूछा, ''क्यों भाई, तुम यहाँ क्यों आए हो?''

बढ़ई बोला, ''हे जंगल के राजा। मैंने आपको कभी नहीं देखा था इसलिए मैं कल्लू को अपने साथ यहाँ लेकर आया हूँ। क्या आपने कभी ताँगा देखा है?''

शेर बोला, ''मैंने तो कभी ताँगा नहीं देखा। बताओ ताँगा कैसा होता है?'' तब बढ़ई ने शेर को बताया, ''ताँगा एक बहुत अच्छी गाड़ी होती है। आप उसमें बैठकर सवारी करेंगे तो आपको बहुत आनन्द आएगा। हे राजा! अगर आप मुझे आज्ञा दें तो मैं दो दिन में ताँगा बना कर आपको उसमें सवारी करा सकता हूँ।'' शेर ने आज्ञा दे दी। तब बढ़ई और कल्लू ने मिलकर दो दिन में ताँगा बना दिया और ताँगे की छत पर एक कठघरा बनाया।

दो दिन बाद शेर ने बढ़ई से पूछा, ''कहो भाई, ताँगा बना दिया?'' बढ़ई बोला, ''जी हुजूर।''

शेर बोला, ''दिखाओ, कहाँ है?''

बढ़ई ने शेर को ताँगा दिखाया और कहा, ''इसको तुम्हारा मित्र घोड़ा ही चलाएगा।''

यह सुनकर शेर बड़ा प्रसन्न हुआ और घोड़े को आज्ञा दे दी, ''हे मित्र, हम इस ताँगे में सवारी करना चाहते हैं इसलिए तुम इसमें जुत जाओ।'' यह सुनकर घोड़ा ताँगे में जुत गया। तब शेर ने बढ़ई से पूछा, ''मैं किधर बैठूँ।''

बढ़ई ने शेर से कहा, ''हमने आपके लिए ताँगे के ऊपर गद्दी बनाई है। हम नीचे बैठेंगे। आप ताँगे की छत पर गद्दी पर बैठिएगा।''

यह सुनकर शेर और भी प्रसन्न हो गया और कूद कर ताँगे की छत पर कटघरे में बैठ गया। तब बढ़ई ने कटघरे का दरवाज़ा बंद कर दिया और कल्लू से कहा, ''ताँगा चलाओ।''

अपनी बुद्धिमानी से बढ़ई शेर को कैद करके और घोड़े को ताँगे में जोत कर घर ले आया। ❑❑❑

https://telegram.me/bookstube

# दिमाग लड़ाइये – अपराधी पकड़वाइये

सुखवंत

हमेशा की तरह इंस्पैक्टर भोंदूमल को एक खतरनाक अपराधी की तलाश है। क्या आप नीचे दी जा रहीं तस्वीरों में से असली अपराधी को खोजने में इंस्पैक्टर भोंदूमल की मदद करेंगे? *(उत्तर इसी अंक में है।)*

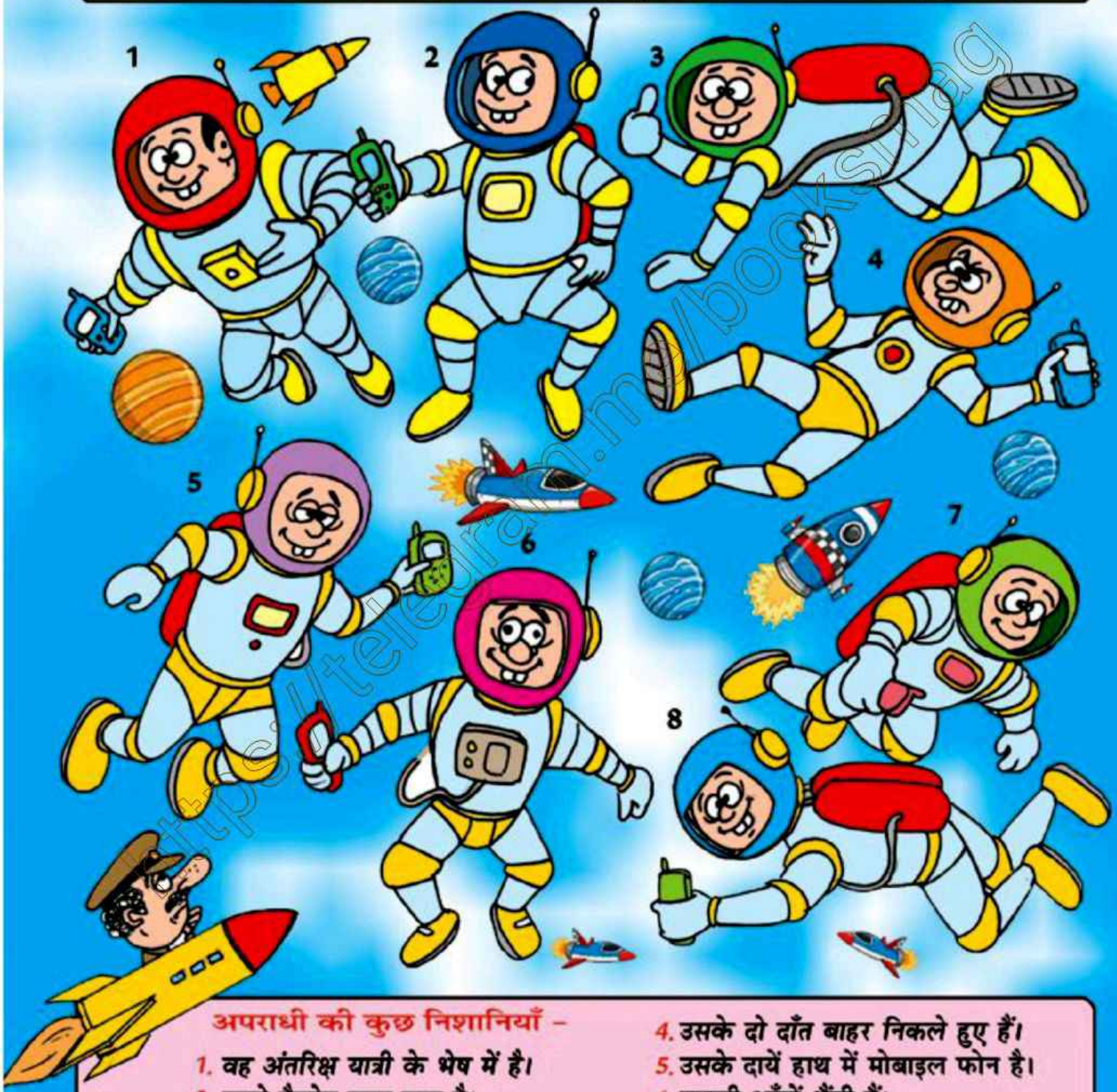


https://telegram.me/booksnag

**अपराधी की कुछ निशानियाँ –**

1. वह अंतरिक्ष यात्री के भेष में है।
2. उसने हैल्मेट पहन रखा है।
3. वह मुस्कुरा रहा है।
4. उसके दो दाँत बाहर निकले हुए हैं।
5. उसके दायें हाथ में मोबाइल फोन है।
6. उसकी आँखें भैंगी हैं।
7. उसके हैल्मेट में बायें तरफ एन्टीना है।

# मूर्खिस्तान का बौड़मदास

● अनस आलम

मूर्खिस्तान के मूर्खियाना शहर में रहने वाले बौड़मदास यूँ तो बहुत अच्छे आदमी हैं। उनका घर बहुत ही आधुनिक ढंग का है। घर में बढ़िया फर्नीचर है, टीवी है, फ्रिज है, बच्चे पब्लिक स्कूल में पढ़ते हैं, कार भी लेटेस्ट मॉडल की है, मगर उन्हें पुरानी चीज़ें ख़रीदने का इतना शौक है कि लोग उन्हें पीठ पीछे कबाड़ीदास कहने लगे हैं। यहाँ तक कि हमारे मोहल्ले में जितने भी कबाड़ी फेरी लगाने आते हैं वो भी उनकी आदत से परिचित हैं। सो गली-मोहल्ले से जो भी कूड़ाकबाड़ ख़रीदते हैं, उसे एक बार बौड़मदास जी को ज़रूर दिखा लेते हैं यह सोचकर कि जो माल हाथों-हाथ यहीं बिक जाये सो भला।

एक बार उन्होंने साइकिल ख़रीदी। उसमें घंटी के सिवा हर चीज़ बजती थी। जब वह साइकिल ख़रीद कर सड़क पर आए तो वह आगे चलने से ना-नुकूर करने लगी। बौड़मदासजी ने तुरंत उसमें नये टायर-ट्यूब डलवाने का फैसला किया, मगर तभी उनके दिमाग में एक नया विचार आया कि पुरानी साइकिल में नये टायर-ट्यूब डलवाने से साइकिल की शो बिगड़ जायेगी। लिहाजा नये टायर-ट्यूब डलवाने का इरादा छोड़कर उन्होंने उसमें पुराने टायर-ट्यूब डलवा दिये।

जब वो साइकिल पर बैठ कर चले, तो साइकिल के दोनों चिमटे, पहिये के साथ रगड़ खाते ही खटाक-खटाक करके चीखने लगे। उन्हें ऐसा लगा जैसे पीछे कोई बुलडोज़र चला आ रहा हो, जिसके ब्रेक फेल हो चुके हों।

इस साइकिल की एक खूबी और थी। इसका हेंडल जंगली सूअर की तरह केवल नाक की सीध में ही चलता था। चाहे कितने ही लोग उस पर लद जाओ, कितना भी खींचो, उसे मुड़ना कतई गवारा नहीं था। लिहाजा जैसे ही बौड़मदासजी ने गली के मोड़ पर आकर अपने घर की तरफ साइकिल मोड़नी चाही, उसने मुड़ने से इनकार कर दिया और बौड़मदासजी सीधे दीवार से जा टकराये।

खैर, किसी तरह अपने हाथ-पैरों की धूल झाड़ते, माथे पर निकल आये ख़ून को पोंछते उठे और फिर जैसे-तैसे घसीट कर उसे घर ले आये।

अगले दिन उन्होंने तय किया कि साइकिल के हेंडल को ठीक करा लिया जाये। मगर जब साइकिल बाहर ले जाने के लिए उसका ताला खोलना चाहा, तो उसने खुलने से इनकार कर दिया। उन्होंने तीन-चार बार चाबी घुमाने की कोशिश की मगर वह घूमी ही नहीं। आखिर तंग आकर उन्होंने चाबी बाहर निकालने का फैसला कर लिया। मगर यह क्या, चाबी बाहर ही नहीं निकली। एक बार, दो बार, तीन बार... सैकड़ों बार खींचा, मगर वह टस से मस ही नहीं हुई। बौड़मदासजी को चाबी पर बेइंतहा गुस्सा आया। वो घर के भीतर से संड़ासी उठा लाये। संड़ासी से पकड़कर ज्यों ही चाबी को घुमाया-'खटाक' की आवाज़ आई और चाबी ताले से बाहर आ गई।

बौड़मदासजी को लगा ताला खुल गया। वो प्रसन्न हो गये। मगर अगले ही क्षण उनके चेहरे पर मुर्दनी छा गई क्योंकि हुआ यह था कि चाबी का आधा हिस्सा टूट कर ताले में ही फँस गया था, आधा संड़ासी के साथ बाहर आ गया था और ताला पहले की तरह ज्यों का त्यों बंद था।

आखिर वो साइकिल को सिर पर ढोकर तालों की चाबी बनाने वाले के पास ले गये। उसने चाबी बनाने से तो इनकार कर दिया, पर नये ताले की कीमत बराबर रुपये लेकर, उस बाबा आदम के ज़माने के ताले को तोड़ने पर ज़रूर राजी हो गया।

वहाँ से जैसे ही वो साइकिल वापस ले कर लौटे, रास्ते में

https://telegram.me/boalong

ही उन्हें एक ज़रूरी काम याद आ गया। अब समस्या थी कि साइकिल को कहाँ छोड़ें? अगर स्टैंड पर भी रखें तो वह बिना ताले के नहीं रखेगा। लिहाज़ा उन्होंने साइकिल में नया ताला लगवाने का फैसला किया और दुकान पर जा पहुँचे। उनकी साइकिल देखकर दुकानदार बोला, ''बाबूजी, इसमें ताला लगाने की ज़रूरत ही नहीं। अगर आप इसे बीच चौराहे पर छोड़कर महीने भर के लिये भी कहीं घूमने चले जायें, तो इसे कोई नहीं उठायेगा। वापिसी में आपको यह साइकिल वहीं मिलेगी।''

उसकी बात सुनकर बौड़मदासजी ने पूछा, ''क्यों भाई इसमें ऐसी क्या बात है? क्या तुम इस साइकिल को पहचानते हो?''

वह बोला, ''हाँ बाबूजी, इस साइकिल को अब से सवा सौ साल पहले मेरे पिताजी के पिताजी के पिताजी ने बेचा था। तब से यह बार-बार बिकते-बिकते इस शहर के सभी घरों में जा चुकी है। केवल आप बचे थे जिसने अब तक इसे नहीं खरीदा था, सो अब आप भी खरीद ही चुके हैं। अब भला जिसने एक बार इससे बड़ी मुश्किल से जान छुड़ाई हो, वह इसे दोबारा क्यों खरीदने लगा?''

दुकानदार से साइकिल का इतिहास जानकर बौड़मदासजी का चेहरा खिल गया। वो सोचने लगे, ''अच्छा हुआ सौ रुपये बच गये।'' और उसी की दुकान के बाहर साइकिल छोड़कर अपने काम पर निकल गये और वहाँ से घर आ गये।

तकरीबन एक सप्ताह बाद उन्हें साइकिल की याद आई। वो उस दुकान पर पहुँचे। साइकिल बदस्तूर वहाँ मौजूद थी, सो उसे रिक्शे में डालकर घर ले आये और अपने अजायबघर में सजा कर रख दिया। आज उसी साइकिल को देखने बाहर से लोग उनके घर आते हैं। ❑❑❑

https://t.me/pathagar

चेतावनी–मूर्खिस्तान में अक्ल का इस्तेमाल करना कानूनन जुर्म है।
मूर्खिस्तान™
सारे जहाँ से महान, हमारा प्यारा मूर्खिस्तान।
राष्ट्रीय ध्वज
राष्ट्रीय खेल
राष्ट्रीय गीत
राष्ट्रीय पशु
राष्ट्रीय फूल
राष्ट्रीय मानचिह्न
राष्ट्रीय पर्व– मूर्ख दिवस, 32 जुलाई
राष्ट्रपति
सुरेमंत

मूर्खिस्तान™
कौन
किसको क्या
गिफ्ट देगा

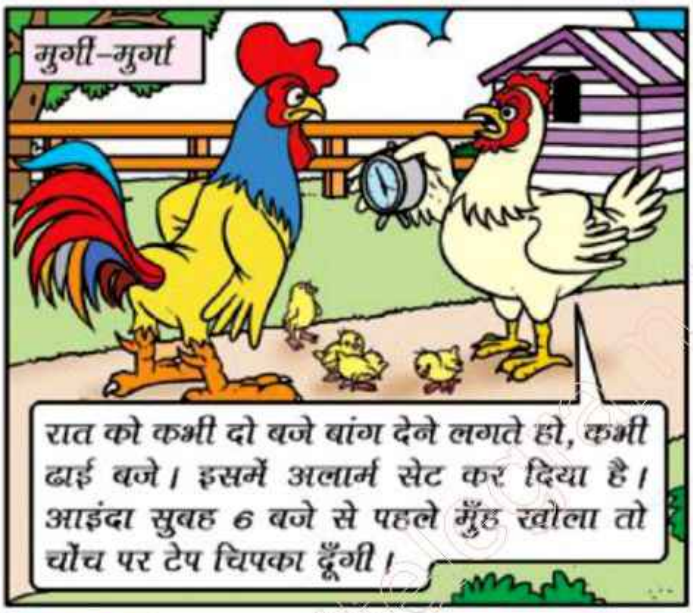
मुर्गी–मुर्गा
रात को कभी दो बजे बांग देने लगते हो, कभी ढाई बजे। इसमें अलार्म सेट कर दिया है। आइंदा सुबह 6 बजे से पहले मुँह खोला तो चोंच पर टेप चिपका दूँगी।

नाग–सपेरा
इस पेन ड्राइव में लेटेस्ट आइटम नंबर्स डाउनलोड कर दिए हैं। अब घिसीपिटी नागिन धुन बजाई तो बीन तोड़ कर हाथ में दे दूँगा।

गधा–धोबी
हम नगर पालिका से बोझा उठाने का लाईसेंस बनवा लाया हूँ। तीस किलो से ऊपर कपड़े लादे तो हम नहीं चलूँगा, हमरी दुलत्ती चलेगी।

शेर–रिंग मास्टर
सर जी, मैं अपणी शेरनी इक महीने वास्ते गिफ्ट में दे रहा हूँ। ओजी ये बताएगी कोड़े के अलावा कौन–कौन से तरीकों से शेर को काबू में किया जा सकता है।

http://freeamarchitrakatha.blogspot.com

ये किस्सा मूर्खिस्तान के मूर्ख नगर का है। मेरे बचपन की गर्मी की छुट्टियों और भाई साहब के बीच काफी गहरा सम्बन्ध रहा है। यूँ तो वह हमारे फुफेरे भाई थे, मगर हमारे खानदान में जितने बच्चे थे, सबके ऊपर गहरी धाक थी।

वैसे तो भाई साहब अभी खुद ही बच्चे थे। मैं बारह साल का था और वह सत्रह साल के थे, बाकी लड़कों से भी वह ऐसे ही थोड़ा-बहुत बड़े थे, मगर क्या रौब था उनका। ऐसा रौब तो मैंने बड़े-बड़ों का भी चलते नहीं देखा।

हमारी गिनती उस ज़माने के सबसे शरारती लड़कों में होती थी। जिधर भी मैं अपनी मूर्खिस्तानी मण्डली के साथ गुज़र जाता था, लोग अपने-अपने घरों का ताला लगाकर भाग जाते थे और हमारे माँ-बाप का ख्याल था कि अगर दुनिया में कोई हमें सुधार सकता है, तो वह भाई साहब हैं। इसीलिये गर्मी की छुट्टियाँ शुरू होते ही हमें बुआ जी के गाँव मूर्खाबाद भेज दिया जाता था, जहाँ भाई साहब अपने मोटे शीशों वाले चश्मे के साथ पहले से ही मौजूद होते थे।

जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, मैंने कभी उन्हें हँसते नहीं देखा। हमारी नामौजूदगी में वह कभी हँसे या नहीं हमें नहीं मालूम, मगर हम तो कसम खाकर कह सकते हैं कि हमने नहीं देखा। जब कभी वह बड़े बुजुर्गों के बीच बैठे होते थे और कोई बुजुर्ग बहुत ज्यादा हँसी वाली बात कह देता था, तो केवल औपचारिकता वश भाई साहब के होंठ मुस्कराने के अन्दाज़ में ज़रा-सा फैल जाते थे।

साफ लगता था कि वह अपने दिल पर बहुत बड़ा-सा पत्थर रखकर मुस्कराने की चेष्टा कर रहे हैं।

कभी-कभी मेरा जी चाहता था कि भाई साहब को पकड़कर खूब गुदगुदाऊँ, इतना गुदगुदाऊँ कि बस क्या बताऊँ और देखूँ कि वह थोड़ा-बहुत हँसते हैं या नहीं। मगर मेरे दिल का यह अरमान दिल में ही मचलकर रह जाता था।

भाई साहब को उनका मोटे-मोटे शीशे वाला चश्मा और भी गम्भीरता प्रदान करता था। मूर्खिस्तान के सारे बच्चों को वह उन शीशों के पीछे से शक़ भरे अन्दाज में घूरते रहते थे।

मैंने एक बार डरते-डरते बड़ी बुआ जी से पूछा - ''क्या यह सच है कि भाई साहब पैदा होने के बाद से आज तक नहीं हँसे ?''

बुआ गर्व से बोलीं - ''मुझे याद पड़ता है कि जब वह छः सात महीने के थे, तो कभी-कभार चारपाई के नीचे बैठकर हँस लिया करते थे। मगर उसके बाद मैंने उन्हें यह काम करते नहीं देखा।''

हमें ताज्जुब होता है कि मूर्खिस्तान जैसी जगह पर रहने के

https://t.me/pdfbooksfree

बावजूद भाई साहब बिना हँसे कैसे रह लेते हैं। इधर यह हाल था कि दिन में अगर सौ-पचास बार कहकहा न लगाओ, तो लगता था कि खाना ही हज़म नहीं हुआ।

एक बार मेरे छोटे भाई बिट्टू ने न जाने कैसे हिम्मत करके भाई साहब से पूछ लिया - ''जब आपको हँसी आती है तो आप क्या करते हैं?''

भाई साहब ने बताया - ''अगर डॉक्टर ही हँसने को बता दे तो आदमी को किसी घड़े के पीछे मुँह डालकर हँस लेना चाहिये और ऐसा करते हुये इस बात का पूरा ख्याल रखना चाहिए कि कोई देख तो नहीं रहा। वैसे मेरा ख्याल है ऐसी बेहूदी राय मूर्खिस्तान का कोई डॉक्टर नहीं देगा। और देखो, भविष्य में ऐसे गन्दे सवाल मुझसे मत करना।''

भाई साहब के होने के बावजूद हमें, भी यानि मैं और मेरे छोटे भाई बिट्टू को बुआ जी के गाँव मूर्खाबाद में गर्मी की छुट्टियाँ गुज़ारना अच्छा लगता था। बुआ के गाँव में आम के जितने बाग थे, उतने बाग हमने किसी और गाँव में नहीं देखे थे। यहाँ के कच्चे आमों में जो स्वाद था, वैसा स्वाद तो दूसरी जगहों के पके आमों में भी नहीं मिलता था।

वहाँ भी हमने अपनी एक मूर्खिस्तानी मण्डली तैयार कर रखी थी, जो छुट्टियाँ शुरू होते ही हमारे आने का इन्तज़ार करने लगती थी। उस मण्डली में एक से एक उस्ताद थे। वो गाँव के सारे रखवालों की नस-नस पहचानते थे। किसी रखवाले की आँख में किस तरह की धूल झोंककर उसके बाग से ज्यादा से ज्यादा आमों पर हाथ साफ किया जाये, यह उन्हें खूब मालूम था। गर्मी की उन दोपहरियों में हमारा अधिकाँश समय एक बाग से दूसरे बाग पर धावा बोलते गुज़रता था और भाई साहब अपना अधिकाँश समय उस चिलचिलाती धूप में हमें तलाश करते हुये बिताते थे।

मूर्खाबाद के सूखे वीरान खेतों में दूर-दूर तक धूप की लहरें पानी की तरह झप-झप करती रहती थीं और हम जलते हुये, धूल भरे रास्तों पर जलते पैरों को थोड़ा-सा आराम देने की

## पहले देखिए मेरे नंबर- फिर कीजिए मुझे कलर

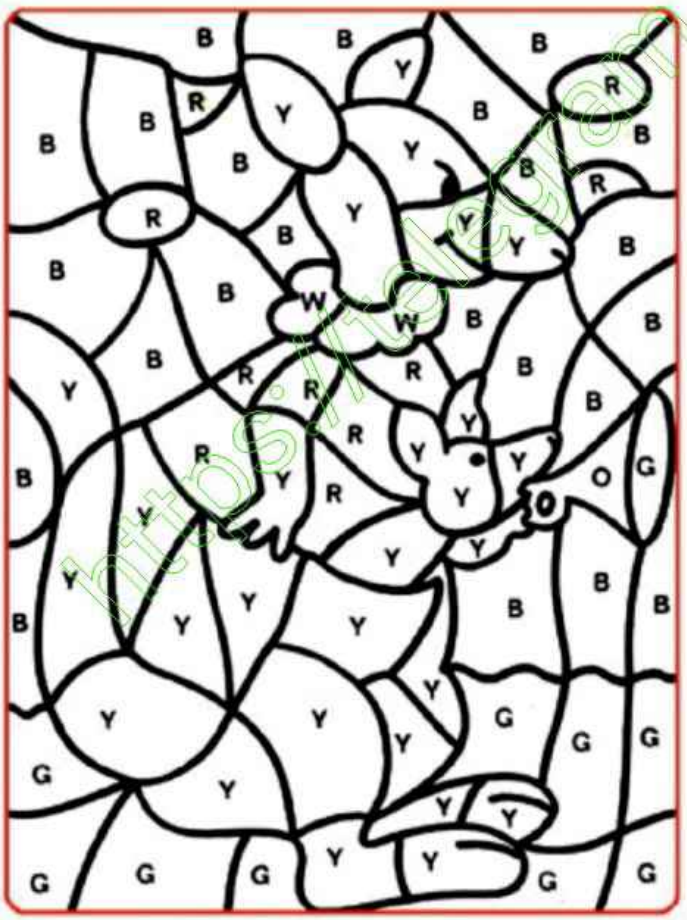


## क्या यह भी मज़ाक था

पिछले दिनों डचलैंड के मशहूर डॉक्टर अलबर्ट हरमैन की मृत्यु हुई तो मालूम हुआ कि वह अपनी विरासत में अपनी लिखी हुई एक पुस्तक की पाण्डुलिपी भी छोड़ गए हैं। पुस्तक का नाम था - स्वास्थ्य-रक्षा के अनमोल रहस्य। पूरी पुस्तक एक पैकेट में बंद करके सील की हुई थी। उसी हालत में उसकी नीलामी हुई। सबसे अधिक बोली लगी दस हज़ार डॉलर।

ख़रीदने वाले ने रकम अदा करके पैकेट को खोला और पुस्तक के पन्नों पर बड़ी उत्सुकता के साथ नज़र दौड़ाई। मालूम हुआ कि डॉक्टर हरमैन ने अपनी जिंदगी में तो सैकड़ों बार मज़ाक किया ही था, अब वह मरते-मरते भी मज़ाक कर गए थे। छः सौ पृष्ठों की उस पुस्तक के सारे पन्ने खाली थे, सिवाय पहले पन्ने के। उस पर लिखा हुआ था - आप अपने सिर को ठण्डा रखिए और पैरों को गरम। इस तरह आप अच्छे से अच्छे डॉक्टर को भिखारी बना सकते हैं।

https://t.me/pw_bookshelf

## नन्हे-मुन्नों के लिये विशेष:

# रखिये सही क्रम दूर कीजिये भ्रम

1

2

3

4

5

6

7

1- स्वामी भक्त
2- मूर्खता
3- कायरता
4- नकलची
5- साहस
6- घृणा
7- विशालता

(उत्तर इसी अंक में है।)

कोशिश में तेज़-तेज़ चलते हुये इस बात पर बहस करते थे कि अब किसके बाग में जाना ठीक होगा।

साथ ही मुझे अपने भाई साहब को भी देखते रहना पड़ता था कि कहीं वो मेरे पीछे तो नहीं आ रहे हैं।

बागों के वो रखवाले भी अजीब थे। वो सब दावा किया करते थे कि अगर वो अपनी मूँछ को थोड़ा ज़ोर लगा के मरोड़ दें, तो बरसते हुये बादल पानी छोड़कर भाग जायें। हम सब जानते थे कि वो हमें डराने के लिये ऐसा कहते हैं, वरना कई तो ऐसे रखवाले थे कि जिनकी मूँछ ही नहीं थी।

वैसे हम लोग किसी से नहीं डरते थे। न डरने का ही अक्सर यह नतीजा होता था कि हम पकड़े जाते थे और गर्दन से दबोचकर भाई साहब के सामने ले जाये जाते थे। अब महसूस होता है कि बागों के वो सारे मूर्खिस्तानी रखवाले बीरबल से भी बड़े मसखरे थे। हमारी मूर्ख मण्डली को दूर से ही देखकर वो हा-हा-हा करने लगते थे, हालाँकि वो जानते थे कि जब हम आ ही रहे हैं तो उनको डराने-धमकाने से खाली हाथ नहीं लौटेंगे। बाग की रखवाली के लिये वो जो मूर्खिस्तानी कुत्ते पालते थे, उन्हें देखकर हँसी आती थी। चार चूहे मिल जायें तो उन्हें दौड़ा लें। उनसे भला हम क्यों डरते।

बुआ जी के गाँव मूर्खाबाद हम रेलगाड़ी से जाते थे। भाई साहब ही हमें गाँव के छोटे-से स्टेशन पर लेने आते थे। स्टेशन पर ही वह हमें चेतावनी देते थे। "बागों में खूब आम हैं इस साल। मगर खबरदार, तुम दोनों घर से बाहर नहीं निकलोगे। और निकलोगे तो सिर्फ शाम को -हमारे साथ।"

और फिर इस चेतावनी को इस तरह दोहराते थे, जब तक कि हमारी छुट्टियाँ खत्म नहीं हो जाती थीं। हर सुबह व हमसे कहते थे - "कल तो माफ कर दिया था। आज ख़बरदार बाहर नहीं जाओगे।"

दोपहर होती तो हम दोनों को सुलाने की कोशिश शुरू हो जाती । अंधेरे में दो चारपाइयाँ होतीं। एक पर भाई साहब लेटते दूसरी पर मुझे और बिट्टू को लेटने का हुक्म मिलता। और उसके बाद यह उम्मीद की जाती कि हम तब तक सोते रहें, जब तक कि पाँच न बज जायें। लेकिन होता यह था कि हम चुपचाप दम साधे लेटे रहते और जब भाई साहब के खर्राटे अच्छी तरह गूँजने लगते तो हम धीरे से उठते और घर से बाहर निकलकर मूर्ख मण्डली से मिलने चल पड़ते।

कभी-कभी भाई साहब पीछे से आकर हमें घर के बाहर ही पकड़ लेते और हम अपने आपको कोसते हुये दोबारा चारपाई पर पहुँच जाते कि थोड़ी देर अगर और रुक गये होते तो क्या हर्ज़ था। लेकिन ज्यादातर भाई साहब की आँख तब खुलती, जब हम गाँव से काफी दूर कहीं खेतों में पहुँच गये होते और

https://telegram.me/pathagar

दो-चार बागों पर हमारा धावा भी हो चुका होता।

बहुत देर बाद ही वह हमें ढूँढ पाते।

और जब हम पकड़ लिये जाते, तो हमारी जेबों की तलाशी शुरू होती कि कहाँ कितने आम हमने छुपाये हुये हैं। भाई साहब सारे आम छीनकर अपनी जेबों में भरते और फिर हमें पकड़कर वापस घर ले आते।

यह रोज़ की बात थी। रोज़ हम पकड़े जाते, रोज़ हमारी जेबों के आम उनकी जेब में जा पहुँचते। न हम हार मानते, न वह हारते। उन्हें चकमा देने के हम रोज़ नये तरीके ढूँढते और भाई साहब बड़ी गम्भीरता से हर तरीके को नाकाम बना देते। एक दिन हमें न जाने क्यों भाई साहब पर दया हो आई।

हमने सोचा कि यह तो बड़ी ग़लत बात है कि भाई साहब जैसा शरीफ आदमी हमारी वजह से रोज़-रोज़ लू और गर्मी में मारा-मारा फिरे, और फिर भी हम न सुधरें। अत: एक दिन हमने फैसला किया कि आज हम भागने की कोशिश नहीं करेंगे। अत: उस दिन जब हम अपनी चारपाई पर लिटाये गये तो उठे ही नहीं। भाई साहब ने खर्राटे लेना शुरू कर दिया।

जब वह काफी देर तक खर्राटे ले चुके और हम फिर भी न उठे तो भाई साहब के खर्राटे रुक गये। वह जागकर धीरे से बोले - ''क्यों लड़कों, आज नहीं जाओगे क्या?''

मैंने शर्मिन्दा होकर कहा - ''नहीं, भाई साहब आपको मेरी वजह से रोज़-रोज़ परेशान होना पड़ता है।''

उन्होंने कुछ देर चुप रहने के बाद और भी धीरे से यूँ कहा जैसे गाना गा रहे हों - ''मेरी चिन्ता मत करो। तुम्हें जाना हो तो जाओ, हम तो पकड़ ही लेंगे।''

जब हम अगले दिन भी घर में ही पड़े रहे, तो भाई साहब बेचैन नज़र आने लगे। उससे भी अगले दिन हमने बाहर जाने की जब कोई कोशिश न दिखाई तो उनकी बेचैनी हद से ज्यादा बढ़ गई। दोपहर को खर्राटे मारते-मारते अचानक वह हड़बड़ाकर उठ बैठे और हमें डाँटते हुये बोले - ''अबे, अगर घर में ही पड़े रहना था तो यहाँ क्यों आये थे, झक मारने? दो दिन हो गये आम चखे हुये।''

हम घबराकर चारपाई से उतरते हुये बोले - ''समझ गया भाई साहब, सब समझ गया।'' ❑❑❑

## लल्लूलाल के तर्क कुतर्क

बरसों पहले मूर्खिस्तान में महायुद्ध चल रहा था। देश-भक्त नौजवान सेना में भर्ती हो रहे थे। ऐसे समय एक नवयुवक ने लल्लूलाल से कहा, ''क्यों यार, तुम क्यों नहीं भर्ती होते सेना में?''

लल्लूलाल ने कहा, ''मैं सेना में भर्ती नहीं हो सकता। इसके दो कारण है।''

''वह क्या?'' उसके मित्र ने पूछा।

''यदि मैं सेना में भर्ती हो गया तो या तो सरकार मुझे सीमा पर लड़ने के लिए भेजेगी या मुझे शस्त्र सप्लाई हेतु नियुक्त करेगी। खैर शस्त्र सप्लाई भी करूँगा तो ठीक रहेगा, लेकिन सीमा पर भेजा गया तो उसके दो कारण हैं।'' लल्लूलाल ने कहा - ''पहला यह कि मोर्चे पर या तो मैं बम से मारा जाऊँगा अथवा शत्रु मुझे गोली से उड़ा देगा। खैर, बम से मारा गया तो कोई बात नहीं, पर यदि गोली से मारा गया तो उसके भी दो कारण हैं।''

''वो क्या?'' मित्र ने पूछा।

''मारने पर दुश्मन मुझे गाड़ देगा या फेंक देगा, गाड़ देगा तब तो ठीक रहेगा, यदि फेंकेगा तो उसके दो कारण हैं। वह यह कि फेंकने के बाद या तो चील-कौवे खा लेंगे अथवा मेरे शरीर की लुगदी बन जाएगी। चील-कौवे खाएँगे तब तो अच्छी बात है पर यदि लुगदी बनाई गई तो उसके भी दो कारण हैं।''

मित्र ने पूछा - ''वह क्या?''

लल्लूलाल ने कहा - ''लुगदी बनने पर या तो मेरी खाद बन जाएगी या साबुन बन जाएगा। खाद बनेगी तब तो ठीक है लेकिन साबुन बन गया तो उसके दो कारण हैं।''

मित्र ने पूछा - ''वह क्या?''

लल्लूलाल ने कहा - ''साबुन बनने पर या तो मुझसे इंसान नहायेंगे या जानवर। खैर इंसान नहायेगा तब तो ठीक है, लेकिन यदि जानवर नहायेगा तब तो मैं शर्म से मर ही जाऊँगा। बस इसी कारण से मैं सेना में भर्ती नहीं हो सकता।'' ❑❑❑

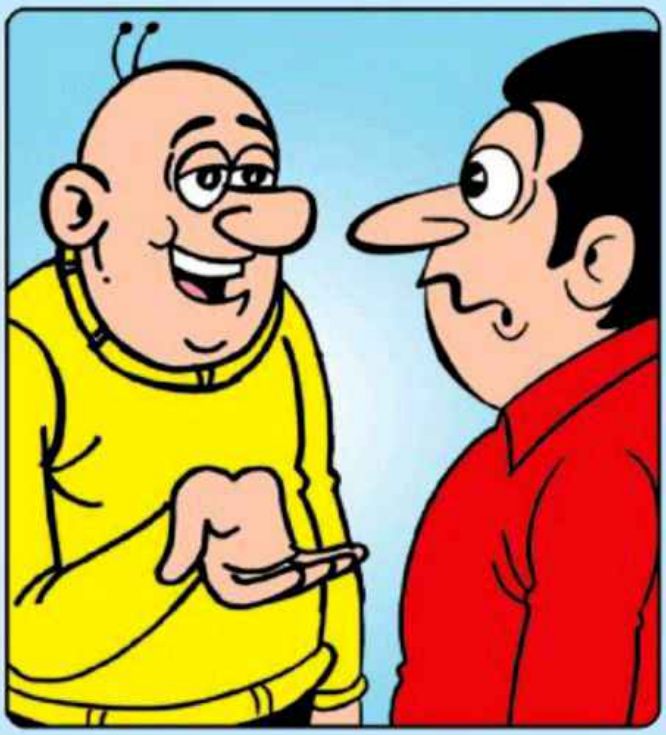

https://t.me/pboard

# मूर्खिस्तान का खेल

सम्वत्

## नन्हे सम्राट

यह खेल-साँप सीढ़ी की तरह खेला जायेगा। आपके प्रिय पात्र जहाँ ऊपर की तरफ जा रहे हैं, वहाँ आपको भी ऊपर जाना है। तथा जहाँ वो नीचे आ रहे हैं, वहीं आपको भी नीचे आना है।

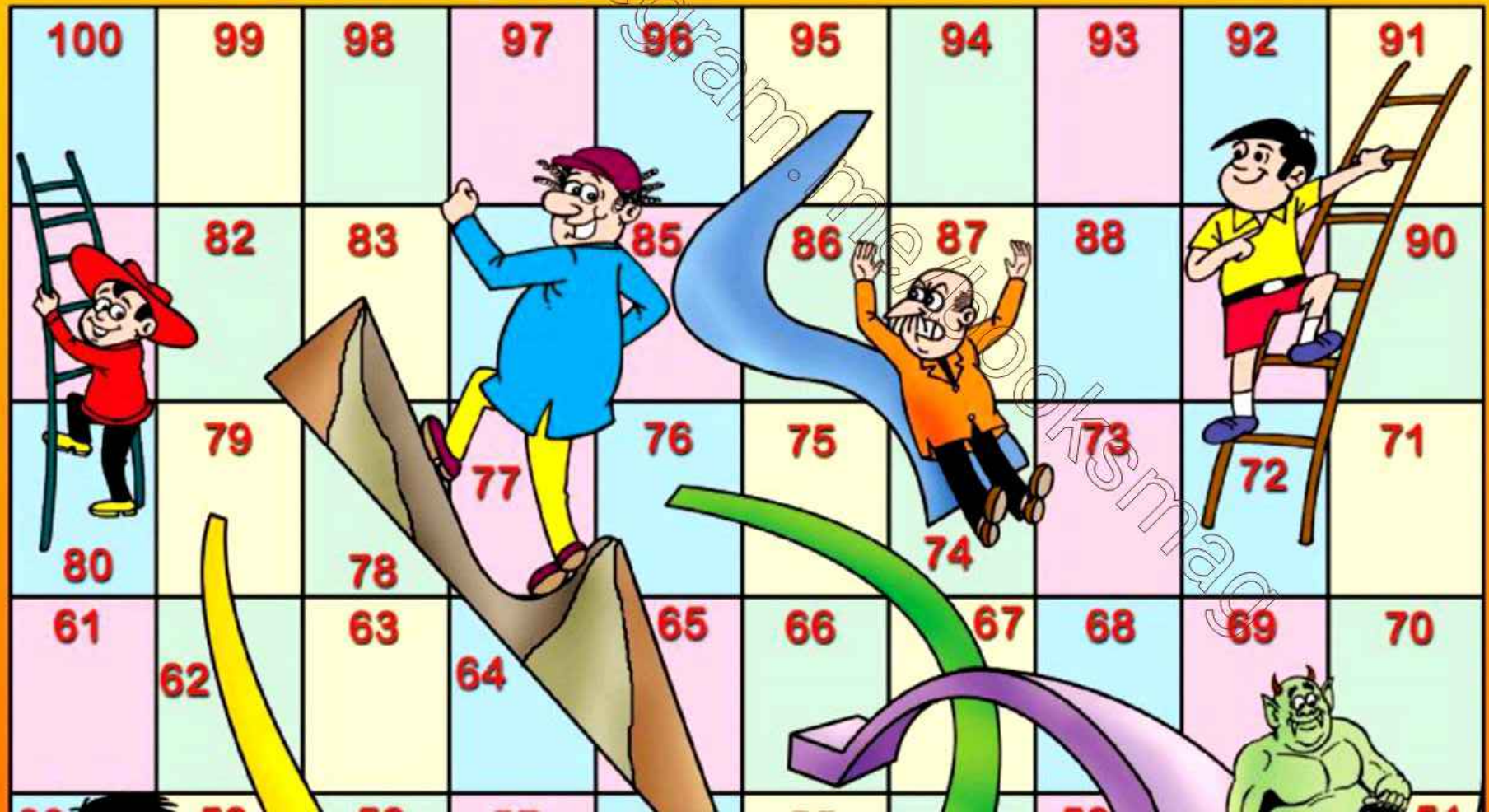


https://t.me/grammarbookmag

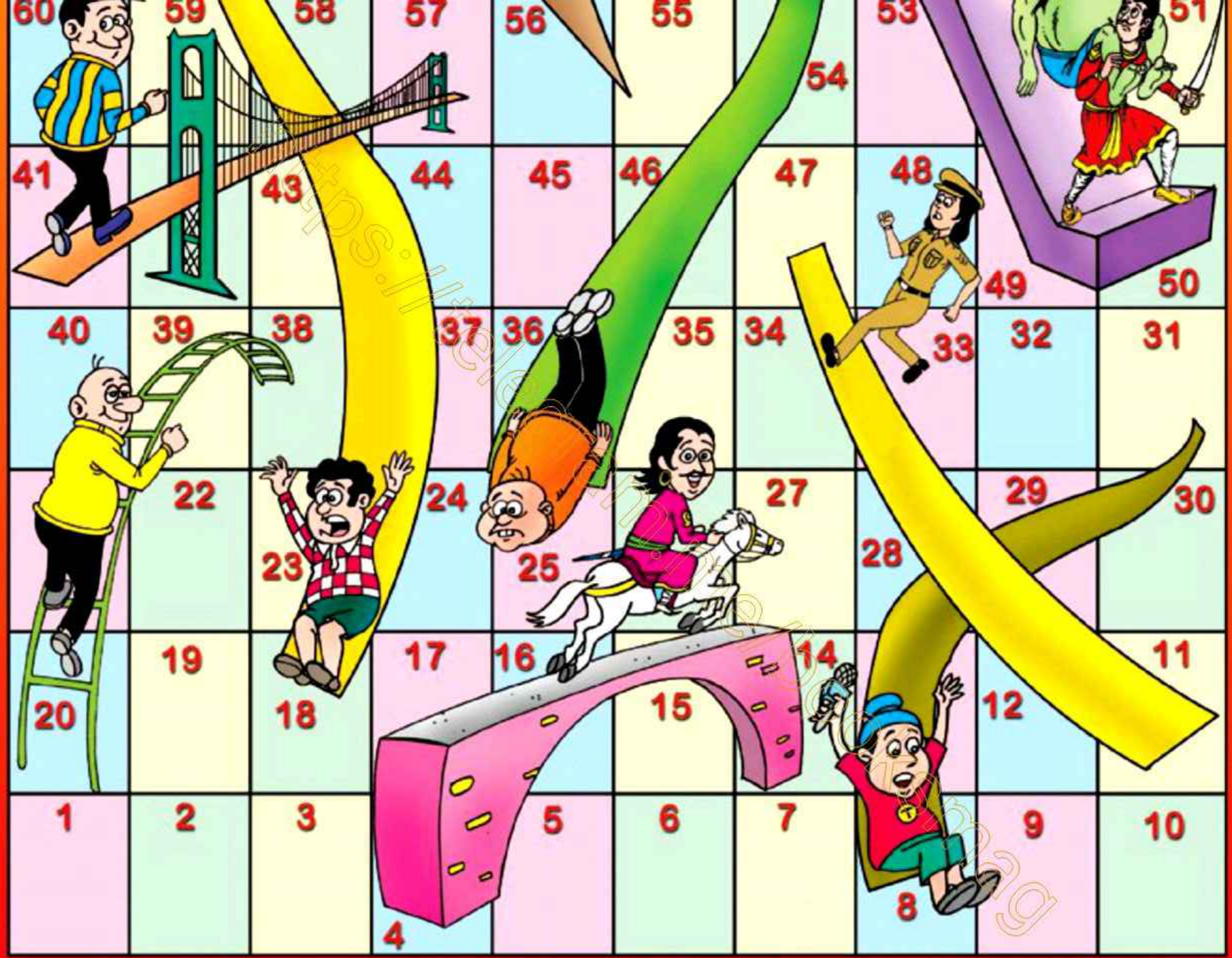
60
59
58
57
56
55
54
53
51
41
43
44
45
46
47
48
49
50
40
39
38
37
36
35
34
33
32
31
22
24
27
29
30
23
25
28
19
17
16
14
11
20
18
15
12
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

चेतावनी–मूर्खिस्तान में अक्ल का इस्तेमाल करना कानूनन जुर्म है।

# मूर्खिस्तान™

सुखवंत

31 वर्ष पूर्व, नन्हे सम्राट के पहले अंक में छपे मूर्खिस्तान का एक पृष्ठ।

1 प्रश्न:
अधिकतर लोगों की आंखों की पुतलियां काली होती हैं और कुछ लोगों की नीले रंग की होती हैं। बताइये उनकी नीली पुतलियां क्यों होती हैं?

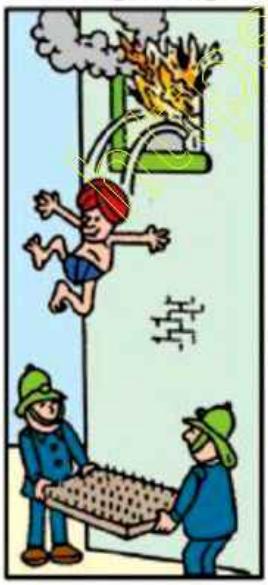

उत्तर: 1–देखने के लिए।
2–हवा से बातें करना।

वृक्ष कथा:

# मूर्खिस्तान का किस्सा

● निक्कू सिंह

*नोट : पिछले अंक की कथा 'जय विजय' का अंतिम भाग अगले अंक में पढ़ें।*

शहजादा सलीम जैसे ही तिलस्मी नदी का पानी पीने के लिए झुका कि पीछे से आवाज आई – ''शहजादे इस नदी का पानी मत पीना।''

''क्यों न पीयूँ पानी, तेरा बाप मेरे लिये मिनरल वॉटर छोड़ कर गया है क्या?'' शहजादा गुस्से से बोला।

इस पर फिर वही आवाज आई, ''अरे शहजादे क्या बात है.... इतना नाराज क्यों हो?''

''अमाँ नाराज न होऊँ तो और क्या करूँ। नन्हे सम्राट को छपते हुए पूरे इकत्तीस साल हो गए हैं तब से प्यासा भटक रहा हूँ। सैकड़ों पेड़ दोबारा इंसान बन कर यहाँ से जा चुके हैं... उनमें से एक भी बंदा मुझसे पूछने नहीं आया कि मैंने पानी पिया कि नहीं। सब एवई शुक्रिया कर के फूट लिये।''

https://t.me/bookstag

''सॉरी यार, ये तो बड़ी नाइंसाफी वाली बात है। पर एक बात है, तू है बड़ा नेक दिल इंसान। तुझसे दूसरों का दुख देखा नहीं जाता।''

''बस... तुम लोग इसी तरह की चिकनी-चुपड़ी बातें कर-कर के मेरी वॉट लगाते रहो।''

शहजादा रूआँसा होकर बोला - ''मुझ पर न नन्हे सम्राट के दीवान साहब को तरस आता है न सुखवंत को। पिछले इकत्तीस सालों से जंगल में फँसा रखा है। कहते हैं तुम्हारी कहानियाँ पाठकों को बहुत अच्छी लगती हैं।''

''ये बात तो है शहजादे। तुम वाकई नन्हे सम्राट की जान हो।''

''बस यही कह-कह कर जान ले लो मेरी।'' शहजादा तनिक नाराज होकर बोला।

''गुस्सा थूक दो उस्ताद और मुझे दोबारा इंसान बनाने की कोशिश करो।'' वृक्ष शहजादे को याद दिलाता हुआ बोला।

''मैंने लोगों की भलाई करने के लिए अगर माँ की कसम न खाई होती तो कब का चला गया होता। खैर, बताओ, तुम दोबारा इंसान कैसे बन सकते हो?''

https://telegram.me/boomag

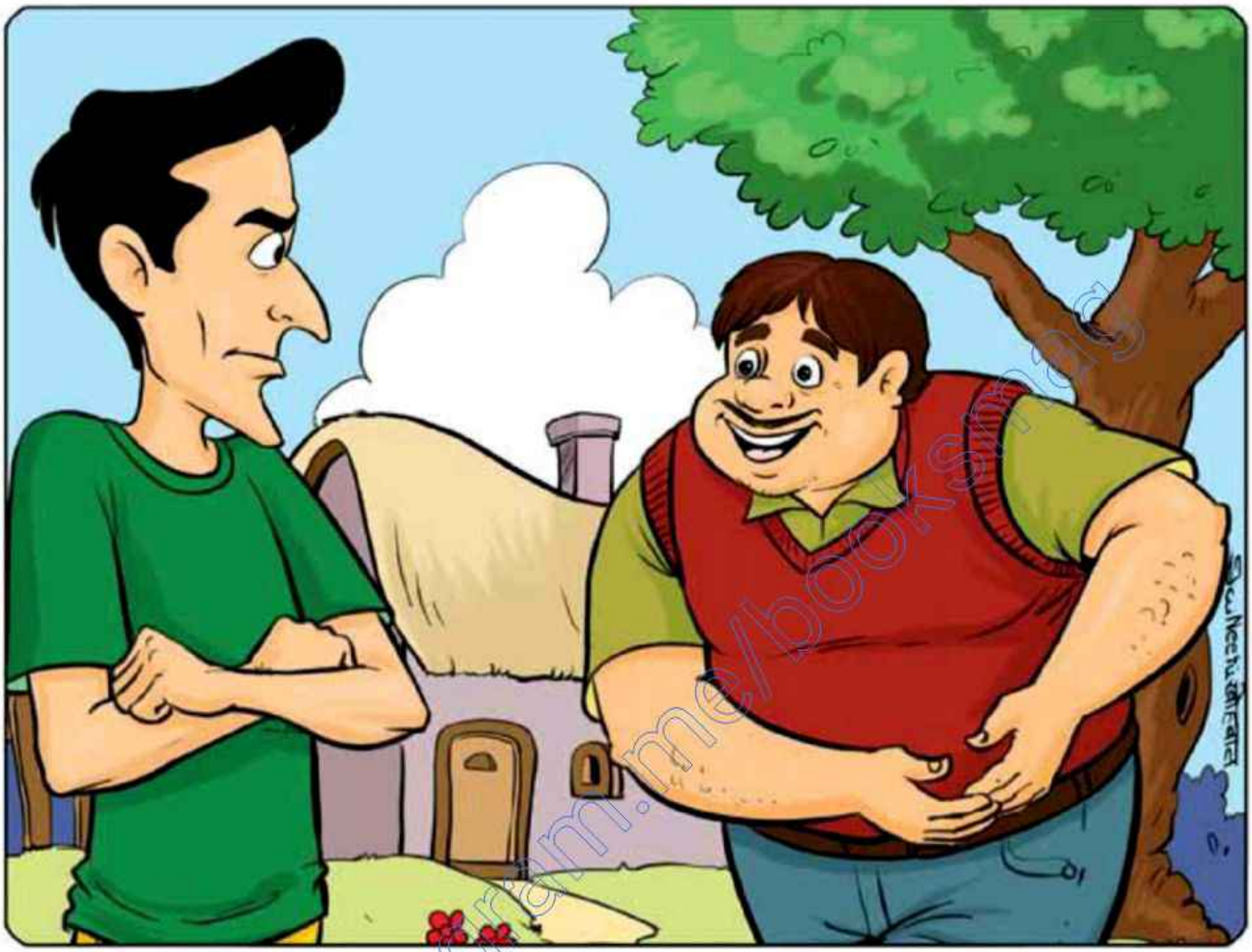

''बस शहजादे, तुम मेरी एक मूर्खिस्तान की कहानी सुन लो तो मैं दोबारा इंसान बन जाऊँगा।'' पेड़ उत्साह से बोला।

''ठीक है सुनाओ शायद हँसी मजाक की कहानी सुनकर मेरा मूड सही हो जाए।''

''तो सुनो....''

वैसे तो उनका असली नाम भोंदूमल था, लेकिन पूरा मुहल्ला उनको प्यार से फूफा मूर्खिस्तानी कहता था। फूफा मूर्खिस्तानी को शुरू से ही मेरे शांत जीवन से ईर्ष्या रही है। इसलिये उन्हें जब भी यह अहसास होता है कि मैं उनकी पिछली आफत से मुक्त हो चुका हूँगा, तो वो तुरन्त नई आफत लेकर मेरी सेवा में हाज़िर हो जाते हैं। वैसे फूफा मूर्खिस्तानी बुरे आदमी नहीं हैं, बस मूडी हैं और उनका यह मूड ही हमेशा मेरी जान का दुश्मन बन जाता है। फूफा मूर्खिस्तानी में जो सबसे बड़ी कमी है, वह यह है कि उनका गधे की तरह अड़ जाना। उनके दिमाग में कोई बात घुसनी चाहिये, बस फिर चाहे सरकार का तख्ता उल्टे, वो उल्टें या मैं उल्टूं मगर बात जब तक पूरी नहीं हो जाती, उन्हें नींद नहीं आती और वो जागे मैं सोऊँ, अजी ऐसा मेरा नसीब कहाँ। मुझे हमेशा फूफा मूर्खिस्तानी से परहेज़ रहा है क्योंकि उनके साथ हमेशा उनके नाम के अनुकूल एकाध आफत चिपकी रहती है, जिसे वो बहुत सफलता से मेरे सिर पर थोप देते हैं। वो अपनी समस्या किस सुपर ढंग से मेरे सिर मढ़ते हैं, इसका नमूना आपको दिखा रहा हूँ। बात चुलबुल के जन्म की है।

मैं अपने कमरे में बैठा एक बहुत ही रोमाँचक कहानी की थीम को रूप दे रहा था। कहानी की थीम ही मुझे काफी दिमाग ख़राब करने के बाद नसीब हुई थी लेकिन थीम क्योंकि मेरी अपनी थी, चोरी की हुई नहीं अत: इस पर लिखने में बहुत मज़ा आ रहा था कि फूफा मूर्खिस्तानी ने कमरे में प्रवेश किया। फूफा मूर्खिस्तानी को देखते ही उस दिन न जाने क्यों मेरा गुस्सा सातवें आसमान की छत को तोड़कर आठवें आसमान पर चढ़ गया। मैंने मन ही मन तय किया कि आज मैं फूफा मूर्खिस्तानी की खाट ऐसी खड़ी करूँगा कि फूफा मूर्खिस्तानी जिन्दगी भर उसे बिछा न सकें।

फूफा मूर्खिस्तानी के सिर पर अचानक बारह सौ रुपये का

https://telegram.me/boksmag

खर्चा आन पड़ा था और फूफा मूर्खिस्तानी वह ख़र्चा मेरे सिर पर डालने आये थे। वह खर्चा क्या था और फूफा मूर्खिस्तानी मुझसे कितना वसूल कर पाये, यह आप अभी जान जायेंगे। बहरहाल मेरा मूड आज फूफा मूर्खिस्तानी की खाट खड़ी करने का था, सो मैंने की। हुआ यह कि उस दिन फूफा मूर्खिस्तानी की इकलौती पूंजी यानि ''चुलबुल'' ने जन्म लेकर इस दुनिया का उद्धार किया था। उधर चुलबुल पैदा हुआ, इधर फूफा मूर्खिस्तानी मेरे कमरे में पैदा (प्रकट) हुये। फूफा मूर्खिस्तानी का चेहरा खुशी से दमक रहा था। फूफा मूर्खिस्तानी आते ही बोले - ''भोला, मिठाई खिलाओ।''

मैं खुन्दक में बोला - ''क्यों खिलाऊँ?''

''मैं कह रहा हूँ ना?'' फूफा मूर्खिस्तानी खुशी से बोले।

''आपके कहने से क्या होता है। कल आप कहने लगें कि भोला, लाल किला दिखाओ तो?''

''मैं पागल थोड़े ही हूँ जो लाल किला लेने को कहूँगा।''

मैं मन ही मन बोला - ''हर पागल यही कहता है।'' फिर मैं प्रत्यक्ष में बोला - ''पागल आप नहीं मैं हूँ।''

''नहीं ऐसी बात नहीं।''

''आपकी तो मैं कहता नहीं मगर मैं मिठाई नहीं खिलाऊँगा क्योंकि मैं पागल नहीं।'' मैं बोला।

''नहीं ऐसी बात नहीं है।''

''फिर कैसी बात है?''

''हम में से कोई पागल नहीं।''

''आपकी तो मैं कहता नहीं मगर मैं मिठाई नहीं खिलाऊँगा क्योंकि मैं पागल नहीं।'' मैं बोला।

''भोले तूने मेरी सारी खुशियों पर पानी फेर दिया।'' फूफा मूर्खिस्तानी एकाएक सीरियस होकर बोले।

मैं मन ही मन बोला - काश मैं आपकी गर्दन पर आरी फेर सकता। फिर प्रत्यक्ष में बोला - ''खुशी आपके लिये होगी, मेरे लिये तो आपके दर्शन होते ही यह दिन मनहूस दिनों की लिस्ट में आ चुका है।'' फूफा मूर्खिस्तानी गम्भीर होकर बोले- ''ऐसा मत कह भोला, आज मेरे लड़का पैदा हुआ है।''

मैं चौंक कर बोला, ''आपके लड़का। फूफा मूर्खिस्तानी क्यों मजाक करते हो, मैं मानता हूँ कि आज वैज्ञानिकों ने काफी तरक्की कर ली है, उन्होंने परखनली में मूर्खिस्तानी बच्चा पैदा कर लिया है मगर किसी आदमी के बच्चा...? खैर फूफा मूर्खिस्तानी, आपकी बात और है आप कभी भी कुछ भी कर सकते हैं। अच्छा यह तो बताइये बच्चे का बाप कौन है?''

मूर्खिस्तान का अंतर्राष्ट्रीय बस अड्डा

मूर्खिस्तान के राष्ट्रपति का घर

मूर्खिस्तानी सेना का टैंक

मूर्खिस्तानी फैशन

https://www.facebook.com/groups/freeamarchitrakathabooks

फूफा मूर्खिस्तानी ने मुझे किन खतरनाक निगाहों से घूरा, यह लिखना असम्भव है। घूरने के बाद फूफा मूर्खिस्तानी बोले - ''भोले, तू मजाक कर रहा है।''

''वैसे तो मैं मज़ाक कर नहीं रहा।'' मैं बोला- ''और अगर कर भी रहा हूँ तो कोई आपकी तिजोरी नहीं तोड़ रहा, जब आप लड़का पैदा कर सकते हैं तो क्या मैं मज़ाक भी नहीं कर सकता।''

फूफा मूर्खिस्तानी एकाएक सुर बदल कर बोले - ''देख भोले, तुझे मिठाई नहीं खिलानी तो मत खिला मगर मेरा मूड मत खराब कर।''

''फूफा आपको अपने मूड की तो चिन्ता है मगर औरों की नहीं। जरा सोचो, जब संसार भर के मर्दों को यह पता चलेगा कि भोंदूमल नाम के एक आदमी ने एक स्वस्थ सुंदर लड़के को जन्म दिया है तो उसके दिल पर क्या गुजरेगी, उनका कितना मूड खराब होगा। फूफा मूर्खिस्तानी मैं तो कहता हूँ इस बात को अपने तक ही सीमित रखें, वरना सच कहता हूँ लाखों-करोड़ों लोग सिर्फ यह सोच-सोच कर मर जायेंगे कि आखिर यह चमत्कार हुआ कैसे? और जो थोड़े-बहुत बचेंगे, उन्हें यह गम खा जायेगा कि यह सौभाग्य उन्हें क्यों नहीं नसीब हुआ। रही औरतों की बात तो फूफा मूर्खिस्तानी वो तो वैसे ही शर्म से मर जायेंगी, वैसे भी जीकर उन्हें करना ही क्या है। आपके इस चमत्कार के बाद उनकी वैल्यू ही क्या रहेगी, जरा सोचो।''

फूफा मूर्खिस्तानी का गुस्सा सारे आसमानों से ऊपर था। वो चीखे-''भोले के पुत्तर! लड़का मेरे नहीं, तेरी फूफी को हुआ है।''

मैं एकदम मायूस सा होकर बोला, ''ओह! खैर, यह राज़ की बात आप मुझे पहले भी तो बता सकते थे और यदि आपको बात में सस्पैंस डालकर बाद में ही बताना था, तो धीरे से भी तो बता सकते थे। आपकी चीख से अगर मेरी खिड़कियों के शीशे टूट जाते तो।''

फूफा मूर्खिस्तानी चुप रहे, मैं आगे बोला, ''और जब लड़का आपकी बीवी के हुआ है तो आप किस मुँह से मिठाई खाने चले आये मेरे पास?''

फूफा मूर्खिस्तानी एकाएक शब्द को चबाकर बोले - ''मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।'' फिर फूफा मूर्खिस्तानी एकाएक शांत होकर प्यार से बोले - ''अच्छा, चल मुझे नहीं तो अपनी चाची को तो खिला दे मिठाई।''

''किस खुशी में? मुझसे पूछ कर किया है। मूर्खिस्तान में रोज़ हज़ारों बच्चे जन्म लेते हैं। अगर मैं उन सबके पैदा होने पर खुश होने लगूँ तो मैं तो कंगाल हो जाऊँगा।''

https://telegram.me/boloksmaf

## निशानेबाज़ चोर

जर्मनी का एक चोर जेल तोड़ कर भाग निकला। दस साल गुजर गये, मगर चोर का पता न चला। उस जेल का जो जेलर था, दस साल बाद एक निशानेबाजी की प्रतियोगिता में भाग लेने वह एक दूर के शहर में गया। मुकाबले में वह दूसरे नंबर पर था, पहले नंबर पर आने वाला निशानेबाज़ से जब उसे मिलाया गया तो उसने देखा कि वह वही आदमी था, जिसकी तलाश उसे दस साल से थी।

फूफा मूर्खिस्तानी हार कर उठते हुये टूटे दिल को संभाल कर बोले-''भोला, मैं जा रहा हूँ। मगर याद रखना आज के बाद मैं तेरी चौखट पर कदम नहीं रखूँगा।''

मैं बोला-''रहने दो फूफा मूर्खिस्तानी! तुम कल फिर आ टपकोगे। और फिर मेरी चौखट कौन सा दरिया है जो आसानी से बिना पैर रखे पार नहीं होगा। जरा कदम लम्बा बढ़ाया तो चौखट तो चौखट, आपका पैर इस छोटे-से कमरे को पार करके सीधा मेरी रसोई में रखा जायेगा।''

फूफा मूर्खिस्तानी ने मुझे आखिरी बार घूरा, गहरी साँस छोड़ी, फिर बोले -''भोले, हमारे यहाँ यह रिवाज़ है कि जब कोई बच्चा होता है तो बच्चे का बाप अपने सबसे अजीज मित्र के हाथों मिठाई खाता है। फिर लड़के का मुँह देखता है और उसके बाद बच्चे का नामकरण होता है। इसलिये मैं बच्चे की ख़बर सुनकर सीधा तेरे पास दौड़ा आया था मगर तूने...''

मैं बीच में बोला-''फूफा मूर्खिस्तानी, अजीज के हाथों मिठाई खाने का रिवाज़ है तो अपने किसी अजीज को पकड़ो मुझे क्यों पकड़ रहे हो? आपको अजीज और ग़रीब में फर्क नहीं दिखाई देता है क्या?''

फूफा मूर्खिस्तानी ने गुस्से से पैर पटके और हारे हुये जुआरी की तरह आँसू बहाते हुये वापस चल दिये। आख़िर आज मैंने फूफा मूर्खिस्तानी की ऐसी मिट्टी खराब की थी, जैसी पहले कभी न की थी। इस जीत ने मेरी अक्ल पर पत्थर डाल दिये और फिर मेरा दिमाग फूफा मूर्खिस्तानी पर दया बरसाने लगा। बेचारे फूफा मूर्खिस्तानी किस उम्मीद से आये थे मिठाई खाने। बेचारे ने मुझे सबसे अजीज समझा था। तब ही तो अपने रिवाज को पूरा करने सीधे मेरे पास आये थे, वरना और सैकड़ों पड़ोसी जिन्दा हैं। और एक मैं हूँ कि उनकी ढेर सारी बेइज्जती कर बैठा। और फिर मैंने आ बैल मुझे मार वाली कहावत अपने ऊपर चरितार्थ की। मैं पाँच मिठाई के डिब्बे लेकर फूफा मूर्खिस्तानी के पास जा पहुँचा। फूफा मूर्खिस्तानी मुझे बाहर दरवाजे पर ही खड़े मिले। वो मुझे देखते ही गुर्राये-''भोला, मेरे घर के अन्दर मत आना वरना...''

मैं फुर्ती से बीच में बोला -''मेरे साथ पाँच किलो मिठाई भी है चाचा।''

''रुको, यहीं रुको। चले मत जाना।'' फूफा मूर्खिस्तानी ने एकदम रंग बदला और अन्दर की तरफ लपके। मैं दरवाजे पर खड़ा फूफा मूर्खिस्तानी के गिरगिटी रंग को देखकर मुस्कराता रहा।

थोड़ी देर बाद फूफा मूर्खिस्तानी दरवाज़े पर एक दाईनुमा औरत के साथ प्रकट हुये। दाई ने मुझे ऐसे देखा जैसे कसाई बकरे को देखता है। वह बोली- ''तुमने अभी तक आज अन्न तो नहीं खाया?'' मैं बोला-''नहीं सुबह का भूखा हूँ।''

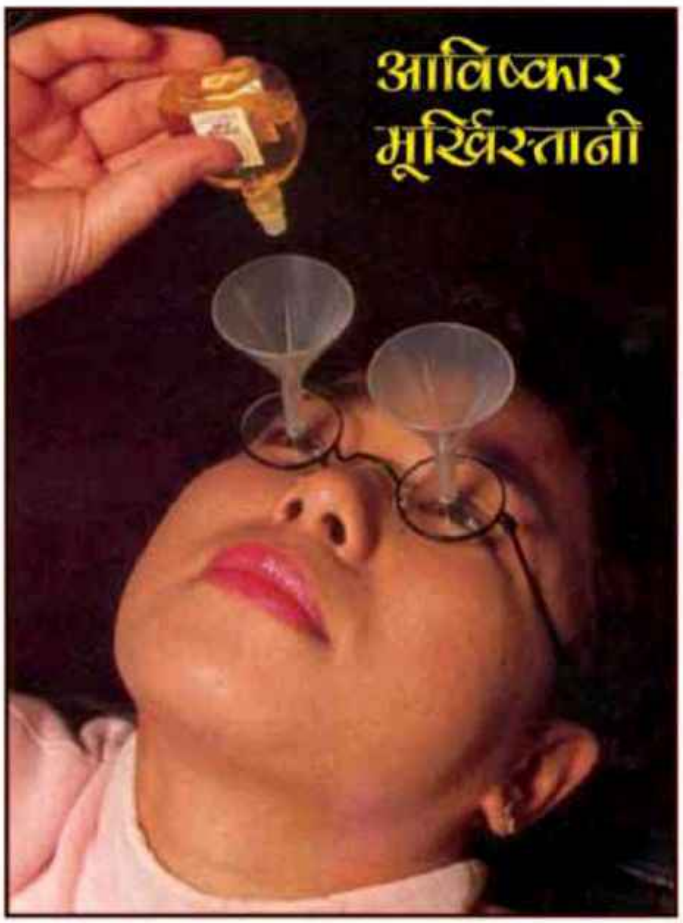


https://t.me/grani.me/booksnag

''तब ठीक है। डिब्बे से मिठाई लेकर पहले थोड़ी तुम खा लो फिर इन्हें खिलाओ।'' मैंने बर्फी का एक पीस अपने मुँह में रखा और एक पीस फूफा मूर्खिस्तानी ने उठाकर गटक लिया। दाई मेरे गले से बर्फी नीचे उतरने से पहले बोली-''जरा अब एक सौ का नोट तो दिखाओ।''

मैंने यह सोचकर कि शायद इनके यहाँ बच्चे पैदा होने पर सौ का नोट देखने का भी रिवाज होगा, मैंने जेब में हाथ डाला और बाहर निकाला।

दाई मेरा हाथ देखकर खुशी से बोली-''अरे तुम्हारे पास दो सौ के नोट हैं।'' वह बोली-''दोनों दिखाओ।'' मैंने दोनों नोट उसे थमा दिये। वह नोट लेकर तुरन्त अंदर को लपकी। मैंने पीछे से आवाज़ दी-''जरा सुनो। नोट यहीं देख लेना, आखिर नोट सौ-सौ के हैं कहीं खामखाँ गिर गये तो तुम कहाँ से वापिस करोगी।''

दाई ऐसे हँसी जैसे मैंने उसे एकदम नया चुटकुला सुनाया हो। हँसने के बाद बोली-''लड़के तू मज़ाक बहुत करता है। भला शगुन के पैसे भी कहीं वापस किये जाते हैं?'' और दाई नौ-दो ग्यारह हो गई।

मैं न रोने लायक रहा न हँसने लायक। मैं रोता हुआ बोला-''फूफा मूर्खिस्तानी, आपका रिवाज़ पूरा हो गया अब मैं चलूँ?''

फूफा मूर्खिस्तानी मेरा कॉलर पकड़ कर बोले-''अरे बच्चे का मुँह देखे बिना तुम नहीं जा सकते।''

फूफा मूर्खिस्तानी मुझे अन्दर एक कमरे में ले गये। दाई फिर प्रकट हुई। इस बार उसके हाथ में एक नवजात शिशु था। शिशु के ऊपर एक बारीक कपड़ा था।

दाई बोली-''ले छोरे बालक का मुँह से कपड़ा हटा कर बच्चे को प्यार कर ले।''

मैंने सोचा दाई ने दोनों हाथों से बच्चे को थाम रखा है इसलिये कपड़ा हटाने के लिए मुझे कह रही है। मैंने कपड़े की तरफ हाथ बढ़ाया तो दाई झटके से पीछे हटते हुये बोली-''अरे-अरे! क्या ऐसे ही कपड़ा हटायेगा?''

मैंने सोचा और क्या इस बारीक से कपड़े को हटाने के लिए भी क्या पहले कोई वर्जिश करनी पड़ेगी या सिर नीचे पैर ऊपर करके यह कपड़ा हटेगा। मैंने धीरे से पूछा-''फिर कैसे हटाऊँ?''

## चल बेटा दिमाग लड़ा-बता कौन है छोटे से बड़ा?

यहाँ बनी उल्लू की तस्वीरों को (छोटे से बड़े) के अनुसार लगाइये। (उत्तर इसी अंक में है।)

https://t.me/gramin_bookstag

''पहले मुँह दिखाई दो।'' दाई मुस्करा कर बोली।

''तुम्हारा मुँह तो मैंने पहले भी कई बार देख रखा है।''

दाई चहक कर बोली-''अरे मेरी मुँह दिखाई नहीं, बच्चे की मुँह दिखाई और सुन मैं पूरा सौ का नोट ही लूँगी हाँ! वैसे छोरे तू मज़ाक अच्छा करता है।''

मेरा सिर घूम गया। मैं मन ही मन बोला- मजाक तो किस्मत ने मेरे साथ किया है जो मुझे यहाँ लेकर आई है। सौ का नोट तो दाई बार-बार ऐसे माँग रही थी जैसे मैं बच्चे का...। खैर छोड़िये। मैं बोला-''बच्चे का मुँह फूफा मूर्खिस्तानी नहीं देख सकते?''

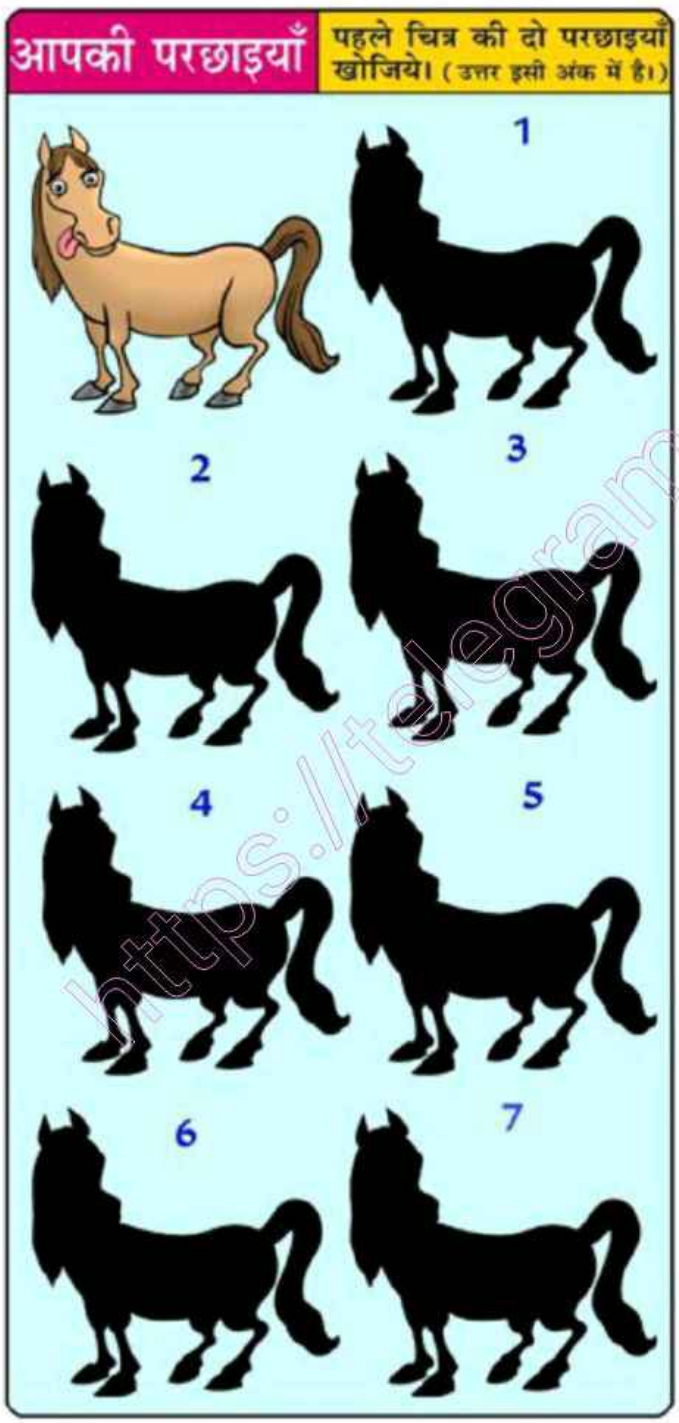


''नहीं।'' दाई बोली-''मिठाई खिलाने वाले का बच्चे पर ज्यादा अधिकार होता है। तभी तो वह मिठाई खिलाता है।''

मैंने फूफा मूर्खिस्तानी की तरफ देखा। फूफा मूर्खिस्तानी के चेहरे पर विजेताओं की मुस्कान थी। मैंने मरे दिल से एक सौ का नोट और दाई को भेंट किया और बच्चे के मुँह से कपड़ा हटाया। कपड़े के हटते ही बच्चे ने आँख भींची। तब मैंने यह सोचा था कि बच्चे की आँख हवा के कारण मिची होगी। मगर आज दस साल बाद मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह आँख चुलबुल ने जानबूझ कर बंद की थी और जैसे मुझे कहा था, ''भोला अंकल, अभी तो मैं आया हूँ यह तो मेरी शुरुआत है। आगे-आगे देखना होता है क्या!''

मुझे तीन सौ रुपये के गम में अब चुलबुल ज़रा भी अच्छा नहीं लग रहा था और अब तो नालायक इतनी चालू चीज़ बन गया है कि उससे मुझे डर लगता है। पट्ठे के जब दर्शन होते हैं, मेरे बीस-पच्चीस रुपये का खून हो जाता है।

मैंने सौ का नोट देकर रोते दिल से दो मिनट उस नन्हीं सी जान को देखा और बिना मूड के आशीर्वाद देकर नज़र घुमा ली। मगर फूफा मूर्खिस्तानी ने दाई को इकन्नी नहीं दी और बच्चे को कभी इधर से देखते कभी उधर से। कभी कहते बेटे मुझे बापू बोल, कभी कहते डैडी बोल। जैसे वह हिंदी, इंग्लिश में पीएचडी ऊपर से ही करके आये हों।

तीन घण्टे बाद दाई उस नन्हें मुन्ने को लेकर वापस गई।

अब तक भूख के मारे मेरे पेट का भूगोल पिचक कर बिगड़ चुका था और फूफा मूर्खिस्तानी मुझे तीन सौ रुपये का चूना लगाकर भी चुपचाप बैठे थे। पानी का एक गिलास तक नहीं पूछा था।

मैंने उसी दिन से चुलबुल को कोसना शुरू कर दिया था मगर आज दस साल बाद भी मेरे न तो कोसने से कभी फूफा मूर्खिस्तानी को छींक आई और न चुलबुल को जुकाम हुआ।

मैं अपनी भूख के बारे में सोच रहा था कि पंडित जी ने कमरे में कदम रखा। पंडित जी ने आते ही पूछा-''मिठाई किसने खिलाई है?''

मेरी हालत ख़राब। आखिर मैंने मिठाई ही तो खिलाई है, ये पंडित तो ऐसे पूछ रहा है जैसे परशुराम पूछ रहा हो, ये शिव धनुष किसने तोड़ा है? मैं हिम्मत करके बोला-''यह अपराध मुझसे हो गया पंडित जी।''

''हूँ अच्छा-अच्छा।'' पंडित जी मुस्कुरा कर बोले-''अब ये बोलो नाम किस रेट का रखना है?''

मैं बोला-''पंडित जी रेट माने चूहा होता है। और यहाँ आपको किसी चूहे का नाम नहीं एक सुन्दर सुशील बच्चे का नाम रखना है।''

https://telegram.me/bookspdf

पंडित ने चश्मे के पीछे से घूरा और बोले-''बालक तू बड़ा पहुँचा हुआ लगता है, क्या नाम है तेरा?''

मैं जल्दी से बोला-''मेरा नाम तो भोला है, मगर पंडित जी भगवान के लिये यह नाम इस बालक का मत रखना वरना जिंदगी भर किसी फूफा मूर्खिस्तानी की आफतों में फँसा रहेगा।''

पंडित बोला-''मैं बहस करने के मूड में नहीं हूँ इसलिये तुम सीधे यह बताओ की नाम किस रेट यानि किस क्वालिटी का रखना है?''

''क्या नाम की भी क्वालिटियाँ होती हैं पंडित जी?''

''हाँ जजमान। आजकल वैराइटी का ज़माना है। और जहाँ वैराइटी होती है, वहाँ क्वालिटी अपने आप बन जाती है। मेरे पास भी नाम की तीन क्वालिटी हैं। पहली ऑर्डिनरी, दूसरी फाईन और तीसरी सुपर फाईन। पहली क्वालिटी का रेट एक सौ एक रुपये हैं। दूसरी का तीन सौ एक और तीसरी का पाँच सौ एक रुपये नगद।''

मैं बोला-''पंडित जी रेट कुछ कम नहीं हो सकता?''

पंडित मुझे घूर कर बोला-''जजमान नाम रखवा रहे हो या सब्जी खरीद रहे हो?''

मैं चुप। पंडित जी ने अपने थैलों में से एक पोथी निकाली। नाक पर चश्मा ठीक किया और पोथी के तीन चार पेज पलटकर बोले - ''तो ऑर्डिनरी नाम सुनो-श्री गैंदामल, श्री फूलकुमार, श्री कमल प्रसाद, श्री गुलाब चन्द, श्री सूरज मल...।''

मैं बीच में ही बोला-''पंडित जी आपने कहीं गलती से फूलों के नाम की पोथी तो नहीं खोल ली। अभी तक आपने आदमी का एक भी नाम नहीं बताया।''

पंडित बुरा सा मुँह बनाकर बोला-''जजमान ऑर्डिनरी नाम में और क्या तुम्हें रणबीर कपूर और शाहिद कपूर के नाम चाहिये?''

मैं होठों पर जीभ फेरकर बोला-''अच्छा पंडित जी ऑर्डिनरी छोड़ो, अब एकाध सुपर नाम बताओ।''

पंडित जी ने फिर पोथी पर नज़र गड़ाई और बोले - ''श्री पाल सिंह प्रसाद, श्री शिव राय कृष्ण, मुरारी गोपाल, श्री मटरु मल, खटरुमल त्रिलोकी सिंह, श्री...''

मैं फिर बीच में बोला - ''पंडित जी आप एक श्री के साथ दस बारह नाम लगाकर बोल रहे हो?'' पंडित जी शांत स्वर में बोले-''ऐसा नहीं है जजमान मैं एक श्री के साथ एक ही नाम बोल रहा हूँ। आगे सुनो-श्री कुमार पाल सिंह दत्त प्रसाद, श्री...''

http://telegram.me/bookzmag

''बस पंडित जी।'' मैं बोला-''पंडित जी हमें कोई छोटा-सा नाम चाहिये जिसे बोलने में साँस की बीमारी पैदा होने का ख़तरा न हो। आखिर नाम हमें कोई मूर्खिस्तान के इतिहास में लिख कर तो छोड़ना है नहीं। हमें याद करना है और आप हो कि ऐसे घण्टों के हिसाब से नाम बता रहे हो कि कहीं स्टार्टिंग करते हैं तो एण्ड भूल जाते हैं, एण्ड याद करते हैं तो स्टार्टिंग याद नहीं रहती। ज़रा कोई एक लाईन का नाम बताओ यह कई पृष्ठों के नाम याद नहीं होंगे।''

''अरे तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि सुपर फाईन नाम चाहिये।'' पंडित जी नाक पर चश्मे को टिका कर बोले-''तो सुनो... अनिल, गोविंदा, अभिषेक, सनी, बॉबी आदि-आदि।''

मैं बोला-''आखिरी नाम के कितने पैसे है?''

''बॉबी के?'' पंडित जी ने पूछा।

''नहीं।'' मैं बोला-''सबसे आखिरी आदि-आदि के?''

पंडित जी बिगड़ कर बोले-''अरे वो नाम थोड़े ही हैं।'' मैं बोला-''अजी हैं कैसे नहीं, जब गेंदा, कमल, गुलाब और चमेली नाम हो सकते हैं तो आदि-आदि क्यों नहीं हो सकता?'' पंडित जी तैश में आकर बोले-''हो सकता है तो हो जाने दो। मगर मैं तेरे से पाँच सौ एक रुपया लूँगा। इस नाम का आखिर यह नाम मैंने बॉबी के नाम के साथ लिया था।''

## टिप्स मूर्खिस्तानी

- आप अपने पालतू कुत्ते का नाम 'खटमल' रखिये। अगर वो आपके पड़ोसी को काट भी लेगा, तो भी पुलिस वाले आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे, क्योंकि 'खटमल' के काटने पर भला कोई केस बनता?
- अगर दूध फट जाये, तो उसे सफेद धागे से सिल दीजिये। किसी को पता भी नहीं चलेगा।
- अगर आपका बच्चा दाँतों से नाखून काटता है, तो उसे जूते पहनाने शुरु कर दीजिये।
- अगर आप चाहती हैं कि चावल पकाते समय दाने आपस में न चिपकें, तो चावल का एक-एक दाना अलग-अलग पकाइये।

''और अगर हम आज नाम न रखें तो?'' मैंने पूछा।

पंडित जी बोले-''तो क्या! मैं अपने आने की पचास रुपये फीस तो लूँगा ही।''

मैंने पंडित को पचास का नोट दिया और बाहर का दरवाज़ा दिखा दिया।

पंडित जी के जाते ही फूफा मूर्खिस्तानी ने मुँह खोला-''अरे भोला अब नाम कौन रखेगा?''

मैं बोला-''फूफा मूर्खिस्तानी, वह पंडित तो हमें खामखाँ तंग कर रहा था। नाम में है ही क्या, कोई भी गुदगुदा सा नाम हम खुद..।'' मैं एक पल रुका फिर सोचा कर बोला-''फूफा मूर्खिस्तानी, बच्चे का नाम चुलबुल प्रसाद कैसा रहेगा? चुलबुल प्रसाद।''

फूफा मूर्खिस्तानी मुस्करा कर बोले-''अरे वाह! नाम तो वाकई तूने बहुत अच्छा सोचा है मगर तूने मुझे पहले क्यों नहीं बता दिया कि तू इतना दिमाग वाला है। मैं पंडित को ना बुलाता।''

मैं धीरे से बोला-''अगर मैं जरा भी दिमाग वाला होता तो यहाँ तीन-चार सौ रुपये का खून करके भूखा नहीं मरता।'' फिर मैं तेज स्वर में बोला-''अच्छा फूफा मूर्खिस्तानी अब मैं चलूँ।''

फूफा मूर्खिस्तानी मेरा कन्धा पकड़ कर बोले-''अरे चला जाइयो... एक गिलास पानी तो पी ले। फिर शाम का खाना खा कर ही जाना।''

''हे भगवान!'' मेरे दिल से आवाज़ निकाली-''भोले जल्दी भाग यहाँ से। तीन-चार सौ रुपये फूँकने के बाद फूफा मूर्खिस्तानी ने पानी पूछा है और वो भी सिर्फ पूछा है कहीं पिला दिया तो न जाने कितने और देने पड़ेंगे। और कहीं शाम का खाना खिला दिया तो तेरा भगवान ही मालिक होगा।''

इसके बाद फूफा मूर्खिस्तानी ने मुझे काफी रोका। मगर वहाँ और रुकने को न मेरी जेब इजाज़त दे रही थी और न भूख। मैं सीधा वहाँ से एक होटल में पहुँचा और खाना खाकर यह सोचते-सोचते सो गया कि काश मैं भी फूफा मूर्खिस्तानी को ऐसे किसी नामकरण पर बुला पाता, मगर हाय री किस्मत! यहाँ तो मैं अभी खुद कुँवारा मूर्खिस्तानी हूँ, बच्चे का बाप कैसे बनूँ।

''वाह! अच्छी कहानी थी... मैं सारे दुख दर्द भूल गया।'' शहजादा सलीम खुश होते हुए बोला।

उसी वक्त एक चमत्कार हुआ। कहानी सुनाने वाला वृक्ष इंसान बन गया। इंसान बनते ही वह आदमी शहजादे को धन्यवाद देकर अपने देश मूर्खिस्तान की तरफ चल देता है।

शहजादा सलीम एक बार फिर तिलस्मी नदी की ओर बढ़ने लगता है। ❑❑❑

https://t.me/pw.net/booksmag

करामाती मीकू और
स्टेशन मूर्खिस्तानी
©INTERCOSMOS MOVIE FEATURES
छुट्टियों में मीकू चला सैर-सपाटे पर-
जल्दी ही आ जाऊँगा मम्मी! मूर्खिस्तान के आगे ही टेटे का शहर!
ठीक से जाना और अपना ध्यान रखना! हाँ...रास्ते में किसी मूर्खिस्तानी से अक्ल मत भिड़ना!
ओके मम्मी! वहाँ पहुँचकर फोन भी करूँगा!
और वह पहुँच गया रेलवे स्टेशन-
अच्छा हुआ, मैं समय पर पहुँच गया!
मिल गई मेरी सीट! यही है!
तो बैठ जा, तू भी क्या याद करेगा कि किसी मूर्खिस्तानी के बगल में बैठा है!
और चचा मूर्खिस्तानी लगे बतियाने-
ये दाँत मेरी शान हैं! इनकी बदौलत मैं आइसक्रीम भी काट कर खा लेता हूँ।
मीकू! अक्ल न भिड़ना प्यारे!

मुझे मूर्खिस्तान जाना है। मेरी ट्रेन बीच रात्रि में पहुँचेगी!..... सोचता हूँ, क्या करूँ?! कहीं ऊंघ न सका तो??
एक मजेदार आइडिया बताऊँ? आप जहाँ ऊंघेंगे वहीं मूर्खिस्तान हो जाएगा!
मूर्ख लड़के! ज्यादा मेरी तारीफ न कर! दाँत मेरे निकले हैं और दाँत निकालकर तू हँस रहा है! तुझे क्या लगता है, मेरे कारण शहरों के नाम बदल दिए जाएँगे?! और तुझे क्या लगता है, मूर्खिस्तान नाम रखे जाने के काबिल है कोई शहर?!
खैर, तुझे 'नन्हे सम्राट' में देखा है! हमारे राष्ट्रपति वहाँ संपादक हैं। तू सारी रात अपने करामात की कहानियाँ मुझे सुनाएगा, मैं पूरी रात जगा रहूँगा!
क्यों?! भला मैं क्यों सुनाऊँगा कहानियाँ?!
क्यों?! क्या उन कहानियों पर तेरा कॉपीराइट है?! या उन पर तेरे मालिक दीवान साहब का कॉपीराइट है?! मैं जगा रहूँ, इसके लिए मुझे कहानियाँ सुनाएगा!
मगर आप तो... सोने चल दिए?!
हाँ! अभी एक छोटी-सी नींद मार लेता हूँ! फिर सुनाना तू अपनी सारी कहानियाँ!....वैसे तुम्हारी कहानियाँ वह पटना वाला लिखता है न?!...चलो, मैं थोड़ा सो लेता हूँ, फिर सुनता हूँ तेरी कहानियाँ! ट्रेंट्रेंट्रे...
मीकू को कहानियाँ सुनाने का जिम्मा देकर मूर्खिस्तानी अंकल खर्राटे मारने लगे!
यह तो खर्राटे मारने लगे! अब क्या करूँ?! कहीं इनका मूर्खिस्तान स्टेशन छूट न जाए! और नींद तो मुझे भी आ रही है!...पर मम्मी ने कहा है कि अक्ल न भिड़ना!
और मीकू को भी नींद आ गई।

बीच रात में अचानक मीकू उठ-
हैं?...यह ट्रेन रुकी हुई क्यों लग रही है?? इनके खर्राटों में तो ट्रेन की आवाज भी नहीं मिल रही!
और अचानक उसी समय मूर्खिस्तानी चचा भी नींद से जाग गए!
अमा यह ट्रेन रुकी हुई क्यों लग रही है?!...या मैं रुका हुआ हूँ?!?.....गुर्रर्रर्र!!
मूर्ख लड़के!...तूने मुझे न अपनी कोई कहानी सुनाई और ना ही मूर्खिस्तान स्टेशन आने पर मुझे जगाया और अब नहीं मालूम ट्रेन रुकी हुई क्यों है!?
इस बीच उपर लेटा आदमी गुस्से से चीख पड़ा!
मिस्टर मूर्खिस्तानी! तू अपने स्टेशन पर नहीं उतरा, तो ट्रेन हमें यहीं छोड़कर चली गई! गुर्रर्रर्र!
ककक्या मतलब!?
मूर्खिस्तान स्टेशन आने पर तुम्हारे बर्थ पर आगे की यात्रा के लिए एक मूर्खिस्तानी यात्री आया था! तू जब नहीं उठा, तो वह गुस्से में इस डब्बे को यहीं छोड़ पूरी ट्रेन लेकर चला गया!
क्या!?



समाप्त

# WORDS छाँटिये

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. पुत्तर | 6. फुटा | 11. कर्ज़ | 16. बरतन | 21. लेना | 26. बेटी |
| 2. राबड़ी | 7. फोन | 12. टर्र | 17. अँगूठा | 22. बेला | 27. तन |
| 3. फिरकी | 8. कागज़ | 13. राई | 18. पहाड़ | 23. लाज | 28. फर्ज़ |
| 4. गज़ब | 9. रबर | 14. गंदी | 19. शातिर | 24. काजू | 29. कट |
| 5. अजब | 10. दीवार | 15. टॉर्च | 20. बेचारा | 25. टूटा | 30. जूठा |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पु | सं | बे | टी | ग | अं | पु | त्त | रू | फि | र | ड़ी | फि | ई | रा |
| त्त | फि | र | छी | ज़ | गू | फु | चा | अ | ज | ब | फु | र | ले | ब |
| न | ई | शा | अ | क | ठा | र | ब | द | रा | फो | टी | खी | ना | पु |
| रा | फि | ति | ज | जू | रा | ब | ड़ा | क | र्ज़ा | ई | च | अ | ग़ | त्त |
| ब | फो | र | बी | का | ग़ | ज़ी | रा | ला | टॉ | गं | र्र | ज | ज़ | ल |
| ली | ब | म | की | र | ब | रू | गं | ज | रा | दा | रा | व | बा | फि |
| र | फु | र | क | रू | ज | पु | डी | र्च | ब | र | फु | का | प | र |
| ग | ला | ब | दी | र्चा | रा | त्त | अं | बा | डू | का | टा | ग़ | हा | कू |
| ज़ | ई | ल | टॉ | दी | वा | र | गू | प | जू | डू | ब | जू | ड़ | म |
| बू | र्र | र्च | बे | लू | जू | ठी | ठी | हा | टा | बे | र | र्र | ई | ज |
| फो | न | ब | र | त | म | फू | टू | टॉ | र्च | पु | त | फो | ग | ल |
| गं | दू | अं | बे | सी | का | जू | पा | बे | टा | त्त | छी | सु | दी | अ |
| र्र | र्च | गू | ब | टू | ग़ | प | हा | ल | रा | छ | अं | गं | क | ज |
| बे | ला | शा | र | ग़ | ज़ | ब | ता | शा | ति | ल | गू | टॉ | ज | फ |
| रा | ब | री | त | शा | फि | र | टी | का | ल | फ | ला | प | री | दी |
| क | ना | र्र | ल | ति | क | त | बे | चा | क | र्ज़ | छी | रा | फि | वा |
| फो | ट | क | र्ज़ी | टॉ | त | न | जू | ठ | र्च | र्र | चा | अ | र | ल |
| अ | ज | टू | टा | ग | ज़ | फ | का | ग | ड़ | बे | फी | ज | का | टॉ |

https://telegram.me/bookmag

# TIME काटिये

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 31. ROBOT | 36. BEST | 41. STEM | 46. RANGE | 51. VERY | 56. GIFT |
| 32. COMPUTER | 37. WAY | 42. HOT | 47. FIT | 52. SENSE | 57. THAT |
| 33. WEB | 38. WITH | 43. FOOD | 48. RICH | 53. CLUB | 58. FOOL |
| 34. SITE | 39. BASE | 44. IRON | 49. DRY | 54. FAN | 59. BAY |
| 35. NET | 40. PLAYER | 45. THIS | 50. FIND | 55. SIGN | 60. CHEST |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| R | O | B | O | Z | C | H | E | S | T | W | E | Z | Q | C |
| N | C | N | E | T | Q | R | A | N | G | E | F | C | Y | O |
| E | O | P | L | A | E | I | Y | S | D | I | R | O | N | M |
| F | M | I | R | Y | Z | C | L | I | B | B | O | M | I | P |
| A | P | C | A | B | T | H | A | T | E | E | B | P | R | D |
| N | U | L | T | E | Q | F | S | O | S | S | O | U | H | R |
| S | P | U | H | S | R | O | B | O | T | C | K | T | S | Y |
| I | Q | B | I | K | L | O | F | I | S | L | I | E | I | N |
| T | S | A | C | V | M | D | D | R | T | W | B | R | T | E |
| U | T | S | D | S | N | O | B | O | E | F | A | A | A | V |
| S | E | U | R | I | R | E | K | A | N | H | S | N | Z | E |
| T | A | E | F | L | W | G | N | Z | S | W | O | G | Q | R |
| E | M | Y | Z | P | L | A | E | R | X | E | Y | B | A | Y |
| W | R | A | N | G | U | S | Y | R | I | C | E | X | W | R |
| H | S | E | N | S | E | I | V | H | O | T | S | I | E | O |
| D | X | G | C | O | M | P | U | T | I | R | H | M | T | B |
| P | I | P | L | A | Y | E | P | S | P | T | O | I | Z | O |
| S | W | E | F | O | O | L | N | E | G | I | F | T | S | S |

https://telegram.me/booksnag

# अंग्रेज़ों के ज़माने का मूर्खिस्तान

साहिल

बात अंग्रेजों के ज़माने की है। उन दिनों अगर किसी की तूती बोलती थी तो अंग्रेज़ होते थे। मूर्खिस्तानियों के साथ वो कुछ इस तरह व्यवहार करते थे कि पहले हम खा लें, जूठा बचे तो तुम खा लेना। सरकारी गेस्ट हाउसों में अगर अंग्रेज़ साहब मौजूद होता था तो किसी मूर्खिस्तानी को वहाँ घुसने नहीं दिया जाता था, चाहे बेचारा खुले आकाश के नीचे रात को अकड़ कर रह जाए।

बस कुछ न पूछिए, उस ज़माने में अंग्रेजों की देखते ही बनती थी। उसी ज़माने में गर्मी की छुट्टियों में एक बार मैं मूर्खलिंग घूमने गया। तब होटल तो होते नहीं थे। सरकारी गेस्ट हाउस में ठहरो या धर्मशाला में। मैं जब अपने बोरिया-बिस्तर से लदा-फंदा गेस्ट हाउस पहुँचा तो चौकीदार ने कहा, ''सरकार आप जाइए, यहाँ गोरे साहब आने वाले हैं।''

मैंने कहा, ''इतने ढेर सारे कमरे हैं, सारे कमरों में तो गोरे साहब फैल कर लेटेंगे नहीं। कोई छोटा सा ही कमरा मुझे दे दो, रात गुज़ार कर चला जाऊँगा।''

''जाओ, जाओ यहाँ से। कोई जगह नहीं है।'' चौकीदार अचानक एकदम बेमुरव्वत हो गया, ''मुझे अपनी नौकरी से हाथ नहीं धोना।''

मैं अभी वहाँ खड़ा यही सोच रहा था कि कहाँ जाऊँ, तभी एक रिक्शा आकर रुका और उसमें से एक देसी जवान कूदकर नीचे आ गया। उसके हाथ में जो लाठी थी वह गज़ब की थी। इतनी मोटी लाठी मैंने पूरी ज़िन्दगी में नहीं देखी थी। लाठी ही क्या, मैंने तो इतना लंबा-चौड़ा गबरू जवान भी कभी नहीं देखा था। सुर्ख चेहरे पर अजीब-सा रौब छलका पड़ रहा था। उसके पीछे-पीछे एक नौकर जैसा आदमी भी रिक्शे से उतरा, जो उसका सामान संभाले हुए था।

फाटक के करीब पहुँचकर उसने ज़ोर से लाठी ज़मीन पर फटकारी और चौकीदार को आवाज़ देकर बोला, ''फाटक खोलो। रात ठहरना है।''

चौकीदार उसका यह रूप-रंग देखकर सहम गया था। फिर भी बोला, ''कमरा खाली नहीं है, गोरे साहब आने वाले हैं।''

''आने दो। पहले हम आए हैं। हमको जगह मिलेगी।''

''लेकिन...।''

''तू क्या मेरे लट्ठ से ज्यादा अंग्रेज़ से डरता है?'' जवान ने अपनी लाठी को लहरा कर कहा।

https://olegsan.livejournal.com

चौकीदार ने चुपचाप फाटक खोल दिया। तब जवान की नज़र मुझ पर पड़ी। मैं जो एक तरफा सहमा हुआ खड़ा था।

''आप बाहर क्यों खड़े हैं, अन्दर आइए।''

मैंने कुछ कहने की जरूरत ही नहीं समझी। चुपचाप अपना सामान संभाला और उसके पीछे-पीछे अन्दर आ गया। चौकीदार ने झिझकते हुए एक कमरे की चाभी मेरे हवाले कर दी। और दूसरे कमरे में जवान और उसके नौकर ने कब्ज़ा जमा लिया। चौकीदार बुरी तरह डरा हुआ था। मुँह ही मुँह में वह एक ही बात बार-बार दोहरा रहा था, ''गोरे साहब आने वाले हैं। मैं करूँ तो क्या करूँ।''

जवान ने चौकीदार को एक लम्बे चौड़े नाश्ते का ऑर्डर दिया और फिर यह कहकर बाहर चला गया कि मैं अभी नदी पर से आता हूँ। वह चला गया और हमें हवा में लटका गया। हम अभी यही सोच-सोचकर मरे जा रहे थे कि उसकी गैरहाज़री में अंग्रेज आ गए तो क्या होगा... तभी सचमुच अंग्रेज आ गए। दो ताँगों में अंग्रेज़ ही अंग्रेज़ भरे हुए थे। पाँच मर्द और चार औरतें। अन्दर आते ही उनमें से एक ने आगे बढ़कर चौकीदार को गाली दी। चौकीदार उसके सामने पहुँचकर यूँ लड़खड़ाया कि उसके कदमों पर गिरते-गिरते बचा। हम सबकी हालत बुरी थी और अपनी-अपनी जान की ख़ैर मना रहे थे। लगता था कि आज उस गबरू जवान के कारण हमारी इ ज़त जाके रहेगी।

वो पहले से ही न जाने किस बात पर गुस्से से उबल रहे थे। जब उन्हें पता चला कि दो कमरों पर दो मूर्खिस्तानियों ने कब्ज़ा जमा रखा है, तो वो पूरी तरह भड़क गए।

पहले मुझे आदेश मिला कि मैं अपना सामान लेकर फौरन वहाँ से भाग लूँ। मैं तो चुपचाप अपना सामान समेट कर बाहर बरामदे में आ गया मगर जब गबरू जवान ने नौकर को यही हुक्म दिया तो उसने कह दिया, ''अपने मालिक के आए बिना हम सामान नहीं हटाएँगे, मजबूरी है।''

सारे अंग्रेज़ों ने उसे बारी-बारी से 'ईडियट' और 'डर्टी मूर्खिस्तानी' कह कर धमकाया, मगर जवान का नौकर अपने इरादे से टस से मस न हुआ। तब उन सब ने मिलकर यह इरादा जाहिर करना शुरू कर दिया कि उसको (जवान को) आने दो, हम उसकी ऐसी की तैसी कर देंगे, कुत्ते की तरह उसको यहाँ से निकालेंगे। मेरा दिल धड़-धड़ कर रहा था और आज जरूर कोई अनर्थ होगा जिसमें मैं बेमौत मारा जाऊँगा।

थोड़ी देर बाद जब जवान नदी से वापस लौटा तो सब गुस्से से खौल रहे थे। मगर वह आराम से कदम बढ़ाता हुआ ज्यों ही उनके सामने पहुँचा, सब के चेहरों का रंग अचानक ही बदल गया।

जवान ने पूरे इत्मीनान के साथ एक नज़र उन पर डाली, फिर अपनी लाठी को देखा, और फिर उस लाठी की मूठ को प्यार से सहलाने लगा। अंग्रेजों के चेहरों से साफ लगता था कि वो कुछ कहने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। अजीब सा असर किया था।

तब एक मेम ने अपने एक साथी से अंग्रेजी में कहा, ''इस

https://t.me/tehelkamagazine

बद्तमीज और नीच मूर्खिस्तानी को देखकर तुम सबकी जुबान क्यों बन्द हो गयी?''

इससे पहले कि उसका साथी कुछ कहे, हमारे जवान ने खुद ही उस मेम को शुद्ध अंग्रेजी में जवाब दे दिया, ''तुम औरत हो, इसलिए मैं चुप हूँ। तुम्हारा कोई मर्द अगर यही बात कहता तो जुबान खींच लेता।''

वो सब यह सुनकर बौखला गए। उन्हें क्या, मुझे भी उम्मीद नहीं थी कि एकदम देहाती नज़र आने वाला यह जवान इतनी बढ़िया अंग्रेजी बोलकर दिखाएगा। अंग्रेजों के हाथों से तो जैसे तोते ही उड़ गए थे। शायद जिन्दगी में पहली बार उन्हें ऐसा अक्खड़ मूर्खिस्तानी मिला था, जो उनके सामने ही उनकी जुबान खींच लेने का इरादा ज़ाहिर कर रहा था।

बड़ी मुश्किल से एक अंग्रेज़ ने लड़खड़ाती हुई जुबान में कहा, ''कमरों में हम लोग रहना चाहते हैं। आप मेहरबानी करके अपना सामान उठा लें।''

''अच्छा लाट साहब।'' जवान ने अंग्रेजी में ही जवाब दिया, ''हम लोग कहाँ जाएँगे।''

''आप बरामदे में आ जाइए, या नौकरों का कमरा खाली है, वहाँ चले जाइए।'' एक दूसरे अंग्रेज ने जवाब दिया।

''तुम लोग खुद ही वहाँ क्यों नहीं चले जाते?''

अब सारे गोरे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। आखिर एक ने अपनी खोपड़ी खुजलाने के बाद हिम्मत करके कहा, ''हमारे साथ औरतें हैं।''

''औरतें हैं, तो ठीक है गेस्ट हाउस में तीन कमरे हैं। दो में औरतों को भेज दो, और तुम लोग अपना बिस्तर बरामदे में बिछा लो।'' ठेठ लहज़े में यह मशवरा देकर जवान अन्दर आ गया। उसके पीछे एक अंग्रेज़ ने खंखार कर कहा, ''मगर...।''

जवान ने घूमकर अपनी लाठी ज़मीन पर पटकी, ''मगर क्या...?''

लाठी की धमक से ही सबकी जान निकल गयी, कोई जवाब

विक्रम-बेताल इन मूर्खिस्तान
हठी विक्रम, बेताल को कंधे पर लादे हुए मूर्खिस्तान पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही बेताल बोला-''विक्रम, अगर तुमने मेरे सारे सवालों के सही जवाब नहीं दिये तो तुम्हारे दिमाग की बत्ती गुल हो जायेगी। और हाँ...इस बार A, B, C, D का ऑप्शन भी नहीं है।'' (उत्तर इसी अंक में है।)
1- वो दीवारों पर चलती है,
मगर आगे नहीं बढ़ती है।
2- खाने से पहले हरा, खाने के बाद लाल,
वो क्या है, जो करे ऐसा कमाल?
3- एक अनोखी बुनाई जो घर-घर में मिल जाती है,
बिना सुई-धागे के, वो बुनी जाती है।
4- एक है फूल, दूसरा है फल,
दोनों मिल कर बनाते मिठाई,
आप नाम बताओ मेरे भाई।
5- अमिताभ बच्चन की एक फिल्म का जो नाम है,
वही एक मशहूर गायक का भी नाम है।
6- उसने बंदूक चलाई और सोना ले अया,
उसे नही हुई जेल,
क्योंकि उसने खेला था ओलंपिक में खेल।
7- उस क्रिकेटर का नाम बताओ...जिसकी बैटिंग से
लगे थे विरोधी टीम को धक्के,
क्योंकि उसने मारे थे उक ओवर में छः-छः छक्के।

क्या देता। उसने मुझसे कहा, ''आप मेरे कमरे में आ जाइए।'' मैं भला कैसे इनकार करता। चुपचाप अपने बिस्तर को उसके कमरे में ले आया। मगर अन्दर ही अन्दर डर के मारे मेरा बुरा हाल था। मुझे विश्वास था कि ये अंग्रेज़ चुप नहीं बैठेंगे। ज़रूर कुछ न कुछ करेंगे। चौकीदार नाश्ता लेकर आया तो उसका भी वही हाल था। पत्ते की तरह थर-थर काँपता हुआ वह धीरे से बोला, ''सरकार आपने तो कमाल कर दिया। ऐसा तो कभी देखा। न सुना। मगर ये गोरे लोग यूँ चुपचाप बैठने वाले नहीं हैं।''

जब एक अंग्रेज़ हमारे कमरे के अन्दर आया, मैं उछल कर बिस्तर पर बैठ गया। मैं समझ गया कि अभी वह जेब से पिस्तौल निकालेगा और ब्लडी मूर्खिस्तानी कह कर हम दोनों को गोली से उड़ा देगा।

अब यह बात अलग है कि उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। इसकी बजाए वह डरते-डरते जवान से बोला, ''आपके मशवरे के मुताबिक हमने तो अपना बिस्तर बरामदे में बिछा लिया है, मगर एक साथी हमारा बीमार है। अगर आप उसे अपने कमरे में लिटा लें...।''

जवान ने कहा, ''भेज दो उसे।''

थोड़ी देर बाद एक बीमार अंग्रेज़ धीरे से अन्दर आया, हम दोनों पर एक ही दृष्टि डाली और फिर सोफे पर पसर गया। तब तक जवान ने भी रजाई तान ली थी, मगर मुझे नींद नहीं आ रही थी। बार-बार मुझे यही लग रहा था कि ये अंग्रेज़ इतनी बेईज़्ज़ती के बाद चुप बैठने वाले नहीं हैं, जरूर उन्होंने किसी खास उद्देश्य से बीमारी के बहाने अपने साथी को हमारे कमरे में भेजा है।

किसी तरह नींद आयी तो अचानक एक अजीब से शोर के कारण मेरी आँख खुल गयी। ग़ौर करने पर मालूम हुआ कि अंग्रेज़ नींद में भयंकर तरीके से खर्राटे ले रहा है। यह शोर उन्हीं खर्राटे का था। फिर मैंने जवान को देखा, जो अपने बिस्तर पर दोनों हथेलियों से कान मूंदे बैठा था।

ऐसे डरावने खर्राटे के बीच निश्चय ही किसी को नींद नहीं आ सकती थी। जवान ने कहा, ''देखा आपने, अंग्रेज़ बदला ले रहे हैं, इसीलिए इस खर्राटा प्रसाद को भेजा है कि हम सो न सकें। मगर कोई बात नहीं। हम भी इनसे कम नहीं। हमारे पूजापाठ का समय हो गया है।''

जवान ने अंग्रेज़ के सिर के एकदम करीब अपनी मृगछाल बिछायी और उस पर बैठकर जाप करने लगा। इतने ज़ोर शोर से शायद किसी तपस्वी ने भी जाप न किया होगा। कमरे की दीवारों से पूजा का स्वर टकरा कर कान फाड़ देने वाली प्रतिध्वनि पैदा कर रहा था। पूरे गेस्ट हाउस को वह गूंज कँपकँपाने लगी। उस गूंज में अंग्रेज़ के खर्राटे यूँ दबकर रह गए जैसे नक्कारखाने में चिड़िया की आवाज़।

शीघ्र ही कमरों के दरवाज़े भड़भड़ा कर खुलने लगे। बहुत से कदमों की आहट हमारे कमरे की तरफ बढ़ने लगी। तभी सोफे पर सोया हुआ अंग्रेज़ चौंक कर उठ बैठा और यूँ आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा, जैसे पागल हो गया हो। दरवाज़ा पीटा जाने लगा। हमने दौड़कर दरवाज़ा खोला तो सारे अंग्रेज़ अन्दर आ गए। उन्होंने हाथ जोड़कर अपनी ग़लती की माफी माँगी और खर्राटे वाले अंग्रेज को अपने साथ ले गए। ❑❑❑

## शब्दों को सही बिठाइये-सही जोक बनाइये

**यहाँ एक जोक को उलट-पलट कर पेश किया जा रहा है। आप इस जोक को सही कीजिये और खाली फ्रेम में लिखिये। (उत्तर इसी अंक में है।)**

**उलट-पलट जोक**

**मुझसे शादी करने के लिये अपनी नहीं-नहीं ससुरजी, मैं यह बिल्कुल कि हम दोनों में चाहिए न? आपकी से किसी एक को तो पैसे कमाने बेटी नौकरी छोड़ दे। आखिर गृहस्थी नहीं चाहता हूँ चलाने के लिये**

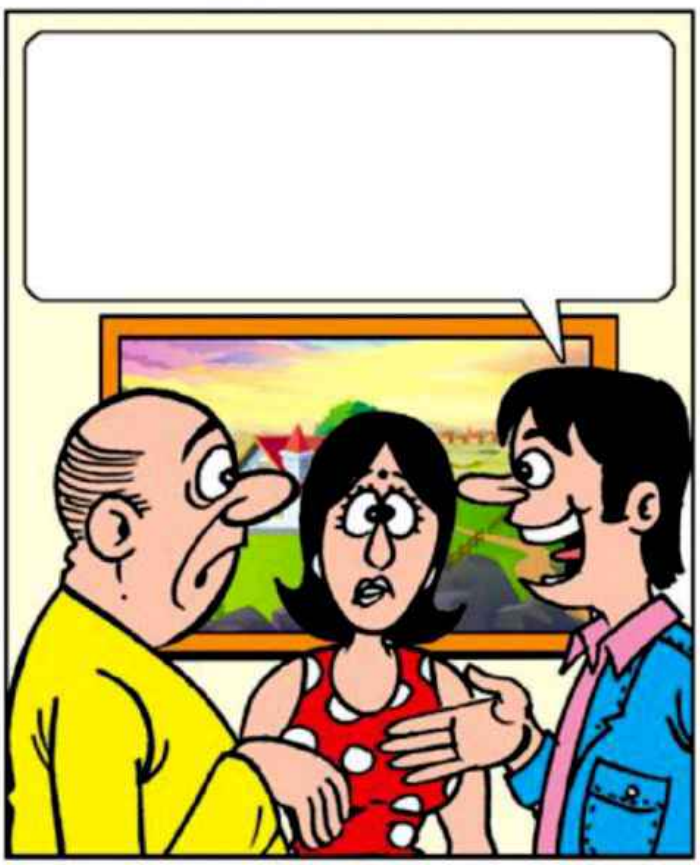

https://telegram.me/boloji

मूर्खिस्तान में हो रहे चुनावों पर विशेष:

# मूर्खिस्तानी ताने-पे-ताना

# बंद करो ये गाना

सुखवंत.

बंदा ये बिंदास है...बंदा ये बिंदास है...।
रामदास जी को वोट दें।
बंद करो ये गाना! मूर्खों में बिंदास नही रामदास हूँ। इसी तरह गलत प्रचार करते रहे, तो मैं जीत चुका इलैक्शन!
बर्दाश्त नही कर सकता, अब दूर नही रह सकता, एक दिन, तेरे बिन...।
C.M.
बंद करो ये गाना! तुम्हारी शादी मुझसे हुई है, न कि इस कुर्सी से।
आ रंग दे मुझे रंग दे, हाँ रंग दे रंग दे मुझे रंग दे...
बंद करो ये गाना! रंग के लिए पैसे ही कहाँ बचे हैं? ये लो चूना, जो तुमने पाँच सालों तक हमें लगाया है।

https://telugubanned.blogspot.com

http://t.me/boksmag

# आप हैं चित्रकार- बनाइये हास्य कलाकार

बिंदु वाले हिस्सों को काले स्केच पेन से काला कीजिए।

मेरा नाम.....मैंने जो हास्य कलाकार बनाया उसका नाम.....।

https://telegram.me/booksnag

इस पृष्ठ को काट कर अपने कमरे में लगाइये। (हल इसी अंक में है।)

# मूर्खिस्तान
# मूर्खों का स्वर्ग

● डॉक्टर मौहम्मद अरशद खान

एक बार मशहूर लेखक मूर्खमल 'अज्ञानी' ने एक किताब लिखने की सोची, जिसमें दुनिया भर के मूर्खों के किस्से हों। वह बहुत दिनों से चाह रहे थे कि अपनी बिरादरी वालों के लिए कुछ ऐसा कर जाएँ, जिससे जमाना याद करे। उन्होंने किताब का नाम भी सोच रखा था - 'मूर्खों की महागाथा'।

दुनिया भर में चतुरों पर किताबें भरी पड़ी थीं, लेकिन मूर्ख बेचारों को किसी ने इस लायक ही न समझा था। इसलिए उन्होंने ठान लिया था कि मूर्खों की सच्चाई को दुनिया के सामने लाकर रहेंगे। उनका मानना था कि दुनिया सिर्फ बुद्धिमानों के ही भरोसे नहीं चल रही है, उसमें मूर्खों का भी गहरा योगदान है। वह मन ही मन पुलकित हो रहे थे कि इस किताब के छपते ही दुनिया में मशहूर हो जाएँगे। मूर्खों की बिरादरी उन्हें सिर-आँखों पर बिठा लेगी।

मूर्खमल अपने दादा जड़बुद्धि के पास आशीर्वाद लेने गए। जड़बुद्धि सौ बरस पार कर चुके थे, पर देखने में साठ-सत्तर से ज्यादा के नहीं लगते थे। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे मूर्खता परवान चढ़ती जा रही थी। उनके दिमाग में मूर्खता के ऐसे नए-नए आइडिआ आते थे कि बुद्धिमान भी क्या सोच पाते।

मूर्खमल की बात सुनकर वह बोले, "शाबाश बेटा, तुम तो मूर्खता में मुझसे भी दस कदम आगे निकले। ईश्वर ने कामयाबी दी तो दुनिया में मूर्खों के नाम का डंका बज जाएगा। बुद्धिमान हमारे चरणों में गिर पड़ेंगे। बेटा जा, मूर्खिस्तान चला जा। वह मूर्खों का स्वर्ग है। तुझे वहाँ ऐसे-ऐसे किस्से मिलेंगे कि तेरी किताब चुटकियों में पूरी हो जाएगी।"

जड़बुद्धि से आशीर्वाद लेकर मूर्खमल मूर्खिस्तान की ओर चल पड़े। जैसे ही वह मूर्खिस्तान की सीमा पर पहुँचे कि उन्हें एक आदमी जमीन पर लोटता-पोटता दिखा। लोट-पोटकर उसने धूल का बवंडर खड़ा कर दिया था। मूर्खमल ने सोचा

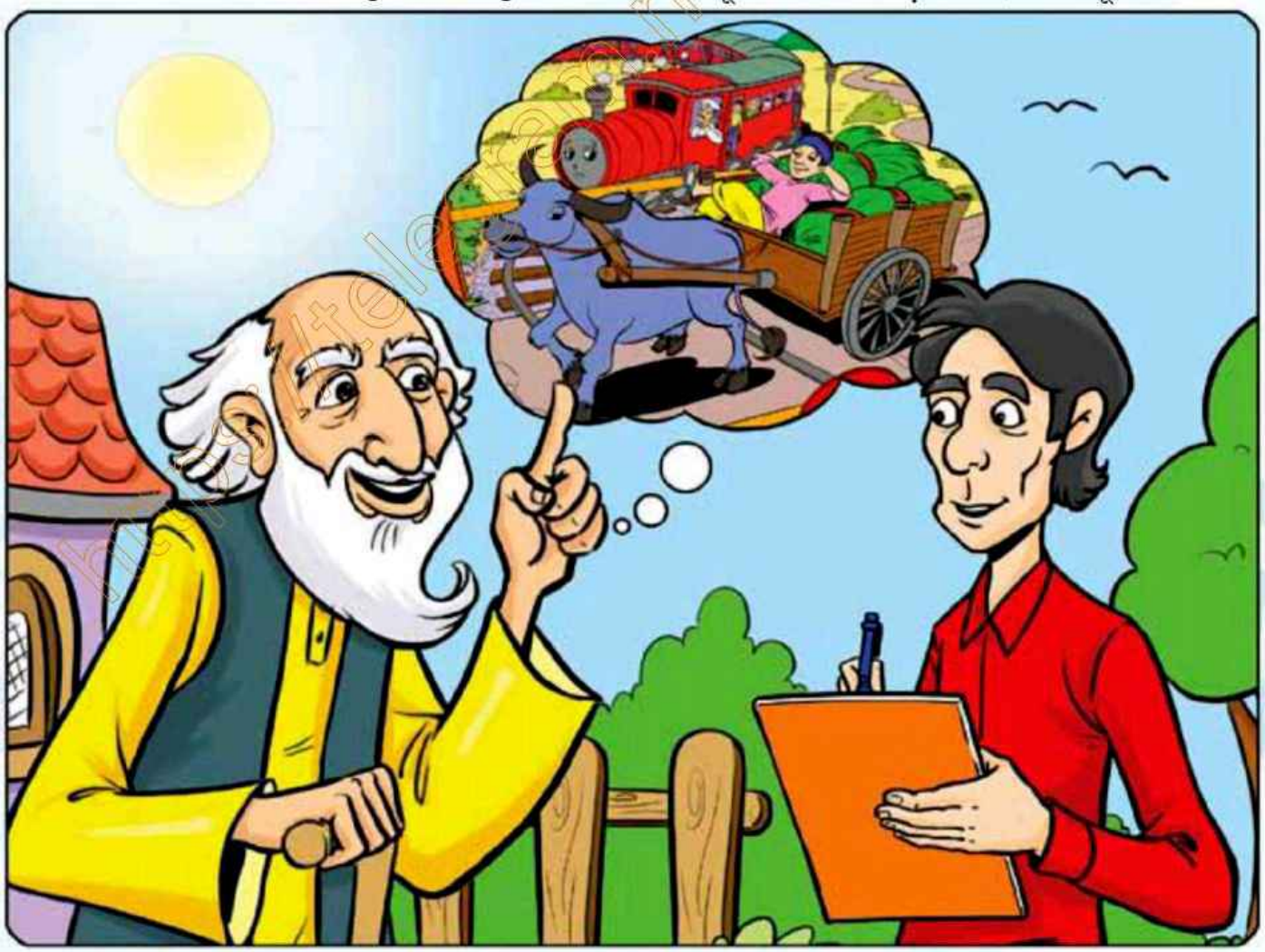

क्यों पचड़े में पड़ें। अस्पताल लेकर जाएँगे तो बिना मतलब की झंझट होगी। समय अलग बर्बाद होगा। पुलिस-वुलिस का चक्कर हुआ तो और मुसीबत हो जाएगी। वह उसे अनदेखा करके आगे बढ़ चले।

पर मूर्खमल ठहरे लेखक। वह लेखक भी क्या जो संवेदनशील न हो। आज की दुनिया में वैसे भी संवेदनशीलता सिर्फ मूर्खों में ही बची है। आखिरकार वह लौट आए और उस आदमी को सँभालते हुए बोले, ''क्या हो गया भाई? इस तरह क्यों तड़प रहे हो? पेट में दर्द हो रहा है या किसी ने जहर खिला दिया?''

मूर्खमल की बात सुनते ही वह आदमी उठ बैठा और लगा उन्हें खरी-खरी सुनाने, ''जहर-संखिया तुम्हें मिले। मैं भला क्यों खाऊँ? पेट दर्द तुम्हें हो। तुम्हारे बाल-बच्चों को हो। मुझे क्यों होने लगा?''

मूर्खमल को आदमी की बात पर बिल्कुल भी गुस्सा न आया। बल्कि वह हैरानी से बोले, ''भले मानस, क्षमा करो अगर कुछ गलत कहा। पर इतना तो बता दो कि इस तरह जल बिन मछली बने क्यों तड़प रहे थे?''

''वह तो अपनी अम्मा की भुलक्कड़ी भोग रहा हूँ।'' आदमी ने खीझते हुए जवाब दिया।

''अम्मा की भुलक्कड़ी?'' मूर्खमल हैरान रह गए, ''जरा पूरी बात तो बताओ।''

वह आदमी बताने लगा, ''दरअसल अम्मा ने मुझे दूध पीने को दिया था। पर उसमें शक्कर मिलाना भूल गई। फीका दूध पीने की मुझे आदत नहीं। इसलिए मैं शक्कर फाँककर लोट-पोट हो रहा था ताकि पेट में अच्छी तरह मिल जाए।''

आदमी की बात सुनते ही मूर्खमल की बाछें खिल गईं। उन्हें अपनी किताब के लिए पहला किस्सा मिल गया था। उन्होंने फौरन कागज-कलम निकाला और सारी बातें नोट कर लीं। फिर आगे बढ़ चले। सोच-सोच कर खुश हो रहे थे कि चलो शुरुआत तो अच्छी हो गई।

https://t.me/telugu_children_ebooks

थोड़ी दूर चलने के बाद उन्हें एक जगह भीड़ दिखाई दी। उनका लेखक मन जाग उठा। वह फौरन उधर लपक लिए। पास जाकर देखा तो एक कुएँ के पास लोग इकट्ठा होकर झाँक रहे थे। कुछ लोग बगल के पोखरे से पानी ला-ला कर उसमें भर रहे थे। आसपास खूब शोर मच रहा था। पानी गिरने से खूब किचकिच हो रही थी।

मूर्खमल को कुछ भी समझ न आया। वह पास पहुँचकर बोले, ''अरे भाई क्या हो गया? लोग कुएँ से पानी निकालते हैं, तुम उसमें बाल्टी उड़ेल रहे हो?''

एक आदमी जो उनका मुखिया लग रहा था, पास आया और बोला, ''हमारे बच्चे की फुटबॉल खेलते समय कुएँ में गिर गई है। हम लोग उसे निकालने की कोशिश में लगे हैं।''

''पर इस तरह पानी भरने से क्या होगा?''

''अजी, जब कुएँ में पानी ऊपर तक भर जाएगा तो फुटबॉल तैरकर अपने आप ऊपर आ जाएगी।'' इतना बता कर वह आदमी कुएँ के पास चला गया और लोगों को जल्दी-जल्दी पानी भरने के लिए उकसाने लगा।

मूर्खमल मूर्खिस्तानियों की मूर्खता पर लाजवाब होकर सोचने लगे कि अब तक हम खुद को सबसे बड़ा मूर्ख समझे हुए थे पर ये मूर्खिस्तानी लोग तो हमसे भी दस कदम आगे हैं। उन्होंने कॉपी-कलम निकाला। पूरा किस्सा नोट किया और गदगद होते हुए आगे बढ़ चले।

मूर्खमल कुछ दूर और चले तो उन्हें भूख लग आई। सामने उन्हें एक होटल दिखा। हलवाई गरमा-गरम जलेबियाँ तल रहा था। मूर्खमल के मुँह में पानी आने लगा। लपक कर होटल पर पहुँचे और बोले, ''अरे भैया, फटाफट आधा किलो जलेबी तोल दो। भूख से पेट में मरोड़ उठ रहे हैं।''

हलवाई ने उनकी बात नहीं सुनी। वह जलेबियाँ तल-तलकर ढेर ऊँचा करता रहा। जब मूर्खमल ने दोबारा पूछा तो उसने उचटती-सी निगाह डाली और बोला, ''जलेबी नहीं है।''

मूर्खमल हैरत में पड़ गए। थोड़ा गुस्सा भी आया। बोले, ''सामने जलेबियों का हिमालय खड़ा कर रखा है और कहते हो नहीं हैं?''

''हैं तो, पर ये तुम्हारे लिए नहीं हैं। ये जलेबियाँ मूर्खिस्तान के वैज्ञानिक मैडमैन हॉफविट की हैं।''

मूर्खमल अपनी भूख को दबाते हुए बुदबुदाए, ''अच्छा, ऑर्डर की होगीं। चलो, कोई और दुकान देखता हूँ।''

''कहीं नहीं मिलेंगी...'' हलवाई उसी तरह जलेबियाँ तलता हुआ बोला, ''मूर्खिस्तान की सारी जलेबियाँ मैडमैन की प्रयोगशाला में ही जाती हैं।''

https://telegram.me/pw_magazine

मूर्खमल हैरत में पड़ गए। यह मैडमैन इंसान है या भूत? इतनी जलेबी इंसान तो खा नहीं सकता? सच्चाई जानने के लिए वह वैज्ञानिक के घर की ओर चल दिया।

मैडमैन का घर पूछने की उन्हें जरूरत नहीं पड़ी। जिधर मक्खियों और मधुमक्खियों के झुंड जा रहे थे, उधर ही चल पड़े। मक्खियों की भन-भन के बीच जगह बनाते मूर्खमल किसी तरह मैडमैन की प्रयोगशाला में पहुँचे। मैडमैन जलेबियों के ऊँचे-ऊँचे ढेरों के बीच अपना माइक्रोस्कोप लिए कुछ जाँच रहे थे। हर तरफ मिठास की चिप-चिप फैली हुई थी।

मूर्खमल थोड़ी देर तक देखते रहे। मैडमैन को काम में मगन देख उन्होंने टोकना उचित नहीं समझा। पर जब मक्खियों और मधुमक्खियों ने उन्हें हेलीपैड बनाकर उन पर लैंडिंग शुरू कर दी तो उनसे न रहा गया। उन्होंने मक्खियों की भनभनाहट के बीच चिल्ला कर कहा, ''वैज्ञानिक जी। आप ये क्या कर रहे हैं?''

मैडमैन ने एक नजर उठाकर उनकी ओर देखा और चुप रहने का इशारा करते हुए बोले, ''श...श...श... मैं बहुत महत्वपूर्ण खोज में लगा हूँ।''

मूर्खमल से चुप न रहा गया। वह बोले, ''पर आखिर आप कर क्या रहे हैं?''

मैडमैन ने अपना माइक्रोस्कोप रख दिया और हताशा से बोले, ''मैं पिछले पंद्रह सालों से इस बात की खोज में लगा हूँ कि जलेबी के अंदर रस कहाँ से भरा जाता है? एक-एक जलेबी चैक कर डाली पर अब तक कोई कामयाबी नहीं मिली।''

मूर्खमल खुश हो गए। उन्हें अपनी किताब के लिए जबर्दस्त किस्सा मिल गया था। प्रयोगशाला से बाहर आए तो मधुमक्खियों ने उनका हुलिया भले ही बिगाड़ दिया था, पर वह बेहद खुश थे। वह मक्खियों की भनभनाहट में अपनी गुन-गुन मिलाते हुए आगे बढ़ चले।

आगे उन्हें एक पेड़ के नीचे एक आदमी बैठा दिखा। कपड़े फटे, बाल बिखरे, दाढ़ी बढ़ी हुई। हाथ में एक पोथा थामे हुए आसमान की ओर निहार रहा था। बीच-बीच में पोथे में कुछ लिखता भी जाता।

मूर्खमल ने सोचा हो न हो यह कोई पागल है। इससे उलझना ठीक नहीं। कहीं मारपीट न कर बैठे। पर थोड़ा आगे बढ़ते ही उनका मन कुलबुलाने लगा। वह अपनी किताब के लिए हर

https://t.me/bookstore

खतरा मोल लेने को तैयार थे। वह वापस लौटे और डरते-डरते बोले, ''भाई साहब, आप इस पोथे में क्या लिख रहे हो?''

वह आदमी इतनी जोर से हँसा कि मूर्खमल डर गए। उसने कहा, ''मैं मूर्खिस्तान का सबसे विद्वान प्रोफेसर हूँ। आजकल मैं मूर्खिस्तान की डिक्शनरी तैयार कर रहा हूँ।''

मूर्खमल ने हैरानी से पूछा, ''पर इस डिक्शनरी में नया क्या है?''

वह आदमी फिर हँसा और बोला, ''इसमें मैंने मूर्खिस्तान में प्रचलित सारे शब्दों को इकट्ठा किया है। इसमें मूर्ख का मतलब बुद्धिमान है, काले का मतलब सफेद है, रात का मतलब दिन है, उल्टा का मतलब सीधा है। और जल्द ही मेरा काम पूरा होने वाला है।''

मूर्खमल खुशी से फूल गए। उन्हें लगा कि इसी तरह किस्से मिलते रहे तो उनकी किताब जल्द ही पूरी हो जाएगी।

वह मस्ती से गुनगुनाते आगे बढ़ चले। कुछ दूर चलते ही देखा कि लोगों ने पेड़ों में रस्सियाँ बाँध रखी हैं और उन्हें हिलाने की कोशिश कर रहे हैं। छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े सब उसमें शामिल हैं। लोग चिल्ला रहे हैं, ''हाँ, हाँ और जोर लगाओ। और तेज हिलाओ। अब थोड़ी-थोड़ी लग रही है।''

भीड़ में जगह तलाशते मूर्खमल किसी तरह पास पहुँचे और पूछा, ''अरे भाई यह क्या हो रहा है? पेड़ों को इस तरह क्यों हिलाया जा रहा है?''

एक बूढ़ा आदमी सामने आया और बोला, ''आजकल गर्मी का मौसम है। पर हवा बिल्कुल नहीं चल रही है। हम लोग कोशिश में लगे हैं कि पेड़ों को हिला कर किसी तरह हवा चलाई जाए।''

मूर्खमल लाजवाब हो गए। उन्हें समझ में आ गया कि दादा जड़बुद्धि ने मूर्खिस्तान को मूर्खों का स्वर्ग क्यों कहा था। उनका मन इतना रमा कि उन्होंने वहीं बसने का इरादा बना लिया।

बहरहाल, मूर्खमल जी अब भी मूर्खिस्तान में जमे हुए हैं। उनकी किताब के कई हजार पृष्ठ भर चुके हैं। हम सब प्रार्थना करते हैं कि उनकी किताब जल्द पूरी हो और हमें मूर्खों के ढेर सारे किस्से पढ़ने को मिलें। ❑❑❑

मूर्खिस्तान की रेल तथा रोडवेज़ सेवा

व्यापारी मूर्खिस्तानी

मूर्खिस्तानी ओलंपिक

मूर्खिस्तान एयरवेज़

मदारी मूर्खिस्तानी

https://telegram.me/pdfbooksfree

**( पर्दा खुलता है। मंच पर मूर्खिस्तान हाई स्कूल का दृश्य है। एक ओर हेडमास्टर साहब का कार्यालय है। वो बैठे कुछ लिख रहे हैं। चपरासी बाहर स्टूल पर बैठा ऊँघ रहा है। तभी दूसरे कोने से धोती-कुर्ता पहने, सिर पर टोपी लगाये एक मास्टर का प्रवेश। कई लड़के उनके पीछे-पीछे हैं। )**

लड़के : मास्साब!

मास्टर साहब : कहो, क्या बात है?

एक लड़का : मास्साब, कल आपने बताया था कि मूर्खिस्तान का राष्ट्रीय पशु बकरा है?

मास्टर साहब : हाँ, बताया था, तो?

लड़का : परंतु जब मैंने पिताजी को यह बताया, तो वो मुझे मारने लगे। आप हमें सही बात क्यों नहीं पढ़ाते?

मास्टर साहब : अरे मूर्खों, तुम्हें इतना भी नहीं मालूम। मेरा वेतन कुल पचास रुपये है। इसलिए मैं पचास रुपये वाली पढ़ाई ही तुम्हें कराता हूँ। अधिक वेतन मिलेगा, तो अच्छी पढ़ाई पढ़ाऊँगा। चलो चुपचाप बैठ जाओ।

**( मास्टर जी ऊँघने लगते हैं। लड़के एक-एक कर कक्षा से खिसक जाते हैं। तभी एक लड़का कमीज़ पाजामा पहने हेडमास्टर के कमरे की ओर जाता नज़र आता है। चपरासी उसे देख लेता है। )**

चपरासी : कौन है? किससे मिलना है?

लडका : हेडमास्टर साहब से...

चपरासी : पहले अपना नाम एक सादे काग़ज़ पर लिख कर दो। फिर मैं उसे हेडमास्टर के पास ले जाऊँगा। फिर जब वो बुलायेंगे, फिर जाना...

लड़का : इस फिर-फिर के चक्कर में तो हम ही फुर्र हो जायेंगे। यह लो, मेरा नाम का परचा और जल्दी से हेडमास्टर साहब को दे आओ।

**( चपरासी काग़ज़ लेकर अंदर जाता है। थोड़ी देर में वापस आकर अनाड़ीराम को अंदर भेजता है। )**

चपरासी : आपने मुझे पहचाना सर?

https://telegram.me/ebooksnagar

हेडमास्टर : नहीं तो।

अनाड़ीराम : मैं वही हूँ, जो आपका कार्टून बनाता था, सिर पर स्याही उड़ेल देता था। मेज़ की दराज़ में मेंढक डाल देता था...

हेडमास्टर : अब तुम किसलिए आये हो?

अनाड़ीराम : अपना सर्टिफिकेट वापस करने।

हेडमास्टर : क्या बक रहे हो?

अनाड़ीराम : सर, इस सर्टिफिकेट में लिखा है कि मैंने इस स्कूल में शिक्षा हासिल की है। परंतु सच तो यह है कि मैंने यहाँ घास खोदी है। इसलिए मेरी फीस आप वापस कर दें।

हेडमास्टर : इसका क्या सबूत है तुम्हारे पास कि तुमने इस स्कूल में शिक्षा के नाम पर घास खोदी है?

अनाड़ीराम : इससे बढ़कर और क्या सबूत दूँ कि मुझे तीन कार्यालयों से यह कह कर निकाल बाहर किया गया कि तुम कुछ नहीं जानते। आपको अब भी विश्वास न हो, तो आप खुद मेरी परीक्षा ले लें।

हेडमास्टर : तुम पागल हो।

अनाड़ीराम : पागल-वागल छोड़िये। अगर आप मेरी फीस वापस नहीं करेंगे, तो मैं स्कूल पर मुकदमा कर दूँगा।

हेडमास्टर : क्या... मुकदमा? अच्छा ठहरो, मैं मास्टरों से सलाह लेकर तुम्हारी परीक्षा लेता हूँ... चपरासी!

**(चपरासी अंदर आता है। अनाड़ीराम बाहर बैठ जाता है। हेडमास्टर साहब चपरासी से सभी मास्टरों को बुलवाते हैं।)**

हेडमास्टर (मास्टरों से) : मैंने आप लोगों को एक विचित्र और अनोखे मुद्दे पर बात करने के लिए बुलाया है। कुछ वर्ष पहले के एक विद्यार्थी का दावा है कि आप लोगों ने उसे शिक्षा के नाम पर धोखा दिया है। इसलिए वह अपनी फीस वापस माँगने आया है और अपनी बात साबित करने के लिए वह फिर से परीक्षा देना चाहता है।

एक मास्टर : फिर से परीक्षा? अगर यह बात है, तो हम बहुत ही आसान प्रश्न पूछ कर उसे

# अनोखा विस्फोट

30 जून 1908 के दिन रूस में एक ऐसी घटना घटी जिससे पूरा विश्व आश्चर्यचकित रह गया था। आकाश से एक उड़ता हुआ आग का गोला साइबेरिया की धरती के पास आते-आते एक ज़ोरदार धमाके के साथ फूट पड़ा। विस्फोट से पूरा साईबेरिया काँप गया।

विस्फोट का असर बहुत ही तेज़ और भयानक था। जैसे ही विस्फोट हुआ, घने धुएँ से चारों तरफ का इलाका ढक गया। विस्फोट कितना भयंकर था इसका अंदाज़ा इसी बात से लग सकता है कि 20 मील के भीतर लगे हरे-भरे पेड़ गिर गये और 40 मील दूर तक के इंसान बेहोश हो गये, मकान ढह गये। 400 मील के दायरे के अंदर जितने मवेशी थे, वो ज़मीन पर गिर पड़े।

जब वैज्ञानिक घटनास्थल की तरफ जा रहे थे तो उन्होंने सोचा कि घटनास्थल पर एक बड़ा-सा गड्ढा मिलेगा। उनके ख्याल से कोई बड़ा तारा गिरकर पृथ्वी से टकरा गया होगा, परन्तु उस स्थान पर उन लोगों को कोई भी गड्ढा नहीं मिला। जहाँ पर विस्फोट हुआ था, दरअसल वहाँ और क्षेत्र के मुकाबले नुकसान नहीं के बराबर हुआ था। घटनास्थल पर पेड़ों को भी नुकसान नहीं पहुँचा था।

वैज्ञानिकों ने जो अध्ययन किया उसके मुताबिक विस्फोट का कारण उल्का नहीं था। विस्फोट धरती की सतह से काफी ऊँचाई पर हुआ था। अगर तारा टूट कर पृथ्वी पर गिरा होता तो वहाँ बहुत बड़ा सा गड्ढा हो जाना चाहिए था।

कई वैज्ञानिकों का मत था कि विस्फोट का काण आणुविक शक्ति से लैस उड़न तश्तरी के कारण था। बहरहाल यह बहुत अच्छा हुआ था कि विस्फोट जंगली इलाके में हुआ, नहीं तो जान-माल का काफी नुकसान हो जाना था। ❑❑❑

https://telegram.me/bookstmag

अक्लमंद घोषित कर देंगे।

**( इस सुझाव पर सभी मास्टर खुश हो जाते हैं। बाहर से अनाड़ीराम को बुलाया जाता है। )**

अनाड़ीराम : आप लोग शायद मेरी परीक्षा लेंगे। पूछिए प्रश्न और मुझे अशिक्षित घोषित कीजिए।

एक मास्टर : ज्वार भाटा किसे कहते हैं ?

अनाड़ीराम : ज्वार एक अनाज का नाम है और भाटा बैंगन को कहते हैं। ये दोनों हमारे मूर्खिस्तान में बहुत अधिक होते हैं।

**( वह मास्टर सिर पकड़ लेता है। )**

अनाड़ीराम : क्या मैंने कुछ ग़लत बताया? और अगर मेरा उत्तर सही नहीं है, तो फिर निकालिए मेरी फीस।

वही मास्टर : नहीं... नहीं, तुमने बहुत अच्छा उत्तर दिया है।

दूसरा मास्टर : अच्छा बताओ, चँद्रग्रहण कैसे लगता है ?

अनाड़ीराम : जब चाँदवाली बुढ़िया सूत कातते-कातते थक कर सो जाती है, तो चँद्रग्रहण लग जाता है।

वही मास्टर : बहुत खूब! सही जवाब।

तीसरा मास्टर : ताज महल किसने बनाया था ?

अनाड़ीराम : मज़दूरों ने।

वही मास्टर : अरे वाह! तुम तो सचमुच ज्ञानी हो।

एक और मास्टर : कुतुब मीनार कैसे बनी थी ?

अनाड़ीराम : कुतुब मीनार को पहले ज़मीन पर लिटा कर बनाया था। बाद में क्रेन से खींच कर उसे खड़ा कर दिया था।

वही मास्टर : क्या बकवास है। तुम कुछ नहीं जानते।

अनाड़ीराम : मेरा भी कहना यही है। लाइए, मेरी फीस वापस कीजिए।

हेडमास्टर (धीरे से) : अरे मास्टर साहब, आप यह क्या ग़ज़ब कर रहे हैं ?

वही मास्टर : अरे हाँ, अनाड़ीराम जी। मैं तो मज़ाक कर रहा था। आपने सचमुच सही उत्तर दिया है।

एक दूसरा मास्टर : अच्छा अनाड़ीराम जी। गणित का एक प्रश्न बताइए। एक महिला एक कमीज़ एक घंटे में सीती है, तो चार घंटे में चार महिलाएँ कितनी कमीज़ें सिलेंगी ?

अनाड़ीराम : एक भी नहीं। क्योंकि चार घंटे तो वो बातों में ही गुज़ार देंगी।

## दो एक जैसी तोपें खोजिये (उत्तर इसी अंक में है।)

https://telegram.me/boorsmag

वही मास्टर : गलत, एकदम गलत...। किन गधों ने तुम्हें गणित पढ़ाया है?

अनाड़ीराम : यह सब आप लोगों की ही देन है।

वही मास्टर (हेडमास्टर से) : मेरा विचार है कि इनकी सारी फीस वापस कर दी जाये।

हेडमास्टर : यह क्या कह रहे हैं आप?

वही मास्टर : मैं ठीक कह रहा हूँ। अनाड़ीराम, बताओ, तुम्हें कितना पैसा मिलना चाहिए?

अनाड़ीराम (हिसाब लगा कर) : कुल मिला कर मेरा बारह सौ पचहत्तर रुपया खर्च हुआ है। जल्दी निकालिए।

वही मास्टर : ज़रा हमें भी तो हिसाब समझा दीजिए।

**(अनाड़ीराम उन्हें हिसाब समझाने लगता है। हेडमास्टर साहब सिर पकड़ कर बैठ जाते हैं।)**

वही मास्टर : अनाड़ीराम, तुम्हारे हिसाब में गलती है।

अनाड़ीराम : यह नहीं हो सकता। मैं हिसाब में कभी गलती नहीं करता। मुझे अनपढ़ और बेवकूफ मत समझिए... (स्वत:) ओफ! यह मैं क्या कह गया?

वही मास्टर : हाँ, अनाड़ीराम, मैं ही ग़लती पर था। तुम सचमुच समझदार और शिक्षित हो।

अनाड़ीराम : नहीं, मैं मूर्ख हूँ। आपने मेरे साथ धोखा किया है... मैं... मैं... मैं...

हेडमास्टर : अब चुपचाप यहाँ से चले जाओ... वरना...

अनाड़ीराम : वरना... क्या करेंगे आप?

हेडमास्टर : वरना तुम्हें धक्के मार कर बाहर करा दूँगा।

अनाड़ीराम : आप मेरी फीस वापस कर दें वरना...

हेडमास्टर : वरना तुम क्या कर लोगे?

अनाड़ीराम : वरना क्या! मैं खाली हाथ ही यहाँ से चला जाऊँगा, लीजिए जाता हूँ।

❑❑❑

**(अनाड़ीराम मंच से बाहर चला जाता है। पर्दा गिरता है।)**

https://telegram.me/bookstube

# नन्हे सम्राट रंग भरो प्रतियोगिता

## प्रतियोगिता नंबर 205

नोट : प्रतियोगिता में चुनी गई तीन सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को पुरस्कार स्वरुप नन्हे सम्राट की और से सेल्फी स्टिक भेजी जाएगी जिससे आप अपने स्मार्ट फोन से जोड़ कर सेल्फी खींच सकेंगे ।

5 विजेताओं को 'सचिन आला रे' पुस्तक भेजी जायेगी

### नियम :

1. यहाँ दिये गये चित्र को अपने मनचाहे रंगों में रंगिये।
2. यह प्रतियोगिता 15 साल तक के बच्चों के लिए है।
3. एक प्रतियोगी जितनी चाहे प्रविष्टियाँ भेज सकता है, लेकिन प्रत्येक के साथ कूपन भेजना आवश्यक है।
4. निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा तथा इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा।
5. फोटो कॉपी मान्य नहीं है।

**लिफाफे पर यह टोकन चिपकाइये**

नन्हे सम्राट

**रंग भरो प्रतियोगिता:205**

दीवान पब्लिकेशंस प्रा. लि.
ए-6/1 मायापुरी, फेस 1,
नई दिल्ली-110064

**अंतिम तिथि : 16.06.2019**

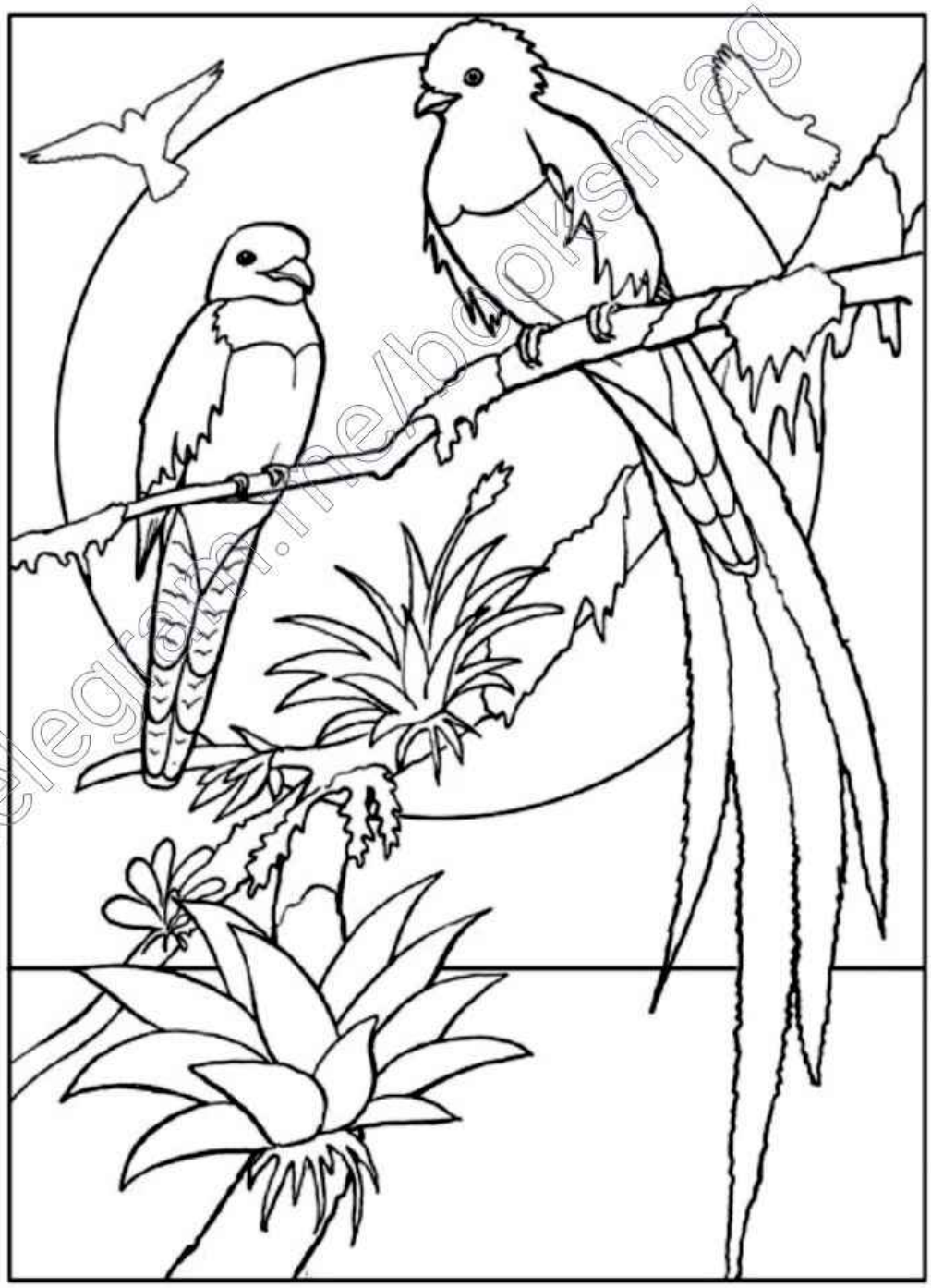

https://telegram.me/bookstag

नाम.....पिता का नाम..... उम्र..... पता.....

.....पिन. ☐☐☐☐☐☐ फोन नं.....

# रोचक समाचार

## समुद्र के गहरे पानी में लीजिए खाने का लुफ्त

यूरोप उत्तरी अटलांटिक महासागर के दाएं तट पर बसा है और इसी तट से सटा हुआ एक देश है नार्वे। अगर आप नार्वे जाएं तो न सिर्फ इस दूसरे सबसे बड़े महासागर की विशालता को देख सकते हैं बल्कि इसके गहरे पानी में खाना खाने का रोमांचक अनुभव भी कर सकते हैं। दरअसल नार्वे के समुद्र के किनारे बसे लिंडसनेस शहर में अटलांटिक महासागर के अंदर बनाए गए एक खूबसूरत रेस्टोरेंट को हाल ही में लोगों के लिए खोल दिया गया है। इस रेस्टोरेंट का नाम अंडर है और वास्तव में नार्वे में इस शब्द का मतलब वंडर होता है। यह रेस्टोरेंट आपको ऐसा ही अनुभव कराता है।

विशाल कंक्रीट ट्यूब की तरह दिखने वाले इस रेस्टोरेंट का आधे से ज्यादा हिस्सा समुद्र के पानी में डूबा हुआ है जिसका डिजाइन नार्वे के ही वास्तुविद फर्म स्नोहेता ने तैयार किया

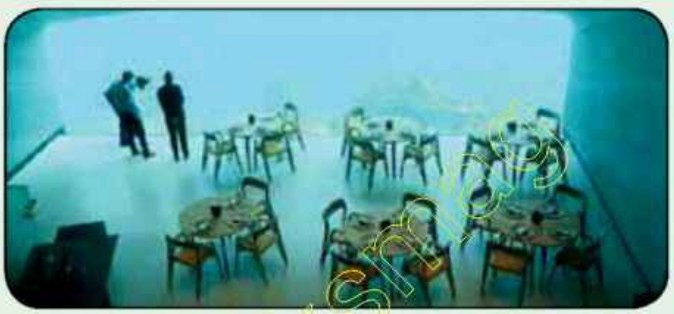

है। इसमें अंदर जाते समय शुरुआत में सउना (स्टीम बाथ) में प्रवेश करने जैसा अनुभव होता है। सीढ़ियों से उतर कर करीब 8 मीटर अंदर जाने पर विशाल मजबूत पारदर्शी कांच की दीवारों के घेरे में 40 मेहमानों के बैठने लायक विशाल डायनिंग एरिया है। इसका मेन्यू सीफूड और स्थानीय वैरायटी आधारित है। हां आपको ऐसा रोमांचक अनुभव लेने के लिए पैसे जरुर थोड़ा ज्यादा खर्चने होंगे।

## रोज तैर कर आफिस जाता है यह चीनी युवक

चीन में एक व्यक्ति ऐसा है जो हर रोज यांग्ची नदी को 2.2 कि.मी. तैर कर पार करने के बाद ऑफिस जाता है। हैरान मत होएई - वो ऐसा किसी मजबूरी के चलते नहीं, बल्कि समय बचाने और सेहत को दुरुस्त रखने के लिए ऐसा करता है।

वुहान के रहने वाले झू बीवू, ट्रैफिक की समस्या से बचने, समय बचाने और स्वस्थ रहने के लिए पिछले 11 सालों से इसी तरह ऑफिस जा रहे हैं। इसमें उन्हें 30 मिनट का ही समय लगता है जबकि ट्रेन इसके लिए 1 घंटे से अधिक का समय लेती है। एक फूड मॉर्केट में मैनेजर के तौर पर काम करने वाले झू सुबह करीब 7 बजे नदी किनारे पहुंचते हैं, कपड़े जूते और अन्य चीजें उतार कर एक वाटरप्रूफ बैग में रखते हैं और फिर नदी में छलांग लगा देते हैं। नदी पार करने के बाद वे कपड़े पहनकर ऑफिस चले जाते हैं। वास्तव में कई साल पहले उनका वजन 100 किग्रा से भी ज्यादा हो गया था और साथ ही उन्हें टाइप 2 डायबटीज भी थी। ऐसे में व्यायाम जरुरी था और तैरने से अच्छा व्यायाम और क्या हो सकता था। आज झू का वजन और ब्लड शूगर दोनों ही सामान्य स्तर पर हैं और वे पूरी तरह से स्वस्थ हैं।

## आंखे नहीं फिर भी समुद्र के बीच किया 14000 कि.मी. का सफर

अगर आपसे आंखें बंद करके एक दिन रहने को कह दिया जाए तो शायद आपके लिए वो दिन बिताना आपके जीवन का सबसे कठिन दिन होगा। एक दिन तो क्या बिना आंखों के तो कुछ दूर चल भी शायद न पाएं लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें मंजिल हासिल करने के लिए सिवाए हौसलों के और कुछ नहीं चाहिए होता।

ऐसे ही ऐसे एक शख्स हैं जापान के मित्सुहीरो इवामोतो जिन्होंने महज 16 सालों की उम्र में ही अपनी आंखों की रोशनी खो दी थी। इसके बावजूद उन्होंने हाल ही में बिना रुके प्रशांत महासागर में दुर्गम परिस्थितियों और लहरों से लगातार संघर्ष के बावजूद 14000 कि.मी. की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। इसी के साथ इवामोतो इस सबसे बड़े महासागर की यात्रा करने वाले पहले दृष्टिहीन नाविक बन गए हैं। उन्होंने लगभग 2 महीने पहले कैलीफोर्निया से एक अन्य नाविक डिएगो स्मिथ के साथ

यह यात्रा शुरु की थी। डिएगो उन्हें सिर्फ मौखिक रुप से हवा की दिशा से जुड़ी जानकारी देते थे। आपको बता दें कि इवामोतो का यह पहला प्रयास नहीं था। 6 वर्ष पहले भी उन्होंने प्रशांत महासागर की यात्रा करने की कोशिश की थी लेकिन तब उनकी नाव एक व्हेल से टकरा कर पलट गई थी लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दोबारा प्रयास किया और सफल हुए। ❑❑❑

# नन्हे सम्राट

# इस अंक में छपीं चित्र-पहेलियों के उत्तर

1. **दिमाग लड़ाईये - अपराधी पकड़वाइए का उत्तर :**
अपराधी नंबर - 1

2. **मैं हूँ जासूस का उत्तर:**
ऊपर के फ्रेम के चित्र नंबर - 1, 4, 6, 7 तथा 9 नीचे के फ्रेम से गायब हैं। नीचे के फ्रेम के चित्र नंबर 3, 8, 10, 13 तथा 18 ऊपर के फ्रेम से गायब हैं।

3. **रखिये सही क्रम - दूर कीजिये भ्रम का उत्तर:**
1. कुत्ता-स्वामी भक्त, 2. गधा-मूर्खता, 3. गीदड़-कायरता, 4. बंदर-नकलची, 5. शेर-साहस, 6. सूअर-घृणित, 7. हाथी-विशालता

4. **चल बेटा दिमाग लड़ा-बता कौन है छोटे से बड़ा का उत्तर:**
9, 5, 1, 8, 7, 11, 10, 3, 12, 13, 6, 2 तथा 4

5. **आपकी परछाइयाँ का उत्तर :** 5 तथा 7

6. **विक्रम बेताल का उत्तर :**
1. दीवार घड़ी, 2. पान, 3. मकड़ी का जाला, 4. गुलाब जामुन, 5. शान, 6. अभिनव बिंद्रा, 7. युवराज सिंह

7. **शब्दों को ही बिठाइये - सही जोक बनाइए का उत्तर :**
नहीं-नहीं ससुरजी, मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता हूँ कि आपकी बेटी मुझसे शादी करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दे। आखिर गृहस्थी चलाने के लिए हम दोनों में से किसी एक को तो पैसे कमाने चाहिए न?

8. **पृष्ठ नंबर 6 की चित्र पहेली का उत्तर :**
1 तथा 5

9. **हम तोड़े - आप जोड़ें का उत्तर :**
1-5, 2-6, 3-3, 4-1, 5-8, 6-10, 7-7, 8-2, 9-4, 10-9

आप हैं चित्रकार-
बनाईये देश का स्टार
का उत्तर :
इस बार आपने
**कपिल शर्मा**
की तस्वीर बनाई है

## अंतर बताइये-नंबर पाइये का उत्तर:

चित्र-2

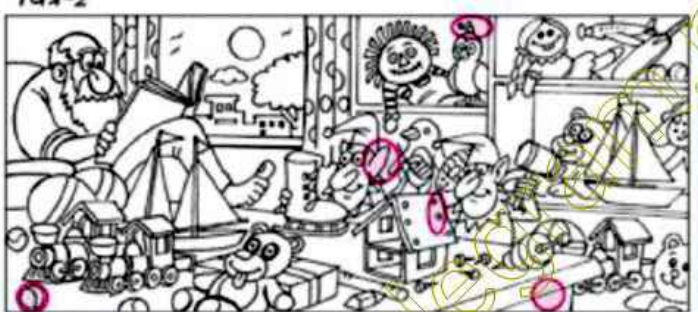

चित्र-3

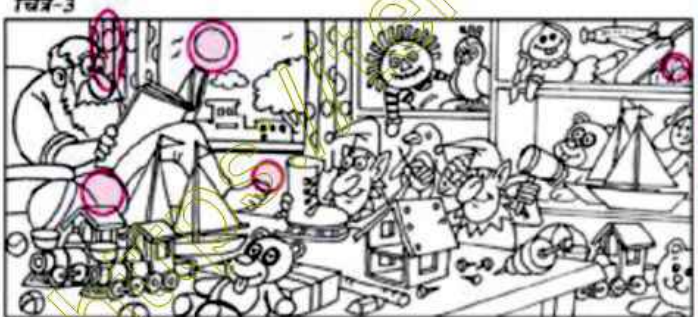

चित्र-4

## पृष्ठ : 54 वर्ड्स छाँटिये का उत्तर

## पृष्ठ : 55 वर्ड्स छाँटिये का उत्तर

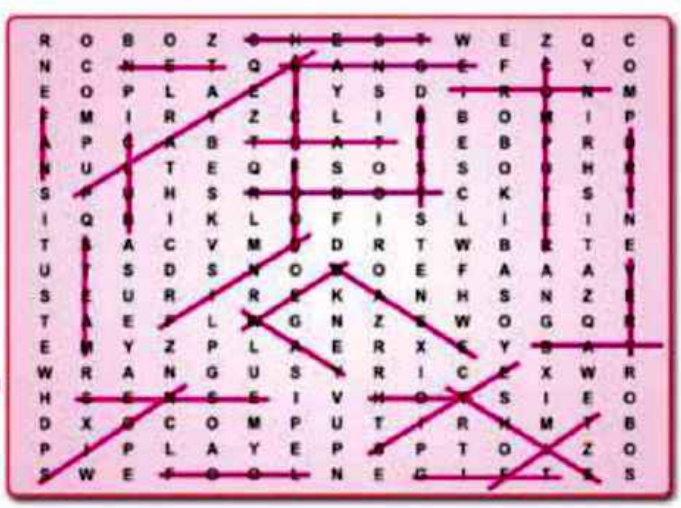

www.freeamarbooksmag

Printed and Published by ANAND DEWAN on behalf of Dewan Publications Pvt. Ltd. and Printed at Dewan Publications Pvt. Ltd., A-6/1 Maya Puri, Phase-1, New Delhi-110064 and published at Dewan Publications Pvt. Ltd., A-6/1 Maya Puri, Phase-1, New Delhi-110064 , Editor- Anand Dewan

# रंग भरो प्रतियोगिता नं 203 परिणाम

## नन्हे सम्राट अप्रैल 2019 अंक के

भाग्यशाली विजेता

पुरस्कार

नोट : प्रतियोगिता में चुनी गई पांच सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को पुरस्कार स्वरुप क्रिकेट सम्राट द्वारा प्रकाशित 'सचिन आला रे' पुस्तक भेजी जायेगी।

**नाम :** अद्रिका शर्मा **पिता:** ब्रजेश शर्मा
**उम्र:** 8 वर्ष, **पता :** एल – 1603, अंतरिक्ष गोल्फ व्यू 2, नोएडा, उ.प्र. – 201301

**नाम :** दीपक जायसवाल, **पिता:** विजय जायसवाल
**उम्र:** 14 वर्ष, **पता:** पी/29, स्ट्रीट नं. 1, शंकर नगर एक्सटेंशन, नई दिल्ली – 110051

**नाम :** अनिशा तिवारी, **पिता:** शशांक तिवारी
**उम्र:** 13 वर्ष, **पता:** न्यू कालोनी, नियर नेहरू नगर, देवरिया, उ.प्र. – 274001

**नाम:** जोगाराम गौड़, **पिता:** धेवरचंद गौड़
**उम्र:** 11 वर्ष, **पता:** विष्णु कालोनी, बाड़मेर राजस्थान – 344001

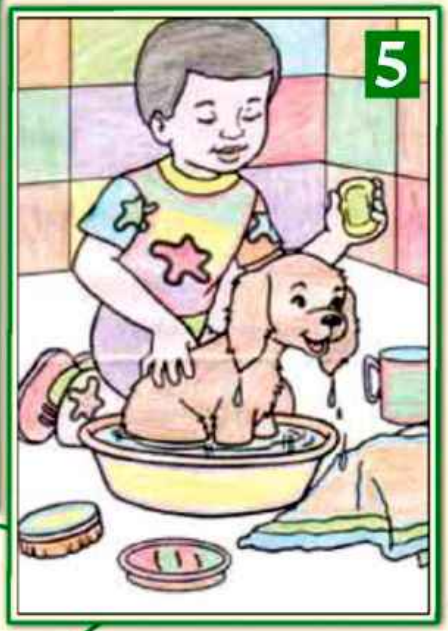


**नाम :** युवराज व्यास, **पिता:** अनिल कुमार शर्मा
**उम्र:** 10 वर्ष, **पता:** वार्ड 8, पुराने थाने के पास, गोहद जिला – भिण्ड, म.प्र. – 477116

### इनके चित्र भी पसंद आए

- रिया बघेल, आगरा, उ.प्र.
- बिट्टू राज, बिहारशरीफ, बिहार
- प्रफुल कुमार, मोतीहारी, बिहार
- शुभम कबडवाल, बावली पोखर, उ.प्र.
- नन्दिनी यादव, जयपुर, राजस्थान

पहले पांच विजेताओं को 'सचिन आला रे' पुस्तक ईनाम के तौर पर भेजी जा रही है आप भी इस 'रंग भरो प्रतियोगिता' में भाग लेकर भाग्यशाली विजेता बन सकते हैं। आज ही 'नन्हे सम्राट' का अंक खरीदें और रंग भरकर हमारे कार्यालय में भेजें।

https://telegram.me/bookstore

NANHEY SAMRAT-JUNE-2019 ❑ PUBLISHING DATE-2 MAY. 2019, POSTING 5-6 MAY 2019
RNI NO 47296/88 ❑ DL (W) 10-2043/2018-20 ❑ PLACE OF POSTING-MAYAPURI/NARAINA

विश्व की सर्वाधिक बिकने वाली सम्पूर्ण क्रिकेट पत्रिका

# क्रिकेट सम्राट

सम्पूर्ण क्रिकेट पत्रिका

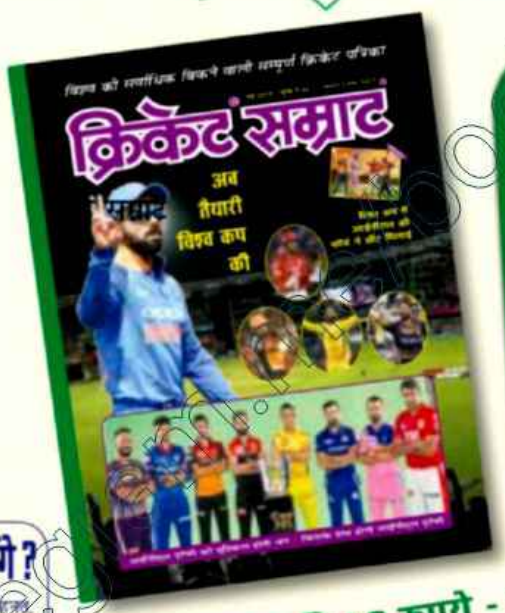


क्रिकेट की प्रत्येक गतिविधियों से जुड़े विशेष लेखों के साथ

हर जगह बिक रहा है

## क्या ये 15 विश्व कप ट्रॉफी भारत ला पायेंगे ?

कई महीनों की सटीक क्रिकेट समझ को इस्तेमाल और अलग-अलग स्थितियों पर खिलाड़ियों को परखने दिल्ली के चार अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षकों ने विश्व कप के लिए भारत के 15 खिलाड़ी चुन लिये I... पेज नं 5

एक प्रति 60 रुपये - वार्षिक 600 रुपये

## सभी बुक स्टॉल पर उपलब्ध

## विज़डन 2019 ने विराट कोहली की 2018 की बल्लेबाजी की याद ताजा करा दी

इंग्लैंड क्रिकेट सीजन शुरू होते ही पंरपरा है विश्व के सबसे पुराने क्रिकेट वार्षिक अंक विज़डन के प्रकाशन की। विज़डन का 156वां अंक उसी परंपरा में प्रकाशित हो गया और भारत के नजरिए से इस बार के विज़डन का वार्षिक अंक खास तौर पर चर्चा योग्य है क्योंकि न सिर्फ विराट कोहली लगातार... पेज नं 15

## सेंट्रल कांट्रेक्ट - कौन अप, कौन डाउन ?

भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने नई सेंट्रल कांट्रेक्ट लिस्ट घोषित कर दी है - 2018-19 सीजन के लिए। पूरी लिस्ट साथ में बॉक्स में है। देखना यह है कि इस बार की सेंट्रल कांट्रेक्ट लिस्ट में किसे... पेज नं 80

## धोनी की रणनीति को मात देना सबसे बड़ी चुनौती

आईपीएल 2019 न सिर्फ पूरे जोर शोर से शुरू हुआ बल्कि इस रिपोर्ट के संकलन तक 30 मैच खेले भी जा चुके थे। 5 साल के बाद एक बार फिर क्रिकेट के पैसेवर रूप के इस सबसे बड़े मेले का टकराव सीधा लोकतंत्र के सबसे बड़े चुनावी मेले से था। अच्छी बात ये रही कि इस बार आईपीएल को पिछले अनुभवों की तरह... पेज नं. 106

दीवान पब्लिकेशंस प्रा. लि.
ए-6/1 मायापुरी, फेस-1, नई दिल्ली-110064, फोन : 011-28115835
Email : dewanpublications@gmail.com & nanheysamrat@gmail.com
Website : www.dewanpublications.com

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.dewanpublications.nanheysamrat